बाल रामकथा

कक्षा 6 के लिए हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक

प्रश्न-अभ्यास

1. पुस्तक के पहले अध्याय के पहले अनुच्छेद में लेखक ने सजीव ढंग से अवध की तसवीर प्रस्तुत की है। तुम भी अपने आसपास की किसी जगह का ऐसा ही बारीक चित्रण करो। यह चित्रण मोहल्ले के चबूतरे, गली की चहल-पहल, सड़क के नज़ारे आदि किसी का भी हो सकता है जिससे तुम अच्छी तरह परिचित हो।
2. विश्वामित्र जानते थे कि क्रोध करने से यज्ञ पूरा नहीं होगा, इसलिए वे क्रोध को पी गए। तुम्हें भी कभी-कभी गुस्सा आता होगा। तुम्हें कब-कब गुस्सा आता है और उसका क्या परिणाम होता है?
3. राम और लक्ष्मण ने महाराज दशरथ के निर्णय को खुशी-खुशी स्वीकार किया। तुम्हारी समझ में इसका क्या कारण रहा होगा?
4. विश्वामित्र ने कहा, "ये जानवर और वनस्पतियाँ जंगल की शोभा हैं। इनसे कोई डर नहीं है।" उन्होंने ऐसा क्यों कहा?
5. लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक-कान काट दिए। क्या ऐसा करना उचित था? अपने उत्तर का कारण बताओ।
6. विश्वामित्र और कैकेयी दोनों ही दशरथ को रघुकुल के वचन निभाने की प्रथा याद दिलाते हैं। तुम अपने अनुभवों की मदद से बताओ कि क्या दिया हुआ वचन निभाना हमेशा संभव होता है?
7. मान लो कि तुम्हारे स्कूल में रामकथा को नाटक के रुप में खेलने की तैयारी चल रही है। तुम इस नाटक में उसी पात्र की भूमिका निभाना चाहते हो जो तुम्हें सबसे ज़्यादा अच्छी, दिलचस्प या आकर्षक लगती है। वह पात्र कौन सा है और क्यों?
8. सीता बिना बात के राक्षसों के वध के पक्ष में नहीं थीं जबकि राम राक्षसों के विनाश को ठीक समझते थे। तुम किससे सहमत हो—राम से या सीता से? कारण बताते हुए उत्तर दो।

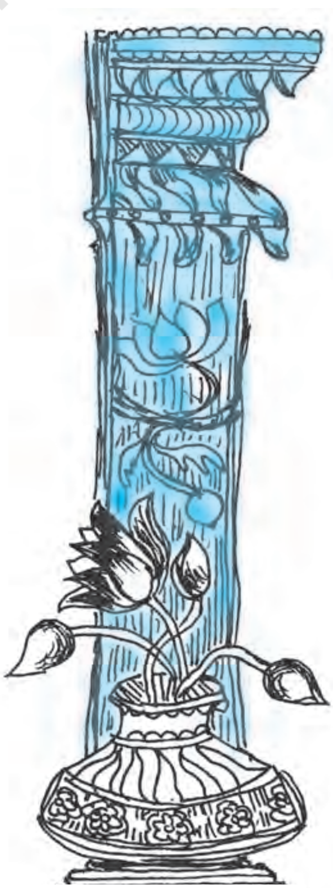

© NCERT not to be republished

9. रामकथा के तीसरे अध्याय में मंथरा कैकेयी को समझाती है कि राम को युवराज बनाना उसके बेटे के हक में नहीं है। इस प्रसंग को अपने शब्दों में कक्षा में नाटक के रूप में प्रस्तुत करो।

10. तुमने 'जंगल और जनकपुर' तथा 'दंडक वन में दस वर्ष' में राक्षसों द्वारा मुनियों को परेशान करने की बात पढ़ी। राक्षस ऐसा क्यों करते थे? क्या यह संभव नहीं था कि दोनों शांतिपूर्वक वन में रहते? कारण बताते हुए उत्तर दो।

11. हनुमान ने लंका से लौटकर अंगद और जामवंत को लंका के बारे में क्या-क्या बताया होगा?

12. तुमने बहुत सी पौराणिक कथाएँ और लोक कथाएँ पढ़ी होंगी। उनमें क्या अंतर होता है? यह जानने के लिए पाँच-पाँच के समूह में कक्षा के बच्चे दो-दो पौराणिक कथाएँ और लोक कथाएँ इकट्ठा करें। कथ्य (कहानी), भाषा आदि के अनुसार दोनों प्रकार की कहानियों का विश्लेषण करें और उनके अंतर लिखें।

13. क्या होता यदि—

(क) राजा दशरथ कैकेयी की प्रार्थना स्वीकार नहीं करते।

(ख) रावण ने विभीषण और अंगद का सुझाव माना होता और युद्ध का फैसला न किया होता।

14. नीचे कुछ चारित्रिक विशेषताएँ दी गई हैं और तालिका में कुछ पात्रों के नाम दिए गए हैं। प्रत्येक नाम के सामने उपयुक्त विशेषताओं को छाँटकर लिखो–

पराक्रमी, साहसी, निडर, पितृभक्त, वीर, शांत, दूरदर्शी, त्यागी, लालची, अज्ञानी, दुश्चरित्र, दीनबंधु, गंभीर, स्वार्थी, उदार, धैर्यवान, अड़ियल, कपटी, भक्त, न्यायप्रिय और ज्ञानी।

राम	____________	सीता	____________
लक्ष्मण	____________	कैकेयी	____________
रावण	____________	हनुमान	____________
विभीषण	____________	भरत	____________

15. तुमने अपने आसपास के बड़ों से रामायण की कहानी सुनी होगी। रामलीला भी देखी होगी। क्या तुम्हें अपनी पुस्तक रामकथा की कहानी और बड़ों से

© NCERT not to be republished

सुनी रामायण की कहानी में कोई अंतर नज़र आया? यदि हाँ तो उसके बारे में कक्षा में बताओ।

16. रामकथा में कई नदियों और स्थानों के नाम आए हैं। इनकी सूची बनाओ और एटलस में देखो कि कौन–कौन सी नदियाँ और जगहें अभी भी मौजूद हैं। यह काम तुम चार–चार के समूह में कर सकते हो।

17. यह रामकथा *वाल्मीकि रामायण* पर आधारित है। तुलसीदास द्वारा रचित *रामचरितमानस* के बारे में जानकारी इकट्ठी करो और उसे चार्टपेपर पर लिखकर कक्षा में लगाओ।

    जानकारी प्रस्तुत करने के निम्नलिखित बिंदु हो सकते हैं—

    - रामकथा का नाम
    - रचनाकार का नाम
    - भाषा / प्रांत

18. 'नगर में बड़ा समारोह आयोजित किया गया। धूमधाम से।' (पृ. 3)

    'एक दिन ऐसी ही चर्चा चल रही थी। गहन मंत्रणा।' (पृ. 4)

    'पाँच दिन तक सब ठीक–ठाक चलता रहा। शांति से। निर्विघ्न।' (पृ. 10)

    रामकथा की इन पंक्तियों में कुछ वाक्य केवल एक या दो शब्दों के हैं। ऐसा लेखक ने किसी बात पर बल देने के लिए, उसे प्रभावशाली बनाने के लिए या नाटकीय बनाने के लिए किया है। ऐसे कुछ और उदाहरण पुस्तक से छाँटो और देखो कि इन एक–दो शब्दों के वाक्य को पिछले वाक्य में जोड़कर लिखने से बात के असर में क्या फ़र्क पड़ता है। उदाहरण के लिए—

    'पाँच दिन तक सब शांति से, निर्विघ्न और ठीक–ठाक चलता रहा।'

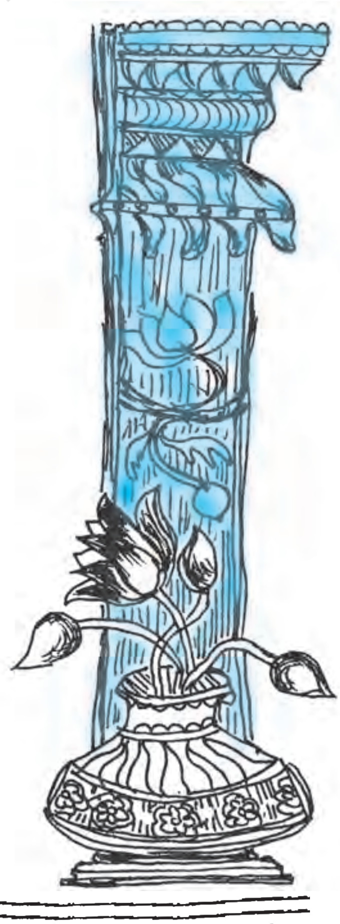

© NCERT not to be republished

लेखक परिचय

मधुकर उपाध्याय का जन्म पहली सितंबर 1956 को अयोध्या में हुआ। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा तथा डिग्री वहीं से हासिल की।

पेशे से पत्रकार मधुकर उपाध्याय की अब तक पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इनमें से कुछ का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

पत्रकारिता और रचनात्मक लेखन की दूरी पाटते हुए मधुकर ने महात्मा गांधी के ऐतिहासिक दांडी मार्च की पुनरावृत्ति की और उस पर पुस्तक लिखी – *धुँधले पदचिह्न*। उनकी अन्य चर्चित पुस्तकों में *किस्सा पांडे सीताराम, पचास दिन पचास साल पहले, युद्धकला* और *हे वसुधा* शामिल हैं। *हे वसुधा* अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त का भावानुवाद है। उनकी चार पुस्तकें अंग्रेज़ी में हैं।

मुधकर ने पाँच नाटक लिखे। उनका एक कविता संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। उन्होंने भारत को समझने के लिए सड़क मार्ग से देश में 62,000 किलोमीटर की यात्रा की। मधुकर ने बीस से अधिक देशों का भ्रमण किया है।

संप्रति वे *लोकमत समाचार* के प्रधान संपादक हैं और नागपुर में रहते हैं।

© NCERT not to be republished

बाल रामकथा

(वाल्मीकि रामायण पर आधारित)

कक्षा 6 के लिए हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक

0645

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT
not to be republished

0645 – बाल रामकथा
छठी कक्षा के लिए

ISBN 81-7450-592-X

प्रथम संस्करण
जून 2006 आषाढ़ 1928

पुनर्मुद्रण
दिसंबर 2007 अग्रहायण–पौष 1929
दिसंबर 2008 मार्गशीर्ष 1930
अक्टूबर 2009 कार्तिक 1931
जनवरी 2012 माघ 1933
दिसंबर 2012 अग्रहायण–पौष 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2016 पौष 1938
दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
अगस्त 2019 भाद्रपद 1941
जनवरी 2021 पौष 1942
नवबंर 2021 अग्रहायण 1943
सितंबर 2022 अश्विन 1944

PD 250T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

₹ 60.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा बुकमैन इंडिया, सी-4, डी.आई.सी. कैम्पस, इंडस्ट्रियल इस्टेट, मुज़फ्फरनगर - 251 001 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*
मुख्य संपादक (प्रभारी) : *बिज्ञान सुतार*
संपादक : *मीरा कांत*
उत्पादन सहायक : *ओम प्रकाश*

सज्जा एवं आवरण
कल्याण बनर्जी

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक

© NCERT not to be republished

दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पुस्तक के लेखक श्री मधुकर उपाध्याय के प्रति हम अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने बहुत ही कम समय में यह पुस्तक तैयार की। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) द्वारा नामित श्री अशोक वाजपेयी और प्रोफ़ेसर सत्यप्रकाश मिश्र को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 दिसंबर 2005

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *प्रो.फ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रो.फ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

लेखक

मधुकर उपाध्याय

चित्रकार

कल्याण बैनर्जी

प्रश्न-अभ्यास निर्माण

अनीता वैष्णव, *पी.जी.टी.* (हिंदी), दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंत कुंज, नयी दिल्ली।
अनुराधा, *प्रवक्ता* (हिंदी), सरदार पटेल विद्यालय, लोधी एस्टेट, नयी दिल्ली।
नूतन झा, *अध्यापिका,* मीरांबिका स्कूल, नयी दिल्ली।
मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्रवक्ता,* लेडी श्रीराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
रामगोपाल वर्मा, *प्राध्यापक,* दिल्ली पब्लिक स्कूल, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली।

विभागीय सहयोग

चंद्रा सदायत, संध्या सिंह और संजय कुमार सुमन।

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* अरविंद शर्मा, *कॉपी एडीटर* सुप्रिया गुप्ता तथा वरुणा मित्तल और *प्रूफ़ रीडर* पूजा नेगी का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished

अनुक्रम

आमुख ...*iii*

अवधपुरी में राम ...1

जंगल और जनकपुर ...7

दो वरदान ...14

राम का वन-गमन ...20

चित्रकूट में भरत ...26

दंडक वन में दस वर्ष ...33

सोने का हिरण ...41

सीता की खोज ...48

राम और सुग्रीव ...54

लंका में हनुमान ...61

लंका विजय ...69

राम का राज्याभिषेक ...80

प्रश्न-अभ्यास ...85

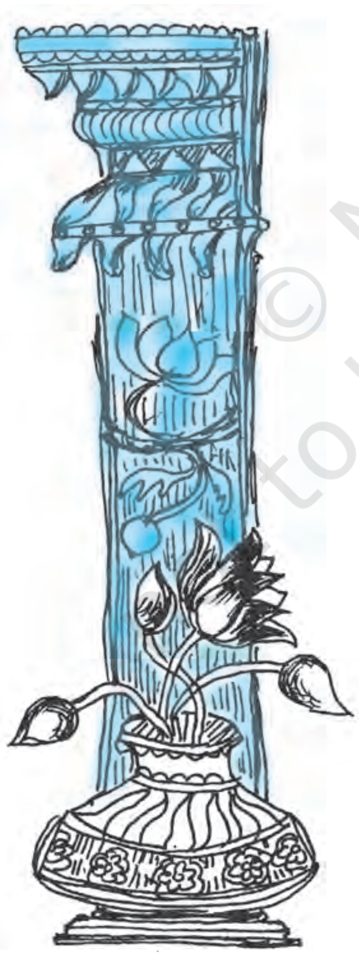

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

© NCERT not to be republished

अवधपुरी में राम

0645CH01

यह कथा अवध की है। और बहुत पुरानी है। अवध में सरयू नदी के किनारे एक अति सुंदर नगर था। अयोध्या। सही अर्थों में दर्शनीय। देखने लायक। भव्यता जैसे उसका दूसरा नाम हो! अयोध्या में केवल राजमहल भव्य नहीं था। उसकी एक-एक इमारत आलीशान थी। आम लोगों के घर भव्य थे। सड़कें चौड़ी थीं। सुंदर बाग-बगीचे। पानी से लबालब भरे सरोवर। खेतों में लहराती हरियाली। हवा में हिलती फ़सलें सरयू की लहरों के साथ खेलती थीं। अयोध्या हर तरह से संपन्न नगरी थी। संपन्नता कोने-अंतरे तक बिखरी हुई। सभी सुखी। सब समृद्ध। दु:ख और विपन्नता को अयोध्या का पता नहीं मालूम था। या उन्हें नगर की सीमा में प्रवेश की अनुमति नहीं थी। पूरा नगर विलक्षण था। अद्‌भुत और मनोरम।

उसे ऐसा होना ही था। वह कोसल राज्य की राजधानी था। राजा दशरथ वहीं रहते थे। उनके राज में दु:ख का भला क्या काम? राजा दशरथ कुशल योद्धा और न्यायप्रिय शासक थे। महाराज अज के पुत्र। महाराज रघु के वंशज। रघुकुल के उत्तराधिकारी। रघुकुल की रीति-नीति का प्रभाव हर जगह दिखाई देता था। सुख-समृद्धि से लेकर बात-व्यवहार तक। लोग मर्यादाओं का पालन करते थे। सदाचारी थे। पवित्रता और शांति हर जगह थी। नगर में भी। लोगों के मन में भी।

राजा दशरथ यशस्वी थे। उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं थी। राज-सुख था। कमी होने का प्रश्न ही नहीं था। लेकिन उन्हें एक दु:ख था। छोटा सा दु:ख। मन के एक कोने में छिपा हुआ। वह रह-रहकर उभर आता था। उन्हें सालता रहता था। उनके कोई संतान नहीं थी। आयु लगातार बढ़ती जा रही थी। उनकी तीन रानियाँ थीं— कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी। रानियों के मन में भी बस यही एक दु:ख था। संतान की कमी। जीवन सूना-सूना लगता था। राजा दशरथ से रानियों की बातचीत प्राय: इसी विषय पर आकर रुक जाती थी। राजा दशरथ की चिंता बढ़ती जा रही थी।

© NCERT not to be republished

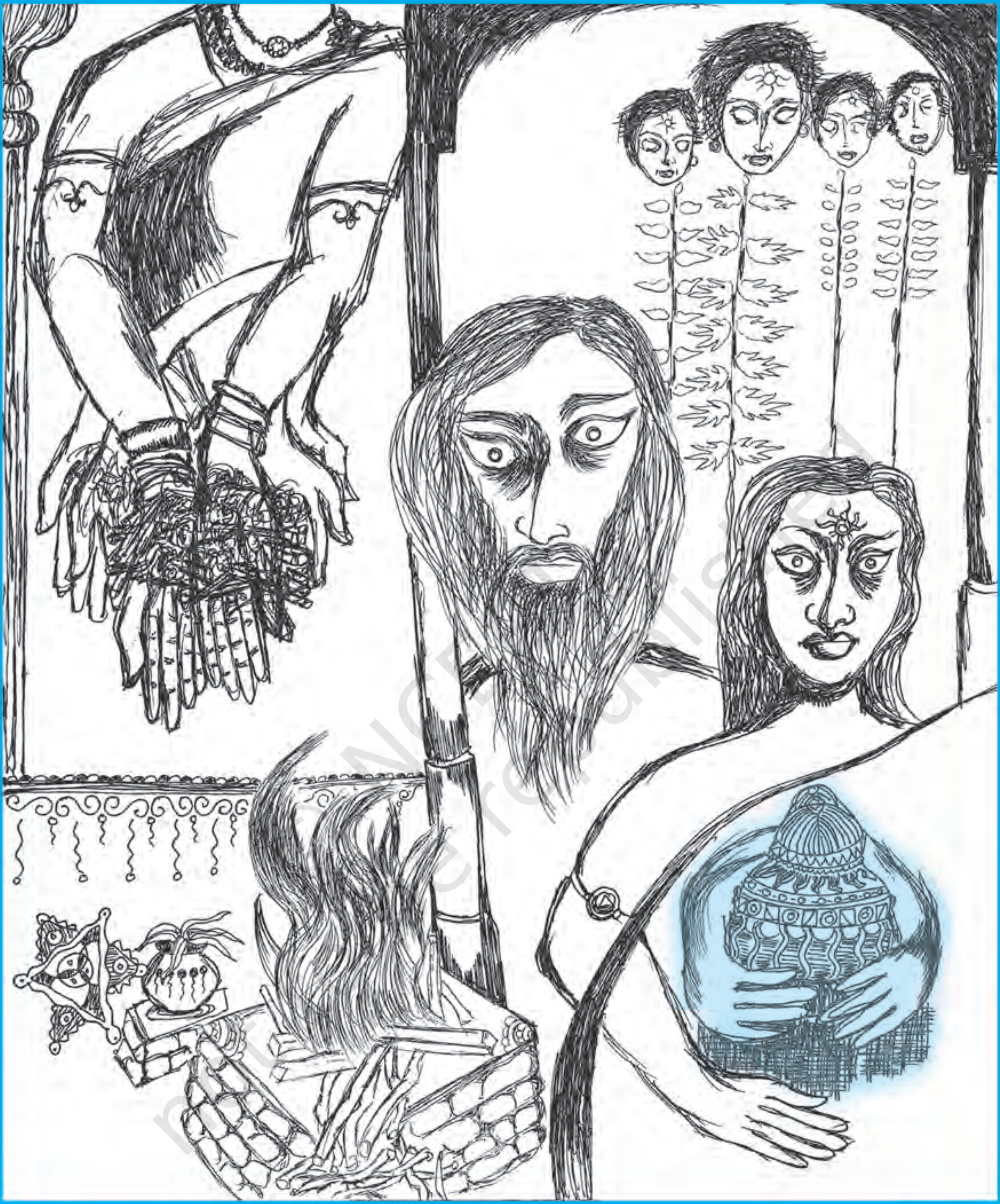

बहुत सोच-विचारकर महाराज दशरथ ने इस संबंध में वशिष्ठ मुनि से चर्चा की। उन्हें पूरी बात विस्तार से बताई। रघुकुल के अगले उत्तराधिकारी के बारे में अपनी चिंता बताई। मुनि वशिष्ठ राजा दशरथ की चिंता समझते थे। उन्होंने दशरथ को यज्ञ करने की सलाह दी। पुत्रेष्टि यज्ञ। महर्षि ने कहा, "आप पुत्रेष्टि यज्ञ करें, महाराज! आपकी इच्छा अवश्य पूरी होगी।"

यज्ञ महान तपस्वी ऋष्यश्रृंग की देखरेख में हुआ। पूरा नगर उसकी तैयारी में लगा हुआ था। यज्ञशाला सरयू नदी के किनारे बनाई गई। यज्ञ में अनेक राजाओं को निमंत्रित किया गया। तमाम ऋषि-मुनि पधारे। शंखध्वनि और मंत्रोच्चार के बीच एक-एक कर सबने आहुति डाली। अंतिम आहुति राजा दशरथ की थी।

यज्ञ पूरा हुआ। अग्नि के देवता ने महाराज दशरथ को आशीर्वाद दिया। कुछ समय बाद दशरथ की इच्छा पूरी हुई। तीनों रानियाँ पुत्रवती हुईं। महारानी कौशल्या ने राम को जन्म दिया। चैत्र माह की नवमी के दिन। रानी सुमित्रा के दो पुत्र हुए। लक्ष्मण और शत्रुघ्न। रानी कैकेयी के पुत्र का नाम भरत रखा गया।

राजमहल में खुशी छा गई। नगर में बधाइयाँ बजने लगीं। मंगलगीत गाए गए। हर ओर खुशी। उत्सव जैसा दृश्य। राजा दशरथ प्रसन्न थे। उनकी मनोकामना पूरी हुई। प्रजा प्रसन्न थी कि दशरथ की चिंता दूर हुई। नगर में बड़ा समारोह आयोजित किया गया। धूमधाम से। आयोजन में दूर-दूर से लोग आए। राजा दशरथ ने सबको पूरा सम्मान दिया। उन्हें कपड़े, अनाज और धन देकर विदा किया।

चारों राजकुमार धीरे-धीरे बड़े हुए। वे बहुत सुंदर थे। सुदर्शन। साथ खेलने निकलते तो लोग उन्हें देखते रह जाते। आँखें उनसे हटती ही नहीं थीं। चारों भाइयों में आपस में बहुत प्रेम था। वे अपने बड़े भाई राम की आज्ञा मानते थे। खेलकूद में लक्ष्मण प्रायः राम के साथ रहते। भरत और शत्रुघ्न की एक अलग जोड़ी थी।

और बड़े होने पर राजकुमारों को शिक्षा-दीक्षा के लिए भेजा गया। उन्होंने कुशल और अपनी विद्या में दक्ष गुरुजनों से ज्ञान अर्जित किया। शास्त्रों का अध्ययन किया। शस्त्र-विद्या सीखी। चारों राजकुमार कुशाग्र-बुद्धि थे। जल्द ही सब विद्याओं में पारंगत हो गए। राम इसमें सर्वोपरि थे। उनमें कई अन्य गुण भी थे। विवेक, शालीनता और न्यायप्रियता। राजा दशरथ को राम सबसे अधिक प्रिय थे। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण। और इन मानवीय गुणों के कारण भी।

© NCERT not to be republished

राजकुमार कुछ और बड़े हुए। विवाह योग्य। नगर में इसकी चर्चा होने लगी। महाराज दशरथ भी ऐसा ही चाहते थे। अपनी संतानों के लिए सुयोग्य वधुएँ। परिजनों में चर्चा पहले से ही हो रही थी। बाद में पुरोहितों को भी इसमें शामिल कर लिया गया।

अयोध्या का राजमहल। एक दिन ऐसी ही चर्चा चल रही थी। गहन मंत्रणा। तभी एक द्वारपाल घबराया हुआ अंदर आया। उसने सूचना दी कि महर्षि विश्वामित्र पधारे हैं। महाराज दशरथ तत्काल अपना आसन छोड़कर खड़े हो गए। द्वार की ओर बढ़े। महर्षि की अगवानी करने। उन्हें लेकर दरबार में आए। विश्वामित्र को ऊँचा आसन दिया गया।

विश्वामित्र कभी स्वयं राजा थे। बहुत बड़े और बलशाली। बाद में अपना राजपाट छोड़ दिया। संन्यास ग्रहण कर लिया। जंगल चले गए। वहीं उन्होंने अपना आश्रम बनाया। उसे उन्होंने सिद्धाश्रम नाम दिया।

महर्षि के स्वागत-सत्कार के बाद दशरथ ने कहा, "महर्षि, आज्ञा दें, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ। आप अपने मन की बात कहिए। आपकी आज्ञा का पूरी तरह पालन होगा।"

"राजन! मैं जो माँगने जा रहा हूँ उसे देना आपके लिए कठिन होगा।"

"आप आज्ञा दीजिए, महर्षि! मैं उसे पूरा करने के लिए तत्पर हूँ। बिलकुल नहीं हिचकूँगा।"

"मैं सिद्धि के लिए एक यज्ञ कर रहा हूँ। अनुष्ठान लगभग पूरा हो गया है। लेकिन दो राक्षस उसमें बाधा डाल रहे हैं। मैं जानता हूँ कि उन राक्षसों को केवल एक ही व्यक्ति मार सकता है। वह राम हैं। आप अपने ज्येष्ठ पुत्र को मुझे दे दें ताकि यज्ञ पूरा हो," विश्वामित्र ने कहा।

दशरथ पर जैसे बिजली गिर पड़ी। वह अचकचा गए। उन्हें उम्मीद ही नहीं थी कि मुनिवर उनसे राम को माँग लेंगे। उनके ज्येष्ठ पुत्र। उनके सबसे प्रिय। दशरथ चिंता में पड़ गए।

विश्वामित्र दशरथ की दुविधा समझ रहे थे। उन्होंने कहा, "मैं राम को केवल कुछ दिनों के लिए माँग रहा हूँ। यज्ञ दस दिन में संपन्न हो जाएगा।" महाराज दशरथ दु:खी हो गए। पुत्र-वियोग की आशंका से काँप उठे। दरबार में सन्नाटा छा गया। दशरथ की दशा देखकर मंत्री चिंतित थे। पर चुप थे। महर्षि वशिष्ठ शांत थे। इतने में दशरथ काँप कर बेहोश हो गए। होश आया तो डर ने उन्हें फिर जकड़ लिया। मूर्च्छित होकर दोबारा गिर पड़े। संज्ञा-शून्य पड़े रहे।

© NCERT not to be republished

महर्षि विश्वामित्र का क्रोध बढ़ता जा रहा था। दरबार सशंकित था। किसी अनिष्ट की आशंका से। वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे। महर्षि और महाराज के बीच संवाद में कुछ बोलना उचित भी नहीं था। मुनि वशिष्ठ चुपचाप आकर महाराज दशरथ के पास खड़े हो गए।

थोड़ी देर बाद दशरथ उठे। स्वयं को सँभालते हुए उन्होंने महर्षि से विनती की, "महामुनि! मेरा राम तो अभी सोलह वर्ष का भी नहीं हुआ है। वह राक्षसों से कैसे लड़ेगा? राक्षस मायावी हैं। वह उनका छल-कपट कैसे समझेगा? उन्हें कैसे मारेगा? इससे अच्छा तो यही होगा कि आप मेरी सेना ले जाएँ। मैं स्वयं आपके साथ चलूँ। राक्षसों से युद्ध करूँ।"

महर्षि विश्वामित्र ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। क्रोधित थे, पर उसे व्यक्त नहीं कर रहे थे। उन्हें अपने यज्ञ के नियम याद थे। क्रोध करने से यज्ञ खंडित हो जाता। अनुष्ठान अधूरा रह जाता।

"मैं राम के बिना नहीं रह सकता, महामुनि! एक पल भी नहीं। आप राम को छोड़कर जो चाहें माँग लें। उसे मत ले जाइए। मैं राम को नहीं दूँगा। बिलकुल नहीं। वह मेरी बुढ़ापे की संतान है। मैं उससे बहुत प्रेम करता हूँ।"

महर्षि का क्रोध भभक उठा। दरबार, मंत्रीगण और ऋषि-मुनि सकते में आ गए। "आप रघुकुल की रीति तोड़ रहे हैं, राजन। वचन देकर पीछे हट रहे हैं। यह बरताव कुल के विनाश का सूचक है। आप जानते हैं कि मैं स्वयं दुष्ट राक्षसों का संहार कर सकता था। लेकिन मैंने संन्यास ले लिया है। अगर आप राम को नहीं देंगे तो मैं यहाँ से खाली हाथ लौट जाऊँगा।"

बात बिगड़ती देखकर मुनि वशिष्ठ आगे आए। महाराज दशरथ को समझाया। राम की शक्ति के बारे में। प्रतिज्ञा तोड़ने के संबंध में। महर्षि विश्वामित्र के साथ रहने पर राजकुमार राम को होने वाले लाभ के बारे में।

"राजन, आपको अपना वचन पूरा करना चाहिए। रघुकुल की रीति यही है। प्राण देकर भी आपके पूर्वजों ने वचन निभाया है। आप राम की चिंता न करें। महर्षि के होते उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

महाराज दशरथ की चिंता कुछ कम हुई। पर मन अब भी खिन्न था। पुत्र-बिछोह का दुःख सभी तर्कों पर भारी पड़ रहा था।

गुरु वशिष्ठ ने कहा, "महाराज, महर्षि विश्वामित्र सिद्ध पुरुष हैं। तपस्वी हैं। अनेक गुप्त विद्याओं के जानकार हैं। वह कुछ सोचकर ही यहाँ आए हैं। राम उनसे अनेक

© NCERT not to be republished

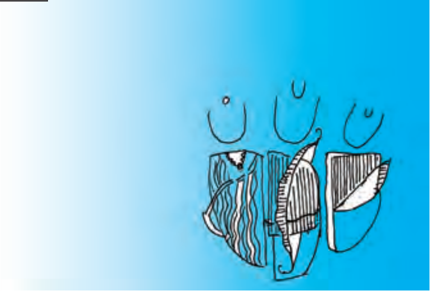

नयी विद्याएँ सीख सकेंगे। आप राम को महर्षि विश्वामित्र के साथ जाने दें। राम को उन्हें सौंप दें।"

दशरथ ने मुनि वशिष्ठ की बात दुःखी मन से स्वीकार कर ली। लेकिन वह राम को अकेले नहीं भेजना चाहते थे। उन्होंने विश्वामित्र से आग्रह किया। कहा कि वे राम के साथ उनके छोटे भाई लक्ष्मण को भी ले जाएँ। महर्षि विश्वामित्र ने महाराज दशरथ का यह आग्रह स्वीकार कर लिया।

राम और लक्ष्मण को तत्काल दरबार में बुलाया गया। महाराज दशरथ ने उन्हें अपने निर्णय की सूचना दी। दोनों भाइयों ने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। सिर झुकाकर। आदर सहित।

इसकी सूचना माता कौशल्या को दी गई। बताया गया कि राम और लक्ष्मण वन जा रहे हैं। महर्षि विश्वामित्र के साथ। नितांत गंभीर माहौल में स्वस्तिवचन हुआ। शंखध्वनि हुई। नगाड़े बजे। महाराज दशरथ ने भावुक होकर दोनों पुत्रों का मस्तक चूमकर उन्हें महर्षि को सौंप दिया।

दोनों राजकुमार बिना विलंब किए महर्षि के साथ चल पड़े। बीहड़ और भयानक जंगलों की ओर। विश्वामित्र आगे-आगे चल रहे थे। राम उनके पीछे थे। लक्ष्मण राम से दो कदम पीछे। अपने धनुष सँभाले हुए। पीठ पर तुणीर बाँधे। कमर में तलवारें लटकाए।

© NCERT not to be republished

जंगल और जनकपुर

0645CH02

राजमहल से निकलकर महर्षि विश्वामित्र सरयू नदी की ओर बढ़े। दोनों राजकुमार साथ थे। उन्हें नदी पार करनी थी। आश्रम पहुँचने के लिए। विश्वामित्र ने अयोध्या के निकट नदी पार नहीं की। दूर तक सरयू के किनारे-किनारे चलते रहे। दक्षिणी तट पर। उसी तट पर, जिस पर अयोध्या नगरी थी।

वे चलते रहे। नदी के घुमाव के साथ-साथ। राजमहल पीछे छूट गया। उसकी आखिरी बस्ती भी निकल गई। चलते-चलते एक तीखा मोड़ आया तो सब कुछ दृष्टि से ओझल हो गया।

राम और लक्ष्मण ने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनकी नज़र सामने थी। महर्षि विश्वामित्र के सधे कदमों की ओर। सूरज की चमक धीमी पड़ने लगी। शाम होने को आई। राजकुमारों के चेहरों पर थकान का कोई चिह्न नहीं था। उत्साह था। वे दिन भर पैदल चले थे। और चलने को तैयार थे।

महर्षि अचानक रुके। उन्होंने आसमान पर दृष्टि डाली। चिड़ियों के झुंड अपने बसेरे की ओर लौट रहे थे। आसमान मटमैला-लाल हो गया था। चरवाहे लौट रहे थे। गायों के पैर से उठती धूल में आधे छिपे हुए।

"हम आज रात नदी तट पर ही विश्राम करेंगे," महर्षि ने पीछे मुड़ते हुए कहा। दोनों राजकुमारों के चेहरे के भाव देखते हुए विश्वामित्र हलका-सा मुसकराए। राम के निकट आते हुए उन्होंने कहा, "मैं तुम दोनों को कुछ विद्याएँ सिखाना चाहता हूँ। इन्हें सीखने के बाद कोई तुम पर प्रहार नहीं कर सकेगा। उस समय भी नहीं, जब तुम नींद में रहो।"

राम और लक्ष्मण नदी में मुँह-हाथ धोकर लौटे। महर्षि के निकट आकर बैठे। विश्वामित्र ने दोनों भाइयों को 'बला-अतिबला' नाम की विद्याएँ सिखाईं। रात में वे लोग वहीं सोए। तिनकों और पत्तों का बिस्तर बनाकर। नींद आने तक महर्षि उनसे बात करते रहे।

सुबह हुई। यात्रा फिर शुरू हुई। मार्ग वही था। सरयू नदी के किनारे-किनारे।

© NCERT not to be republished

चलते-चलते वे एक ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ दो नदियाँ आपस में मिलती थीं। उस संगम की दूसरी नदी गंगा थी। महर्षि अब भी आगे चल रहे थे। लेकिन एक अंतर आ गया था। राम-लक्ष्मण अब दूरी बनाकर नहीं चलते थे। महर्षि के ठीक पीछे थे ताकि उनकी बातें ध्यान से सुन सकें। रास्ते में पड़ने वाले आश्रमों के बारे में। वहाँ के लोगों के बारे में। वृक्षों-वनस्पतियों के संबंध में। स्थानीय इतिहास उसमें शामिल होता था।

आगे की यात्रा कठिन थी। जंगलों से होकर। उससे पहले उन्हें नदी पार करनी थी। रात में ऐसा करना महर्षि विश्वामित्र को उचित नहीं लगा। तीनों लोग वहीं रुक गए। संगम पर बने एक आश्रम में। अगली सुबह उन्होंने नाव से गंगा पार की।

नदी पार जंगल था। घना। दुर्गम। सूरज की किरणें धरती तक नहीं पहुँचती थीं, इतना घना। वह डरावना भी था। हर ओर से झींगुरों की आवाज़। जानवरों की दहाड़। कर्कश ध्वनियाँ। राम और लक्ष्मण को आश्वस्त करते हुए महर्षि ने कहा, "ये जानवर और वनस्पतियाँ जंगल की शोभा हैं। इनसे कोई डर नहीं है। असली खतरा राक्षसी ताड़का से है। वह यहीं रहती है। तुम्हें वह खतरा हमेशा के लिए मिटा देना है।"

ताड़का के डर से कोई उस वन में नहीं आता था। जो भी आता, ताड़का उसे मार डालती। अचानक आक्रमण कर देती। उसका डर इतना था कि उस सुंदर वन का नाम 'ताड़का वन' पड़ गया था।

राम ने महर्षि की आज्ञा मान ली। धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई। और उसे एक बार खींचकर छोड़ा। इतना ताड़का को क्रोधित करने के लिए बहुत था। टँकार सुनते ही क्रोध से बिलबिलाई ताड़का गरजती हुई राम की ओर दौड़ी। दो बालकों को देखकर उसका क्रोध और भड़क उठा।

जंगल में जैसे तूफ़ान आ गया। विशालकाय पेड़ काँप उठे। पत्ते टूटकर इधर-उधर उड़ने लगे। धूल का घना बादल छा गया। उसमें कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। फिर ताड़का ने पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। राम ने उस पर बाण चलाए। लक्ष्मण ने भी निशाना साधा। ताड़का बाणों से घिर गई। राम का एक बाण उसके हृदय में लगा। वह गिर पड़ी। फिर नहीं उठ पाई।

विश्वामित्र बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने राम को गले लगा लिया। उन्होंने दोनों राजकुमारों को सौ तरह के नए अस्त्र-शस्त्र दिए। उनका प्रयोग करने की विधि बताई। उनका महत्त्व समझाया।

© NCERT not to be republished

महर्षि का आश्रम वहाँ से अधिक दूर नहीं था। लेकिन तब तक रात हो चली थी। विश्वामित्र ने वह दूरी अगले दिन तय करने का निर्णय लिया। ताड़का मर चुकी थी। उसका भय नहीं था। तीनों ने रात वहीं बिताई। ताड़का वन में, जो अब पूरी तरह भयमुक्त था।

सुबह जंगल बदला हुआ था। अब वह ताड़का वन नहीं था। क्योंकि ताड़का नहीं थी। भयानक आवाज़ें गायब हो चुकी थीं। पत्तों से गुज़रती हवा थी। उसकी सरसराहट का संगीत था। चिड़ियों की चहचहाहट थी। शांति थी। तसवीर बदल गई थी।

सिद्धाश्रम का अंतिम पड़ाव था– महर्षि का आश्रम। रास्ता छोटा भी था। मनोहारी भी। प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते तीनों लोग जल्दी ही आश्रम पहुँच गए। आश्रमवासियों ने उनकी अगवानी की। अभिनंदन किया। उनकी प्रसन्नता दुगुनी हो गई थी। महर्षि विश्वामित्र के आश्रम लौटने की खुशी। राम-लक्ष्मण के आगमन का सुख!

विश्वामित्र यज्ञ की तैयारियों में लग गए। अनुष्ठान प्रारंभ हुआ। आश्रम की रक्षा की ज़िम्मेदारी राम-लक्ष्मण को सौंपकर महर्षि आश्वस्त थे। अनुष्ठान अपने अंतिम चरण में था। पूरा होने वाला था। कुछ ही दिनों में।

पाँच दिन तक सब ठीक-ठाक चलता रहा। शांति से। निर्विघ्न। लगता था कि राजकुमारों की उपस्थिति ने ही राक्षसों को भगा दिया है। राम और लक्ष्मण ने यज्ञ पूरा होने तक न सोने का निर्णय किया। वे लगातार जागते रहे। चौकस रहे। कमर में तलवार। पीठ पर तुणीर। हाथ में धनुष। प्रत्यंचा चढ़ी हुई। हर स्थिति के लिए तैयार।

अनुष्ठान का अंतिम दिन। अचानक भयानक आवाज़ों से आसमान भर गया। सुबाहु और मारीच ने राक्षसों के दल-बल के साथ आश्रम पर धावा बोल दिया। मारीच क्रोधित था। यज्ञ के अलावा भी। इस बात से कि राम-लक्ष्मण ने उसकी माँ को मारा था। ताड़का को।

राम ने राक्षसों का हमला होते ही कार्रवाई की। धनुष उठाया और मारीच को निशाना बनाया। मारीच बाण लगते ही मूर्च्छित हो गया। बाण के वेग से बहुत दूर जाकर गिरा। समुद्र के किनारे। वह मरा नहीं। जब होश आया तो उठकर दक्षिण दिशा की ओर भाग गया। राम का दूसरा बाण सुबाहु को लगा। उसके प्राण वहीं निकल गए। सुबाहु के मरने पर राक्षस सेना में भगदड़ मच गई। वे चीखते-चिल्लाते भागे। कुछ लक्ष्मण के बाणों का शिकार हुए। अन्य जान बचाकर

© NCERT not to be republished

भाग खड़े हुए। महर्षि विश्वामित्र का अनुष्ठान संपन्न हुआ।

राम ने महर्षि को प्रणाम करते हुए पूछा, "अब हमारे लिए क्या आज्ञा है, मुनिवर?" महर्षि ने राम को गले लगाया। कहा, "हम लोग यहाँ से मिथिला जाएँगे। महाराज जनक के यहाँ। विदेहराज के दरबार में। मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों मेरे साथ चलो। उनके आयोजन में हिस्सा लेने। महाराज के पास एक अद्‌भुत शिव-धनुष है। तुम भी उसे देखो।"

राम और लक्ष्मण अगली यात्रा को लेकर उत्साहित थे। नए स्थान देखने और जानने का अवसर! सोन नदी पार कर विश्वामित्र मिथिला की सीमा के पास पहुँचे। अपने शिष्यों और राजकुमारों के साथ। वे गौतम ऋषि के आश्रम से होते हुए नगर में पहुँचे।

राजा जनक ने महल से बाहर आकर विश्वामित्र का स्वागत किया। तभी उनकी दृष्टि राजकुमारों पर पड़ी। विदेहराज चकित रह गए। वे स्वयं को रोक नहीं पाए। महर्षि से पूछा, "ये सुंदर राजकुमार कौन हैं? मैं इनके आकर्षण से खिंचता जा रहा हूँ।"

"ये राम और लक्ष्मण हैं। महाराज दशरथ के पुत्र। मैं इन्हें अपने साथ लाया हूँ। आपका अद्‌भुत धनुष दिखाने।"

विदेहराज ने महर्षि, उनके शिष्यों और राजकुमारों के ठहरने की व्यवस्था की। एक सुंदर उद्यान में। अगले दिन सभी आमंत्रित लोग, ऋषि-मुनि और राजकुमार यज्ञशाला में उपस्थित हुए। वहाँ महर्षि ने फिर धनुष का उल्लेख किया। महाराज जनक ने अपने अनुचरों को आज्ञा दी, "शिव-धनुष को यज्ञशाला में लाया जाए।"

शिव-धनुष सचमुच विशाल था। लोहे की पेटी में रखा हुआ था। पेटी में पहिए लगे हुए थे। आठ पहिए। उसे उठाना लगभग असंभव था। पहियों के सहारे खिसकाकर उसे एक से दूसरी जगह ले जाया जाता था। अनुचर मुश्किल से उसे खींचते हुए यज्ञशाला में ले आए। धनुष देखते ही विदेहराज एक पल के लिए उदास हो गए।

उन्होंने कहा, "मुनिवर! मैंने प्रतिज्ञा की है। अपनी पुत्री सीता के विवाह के संबंध में। जो यह धनुष उठाकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ा देगा उसी के साथ सीता का विवाह होगा। अनेक राजकुमारों ने प्रयास किया और लज्जित हुए। उठाना तो दूर, वे इसे हिला तक नहीं सके। प्रत्यंचा क्या चढ़ाते!"

विदेहराज का संकेत समझकर महर्षि विश्वामित्र ने राम से कहा, "उठो वत्स! यह धनुष देखो।"

© NCERT not to be republished

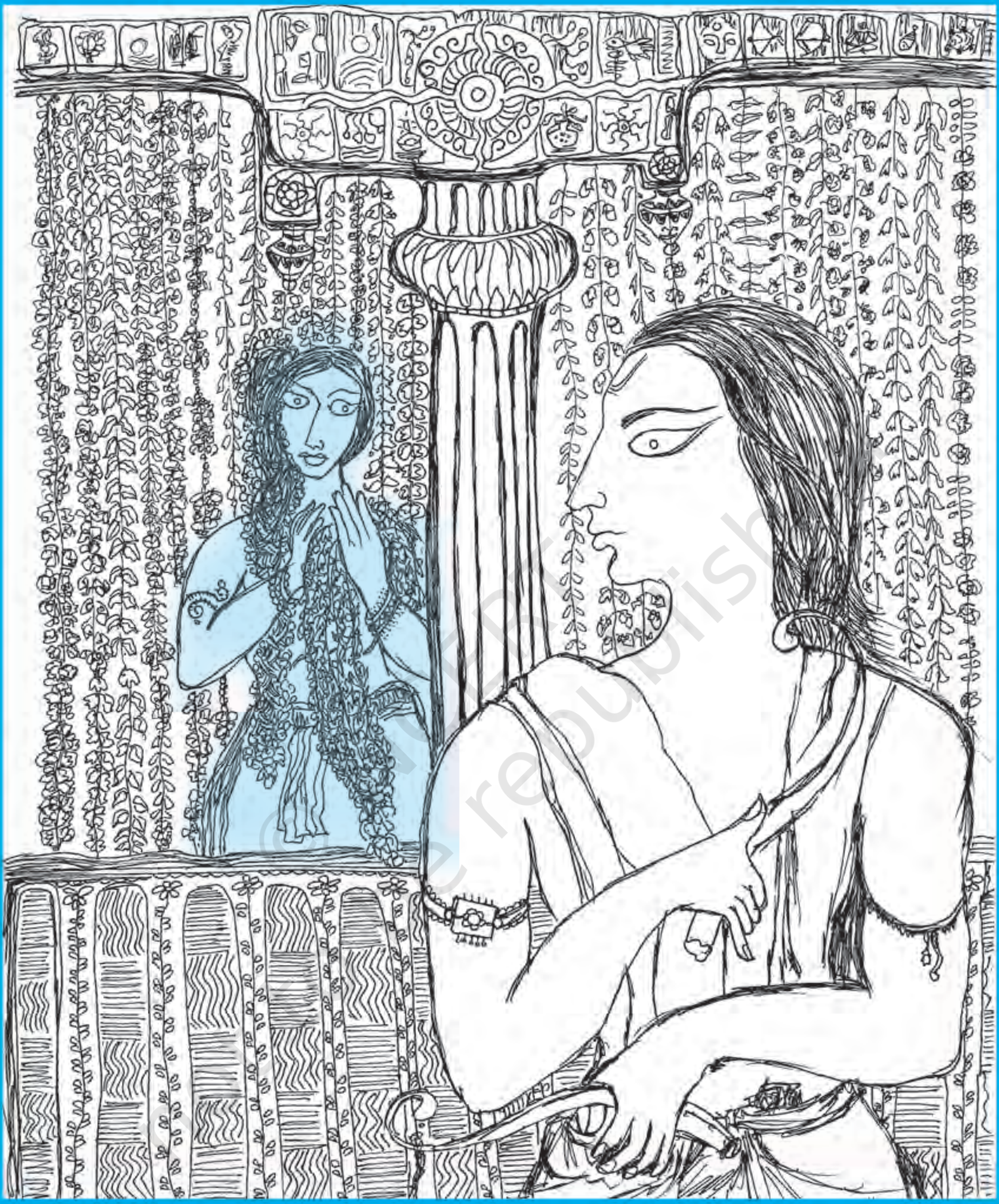

राम ने सिर झुकाकर गुरु की आज्ञा स्वीकार की। आगे बढ़े। पेटी का ढक्कन खोल दिया। राम ने पहले धनुष देखा फिर महर्षि को। गुरु का संकेत मिलने पर राम ने वह विशाल धनुष सहज ही उठा लिया। यज्ञशाला में उपस्थित सभी लोग हतप्रभ थे।

"इसकी प्रत्यंचा चढ़ा दूँ, मुनिवर?" राम ने पूछा।

"अवश्य। यदि ऐसा कर सकते हो।"

विदेहराज चकित थे। राम ने आसानी से धनुष झुकाया। ऊपर से दबाकर प्रत्यंचा खींची। दबाव से धनुष बीच से टूट गया। उसके दो टुकड़े हो गए। बच्चों के खिलौने की तरह। यज्ञशाला में सन्नाटा छा गया। सब चुप थे। एक-दूसरे की ओर देख रहे थे।

सभागार की चुप्पी महाराज जनक ने तोड़ी। उनकी खुशी का ठिकाना न था। उन्हें सीता के लिए योग्य वर मिल गया था। उनकी प्रतिज्ञा पूरी हुई। जनकराज ने कहा, "मुनिवर! आपकी अनुमति हो तो मैं महाराज दशरथ के पास संदेश भेजूँ। बारात लेकर आने का निमंत्रण। यह शुभ संदेश उन्हें शीघ्र भेजना चाहिए।"

महर्षि की अनुमति से दूत अयोध्या भेजे गए। सबसे तेज़ चलने वाले रथों से। इस बीच जनकपुर में धूम मच गई। बारात के स्वागत की तैयारियाँ होने लगीं। नगर की प्रसन्नता चरम पर थी।

महाराज जनक का संदेश मिलते ही अयोध्या में भी खुशी छा गई। आनन-फानन में बारात तैयार हुई। हाथी, घोड़े, रथ, सेना। बारात को मिथिला पहुँचने में पाँच दिन लग गए।

जनकपुरी जगमगा रही थी। हर मार्ग पर तोरणद्वार। हर जगह फूलों की चादर। एक-एक कोना सुवासित। हर घर के प्रवेशद्वार पर वंदनवार। एक-एक घर से मंगलगीत। मुख्यमार्ग पर दर्शकों की अपार भीड़। खिड़कियों और छज्जों से झाँकती महिलाएँ। एक नज़र राम को देख लें। राम-सीता की जोड़ी दिख जाए।

विवाह से ठीक पहले विदेहराज ने महाराज दशरथ से कहा, "राजन! राम ने मेरी प्रतिज्ञा पूरी कर बड़ी बेटी सीता को अपना लिया। मेरी इच्छा है कि छोटी पुत्री उर्मिला का विवाह लक्ष्मण से हो जाए। मेरे छोटे भाई कुशध्वज की भी दो पुत्रियाँ हैं—माँडवी और श्रुतकीर्ति। कृपया उन्हें भरत और शत्रुघ्न के लिए स्वीकार करें।"

राजा दशरथ ने यह प्रस्ताव तत्काल मान लिया।

विवाह के बाद बारात कुछ दिन जनकपुरी में रुकी। बाराती बहुओं को लेकर अयोध्या लौटे तो रानियों ने पुत्र-वधुओं की आरती उतारी। स्त्रियों ने फूल बरसाए। शंखध्वनि से गलियाँ गूँज उठीं। यह आनंदोत्सव लगातार कई दिनों तक चलता रहा।

© NCERT not to be republished

दो वरदान

0645CH03

राजा दशरथ के मन में अब एक ही इच्छा बची थी। राम का राज्याभिषेक। उन्हें युवराज का पद देना। अयोध्या लौटने के बाद से ही उन्होंने राम को राज-काज में शामिल करना शुरू कर दिया था। राम यह ज़िम्मेदारी अच्छी तरह निभा रहे थे। उनकी विनम्रता, विद्वत्ता और पराक्रम का लोहा सभी मानते थे। प्रजा उनको चाहती थी। दशरथ के लिए तो वह प्राणों से प्यारे थे ही। दरबार में राम का सम्मान निरंतर बढ़ रहा था।

राजा दशरथ वृद्ध हो चले थे। मुनि वशिष्ठ से विचार-विमर्श के बाद एक दिन उन्होंने दरबार में कहा, "मैंने लंबे समय तक राज-काज चलाया। जैसा बन पड़ा। अब मेरे अंग शिथिल हो गए हैं। मैं वृद्ध हो चला हूँ। मैं चाहता हूँ कि यह कार्यभार राम को सौंप दूँ। अगर आप सब सहमत हों तो राम को युवराज का पद दे दिया जाए। अगर आपकी राय इससे भिन्न है तो मैं उस पर भी विचार करने को तैयार हूँ।"

सभा ने तुमुलध्वनि से राजा दशरथ के प्रस्ताव का स्वागत किया। राम की जय-जयकार होने लगी। दशरथ थोड़ी देर तक सुनते रहे। संतोष के साथ। उन्होंने कहा, "शुभ काम में देरी नहीं होनी चाहिए। मेरी इच्छा है कि राम का राज्याभिषेक कल सुबह कर दिया जाए।" यह समाचार पलक झपकते पूरे नगर में फैल गया। हर जगह बस यही चर्चा थी। राज्याभिषेक की तैयारियाँ शुरू हो गईं।

भरत और शत्रुघ्न उस समय अयोध्या में नहीं थे। वह अपने नाना केकयराज के यहाँ गए हुए थे। भरत जब भी अयोध्या लौटने की बात करते, नाना उन्हें रोक लेते। भरत को अयोध्या की घटनाओं की सूचना नहीं थी। उन्हें अपने पिता के निर्णय के संबंध में नहीं पता था। यह जानकारी भी नहीं थी कि अगले दिन राम का राज्याभिषेक होने वाला है। केकय से एक दिन में भरत और शत्रुघ्न का आना संभव नहीं था।

राजा दशरथ ने इस संबंध में राम से चर्चा की। कहा कि भरत यहाँ नहीं है पर मैं चाहता हूँ कि राज्याभिषेक का कार्यक्रम

© NCERT not to be republished

न रोका जाए। उन्होंने राम से कहा, "जनता ने तुम्हें अपना राजा चुना है। तुम राजधर्म का पालन करना। कुल की मर्यादा की रक्षा अब तुम्हारे हाथ में है।"

राज्याभिषेक की तैयारियाँ रानी कैकेयी की दासी ने भी देखीं। मंथरा ने। शुरू में उसे इस चहल-पहल का कारण समझ में नहीं आया। उसने इसे कोई अन्य अनुष्ठान समझा। इतनी रौनक! ऐसी सजावट! ऐसा कुछ उसने अन्य अनुष्ठानों में नहीं देखा था। उसे अचंभा हुआ। फिर उसने रानी कौशल्या की दासी से पूछा। उसे तब पता चला कि कल राम का राज्याभिषेक होने वाला है। यह उत्सव उसी के लिए है।

मंथरा जलभुन गई। राम का राज्याभिषेक उसे षड्यंत्र लगा। कैकेयी के विरुद्ध। वह कैकेयी की दासी थी। बचपन से। कैकेयी का हित उसके लिए सर्वोपरि था। मंथरा उसे अपना हित मानती थी। वह कैकेयी की मुँहलगी थी। रानी कैकेयी भी उसे बहुत मानती थीं।

क्रोध से आगबबूला मंथरा रनिवास की ओर भागी। सीधे कैकेयी के कक्ष में। वह हाँफ रही थी। क्रोध से चेहरा लाल था। भागने के कारण साँस उखड़ रही थी। उसने रानी कैकेयी को सोते हुए देखा।

किसी तरह स्वयं को सँभालते हुए मंथरा ने कहा, "अरे मेरी मूर्ख रानी! उठ। तेरे ऊपर भयानक विपदा आने वाली है। यह समय सोने का नहीं है। होश में आओ। विपत्ति का पहाड़ टूटे, इससे पहले जाग जाओ।" रानी कैकेयी नींद से चौंककर उठीं। उन्हें मंथरा की बात समझ में नहीं आई। "बात क्या है? तुम इतना घबराई क्यों हो? सब कुशल तो है?" उन्होंने पूछा।

"कैसा कुशल? कैसा मंगल? सब अमंगल होने वाला है। तुम्हारे सुखों का अंत। महाराज दशरथ ने कल राम का राज्याभिषेक करने का निर्णय लिया है। अब राम युवराज होंगे।"

"यह तो बहुत शुभ समाचार है!" कैकेयी ने प्रसन्नता से अपने गले का हार उतारकर मंथरा को दे दिया। "मैं बहुत प्रसन्न हूँ। राम युवराज पद के लिए हर तरह से योग्य हैं।"

"रानी! तुम्हारी बुद्धि फिर गई है। मति मारी गई है। सवाल राम की योग्यता का नहीं है। राजा दशरथ के षड्यंत्र का है। तुम्हारे अधिकार छीनने का है," मंथरा ने हार दूर फेंकते हुए कहा। "यह षड्यंत्र नहीं तो और क्या है? कल सुबह राज्याभिषेक है। भरत को जानबूझकर ननिहाल भेज दिया। समारोह के लिए बुलाया तक नहीं।"

© NCERT not to be republished

कैकेयी का स्वर उग्र हो गया। उन्होंने मंथरा को डाँटते हुए कहा, "राम के प्रति मेरा अगाध स्नेह है। वह मुझे माँ के समान मानते हैं। तुझे इसमें षड्यंत्र दिखाई देता है? इसमें षड्यंत्र नहीं है। राम के बाद भरत ही राजा बनेंगे। राज सर्वदा ज्येष्ठ पुत्र को ही मिलता है।"

मंथरा पर इस फटकार का कोई प्रभाव नहीं हुआ। उसके लिए यह दशरथ का षड्यंत्र था। वह रानी कैकेयी के पलंग पर बैठ गई। उनके बहुत निकट। कैकेयी के चेहरे की ओर देखते हुए उसने कहा, "तुम बहुत भोली हो। नादान हो। तुम्हें आसन्न संकट नहीं दिखता। दुःख की जगह प्रसन्नता होती है। इस बुद्धि पर किसी को भी तरस आएगा। समझो रानी! राम राजा बने तो तुम कौशल्या की दासी बन जाओगी। भरत राम के दास हो जाएँगे। वह राजा नहीं बनेंगे। राम के बाद अगला राजा राम का पुत्र होगा। अनर्थ को अर्थ समझने की मूर्खता मत करो, रानी! राम को राज मिला तो वे भरत को देश निकाला दे देंगे। वे भरत को दंड देंगे। इस तिरस्कार से भरत की रक्षा करो, रानी! कोई ऐसा उपाय करो कि राजगद्दी भरत को मिले और राम को जंगल भेज दिया जाए।"

कैकेयी पर मंथरा की बातों का असर होने लगा। उनका सिर चकरा गया। वह पलंग से उठीं तो पाँव सीधे नहीं पड़े। आँखों में आँसू थे। मन भारी हो गया। प्रसन्नता की जगह अव्यक्त क्रोध ने ले ली। मंथरा के तर्कों में उन्हें सच्चाई दिखने लगी। "तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ?" कैकेयी ने आँसू पोंछते हुए मंथरा से कहा।

मंथरा पलंग से उठी। कैकेयी के पास जाकर खड़ी हो गई। उसने कहा, "याद करो रानी! महाराज दशरथ ने तुम्हें दो वरदान दिए थे। दशरथ से अपना वचन पूरा करने को कहो। एक से भरत के लिए राजगद्दी माँग लो। दूसरे से राम को चौदह वर्ष का वनवास।"

कैकेयी का चेहरा तमतमाया हुआ था। उन्हें मंथरा की बात ठीक लगी। उनके मन में एक प्रश्न अब भी था। यह बात दशरथ से कैसे कहें? उन्हें रनिवास बुलवाएँ या प्रतीक्षा करें। मंथरा ने कैकेयी के मन की बात भाँप ली। उसने कहा, "तुम मैले कपड़े पहनकर कोपभवन चली जाओ। महाराज दशरथ आएँ तो उनकी ओर मत देखो। बात मत करो। तुम उनकी प्रिय रानी हो। तुम्हारा दुःख देख नहीं पाएँगे। बस उसी समय तुम उन्हें पिछली बात याद दिलाना। दोनों वचन माँग लेना।"

© NCERT not to be republished

"मैं ऐसा ही करूँगी। महाराज का षड्‌यंत्र सफल नहीं होने दूँगी।"

मंथरा का लक्ष्य पूरा हो गया था। चलते-चलते उसने रानी कैकेयी से कहा, "राम के लिए चौदह वर्ष से कम वनवास मत माँगना। भरत इतने समय में राज-काज सँभाल लेंगे। जब तक राम लौटेंगे, लोग उन्हें भूल चुके होंगे। अब जल्दी करो, रानी! समय बहुत कम है।"

रानी कैकेयी कोपभवन चली गईं। मंथरा रनिवास से निकल गई।

दिनभर की गहमागहमी के बाद महाराज दशरथ को रानियों की याद आई। तुरंत रनिवास की ओर चल पड़े। उन्हें शुभ समाचार देने। सबसे पहले वह कैकेयी के कक्ष की ओर मुड़े। कैकेयी वहाँ नहीं थीं। प्रतिहारी से पूछा। पता चला कि वे कोपभवन में हैं। दशरथ को चिंता हुई। कैकेयी कोपभवन में! परंतु क्यों? क्या इसलिए कि उन्हें अब तक सूचना नहीं मिली। "मैं उसे अवश्य मना लूँगा," दशरथ ने सोचा।

दशरथ कोपभवन का दृश्य देखकर हैरान हो गए। उन्हें कुछ समझ में नहीं आया। कैकेयी ज़मीन पर लेटी हुई थीं। बाल बिखरे हुए। गहने कक्ष में बिखरे हुए। कपड़े मैले।

"तुम्हें क्या दु:ख है? क्या हुआ है तुम्हें? मुझे बताओ। अस्वस्थ हो? राजवैद्य को बुलाऊँ?" दशरथ ने कई सवाल पूछे। कोई उत्तर नहीं मिला। कैकेयी रोती रहीं।

"तुम मेरी सबसे प्रिय रानी हो। मैं तुम्हें प्रसन्न देखना चाहता हूँ। तुम्हारी खुशी के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ। कुछ भी। धरती-आसमान एक कर सकता हूँ।" दशरथ ने कैकेयी को मनाने का बहुत प्रयास किया। उत्तर उन्हें फिर भी नहीं मिला।

दशरथ भी भूमि पर बैठ गए। विनती करते रहे। "हाँ, मैं बीमार हूँ", कैकेयी ने कहा। "मैं अपनी बीमारी के संबंध में आपको बताऊँगी। लेकिन पहले आप एक वचन दें। मैं जो माँगूँ, उसे पूरा करेंगे।"

राजा ने तत्काल हामी भर दी। कहा, "मैं राम की सौगंध खाकर कहता हूँ। तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूँगा।"

महाराज दशरथ ने राम की सौगंध ली तो कैकेयी उठकर बैठ गईं।

"आप मुझे वे दोनों वरदान दीजिए, जिसका संकल्प आपने वर्षों पहले रणभूमि में लिया था।"

महाराज दशरथ ने हामी भरी।

"कल सुबह राज्याभिषेक भरत का हो, राम का नहीं," कैकेयी ने कहा। दशरथ भौचक रह गए। उन पर वज्रपात-सा हुआ। थोड़ा रुककर कैकेयी बोलीं, "राम को चौदह वर्ष का वनवास हो।"

© NCERT not to be republished

not to be republished

दशरथ का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। अवाक रह गए। सिर चकराने लगा। वे मूर्च्छित होकर गिर पड़े।

कुछ देर में राजा को होश आया। कैकेयी की ओर देखा। बड़े कातर भाव से बोले, "यह तुम क्या कह रही हो? मुझे विश्वास नहीं होता कि मैंने सही सुना है।" कैकेयी अड़ी रहीं। दशरथ कैकेयी की माँग को अस्वीकार करते रहे। अनर्थ बताते रहे। तब कैकेयी ने अंतिम हथियार चलाया।

"अपने वचन से पीछे हटना रघुकुल का अनादर है। आप चाहें तो ऐसा कर सकते हैं। पर तब आप दुनिया को मुँह दिखाने योग्य नहीं रहेंगे। रही मेरी बात। आप वरदान नहीं देंगे तो मैं विष पीकर आत्महत्या कर लूँगी। यह कलंक आपके माथे होगा।"

राजा दशरथ यह सुन नहीं सके। दोबारा बेहोश हो गए। रातभर बेसुध पड़े रहे। बीच-बीच में होश आता। वह कैकेयी को समझाते। गिड़गिड़ाते, धमकाते, डराते। पर कैकेयी टस-से-मस नहीं हुई। सारी रात इसी तरह बीत गई।

© NCERT not to be republished

0645CH04

राम का वन-गमन

कोपभवन के घटनाक्रम की जानकारी बाहर किसी को नहीं थी। यद्यपि सभी सारी रात जागे थे। कैकेयी अपनी ज़िद पर अड़ी हुईं। राजा दशरथ उन्हें समझाते हुए। नगरवासी राज्याभिषेक की तैयारी करते हुए। गुरु वशिष्ठ की आँखों में भी नींद नहीं थी। आखिर, राम का अभिषेक था! दिन चढ़ते के साथ चहल-पहल और बढ़ गई। हर व्यक्ति शुभ घड़ी की प्रतीक्षा में।

महामंत्री सुमंत्र कुछ असहज थे। महर्षि के पास आए। दोनों ने महाराज के बारे में चर्चा की। पिछली शाम से किसी ने महाराज को नहीं देखा था। कुछ लोगों के लिए इसका कारण आयोजन की व्यस्तता थी। महर्षि ने सुमंत्र को राजभवन भेजा। समय तेज़ी से बीत रहा था। शुभ घड़ी निकट आ रही थी। सारी तैयारियाँ हो चुकी थीं। केवल महाराज का आना शेष था। सुमंत्र तत्काल राजभवन पहुँचे।

कैकेयी के महल की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सुमंत्र को एक अनजान डर ने घेर लिया। अंदर पहुँचे। देखा कि महाराजा पलंग पर पड़े हैं। बीमार। दीनहीन। सुमंत्र का मन भाँपते हुए कैकेयी ने कहा, "चिंता की कोई बात नहीं है, मंत्रिवर! महाराज राज्याभिषेक के उत्साह में रातभर जागे हैं। वे बाहर निकलने से पूर्व राम से बात करना चाहते हैं।"

"कैसी बात?" सुमंत्र ने पूछा।

"मैं नहीं जानती। अपने मन की बात वे राम को ही बताएँगे। आप उन्हें बुला लाइए।"

दशरथ ने बहुत क्षीण स्वर में राम को बुलाने की आज्ञा दी। सुमंत्र के मन में कई तरह की आशंकाएँ थीं। पर वे उन्हें टालते रहे। राम के निवास के बाहर भारी भीड़ थी। लक्ष्मण भी वहीं थे। भवन को सजाया गया था। उसकी चमक-दमक देखने योग्य थी। सुमंत्र को देखकर कोलाहल बढ़ गया। लोगों के लिए यह एक संकेत था। राज्याभिषेक के लिए राम को आमंत्रित करने का। सुमंत्र ने कहा, "राजकुमार, महाराज ने आपको बुलाया है। आप मेरे साथ ही चलें।"

© NCERT not to be republished

कुछ ही पल में राम वहाँ पहुँच गए। लक्ष्मण साथ थे। दोनों भाई विस्मित थे। वे राजसी वस्त्रों में थे। सजे-धजे। लोग जय-जयकार करने लगे। पुष्पवर्षा होने लगी। राजकुमार समझ नहीं पा रहे थे कि महाराज ने उन्हें अचानक क्यों बुलाया। लोग समझ रहे थे कि राम राज्याभिषेक के लिए जा रहे हैं।

महल में पहुँचकर राम ने पिता को प्रणाम किया। फिर माता कैकेयी को। राम को देखते ही राजा दशरथ बेसुध हो गए। उनके मुँह से एक हलकी-सी आवाज़ निकली, "राम!" उन्हें होश आया तब भी वे कुछ बोल नहीं सके।

थोड़ी देर तक चुप्पी रही। असहज सन्नाटा। कोई कुछ नहीं बोला तो राम ने पिता से पूछा, "क्या मुझसे कोई अपराध हुआ है? कोई कुछ बोलता क्यों नहीं? आप ही बताइए, माते?"

"महाराज दशरथ ने मुझे एक बार दो वरदान दिए थे। मैंने कल रात वही दोनों वर माँगे, जिससे वे पीछे हट रहे हैं। यह शास्त्र-सम्मत नहीं है। रघुकुल की नीति के विरुद्ध है।" कैकेयी ने बोलना जारी रखा, "मैं चाहती हूँ कि राज्याभिषेक भरत का हो और तुम चौदह वर्ष वन में रहो। महाराज यही बात तुमसे नहीं कह पा रहे थे।"

राम संयत रहे। उन्होंने दृढ़ता से कहा, "पिता का वचन अवश्य पूरा होगा। भरत को राजगद्दी दी जाए। मैं आज ही वन चला जाऊँगा।"

राम की शांत और सधी हुई वाणी सुनकर कैकेयी के चेहरे पर प्रसन्नता छा गई। उनकी मनोकामना पूर्ण हुई। राजा दशरथ चुपचाप सब कुछ देख रहे थे। स्पंदनहीन। कैकेयी की ओर देखते हुए उनके मुँह से बस एक शब्द निकला— "धिक्कार!"

कैकेयी के महल से निकलकर राम सीधे अपनी माँ के पास गए। उन्होंने माता कौशल्या को कैकेयी-भवन का विवरण दिया। और अपना निर्णय सुनाया। राम वन जाएँगे। कौशल्या यह सुनकर सुध खो बैठीं। लक्ष्मण अब तक शांत थे। पर क्रोध से भरे हुए। राम ने समझाया और उनसे वन जाने की तैयारी के लिए कहा।

कौशल्या का मन था कि राम को रोक लें। वन न जाने दें। राजगद्दी छोड़ दें। पर वह अयोध्या में रहें। उन्होंने कहा, "पुत्र! यह राजाज्ञा अनुचित है। उसे मानने की आवश्यकता नहीं है।" राम ने उन्हें नम्रता से उत्तर दिया, "यह राजाज्ञा नहीं, पिता की आज्ञा है। उनकी आज्ञा का उल्लंघन मेरी शक्ति से परे है। आप मुझे आशीर्वाद दें।"

© NCERT not to be republished

लक्ष्मण से राम का संवाद जारी रहा। राम ने वन-गमन को भाग्यवश आया उलटफेर कहा। लक्ष्मण इससे सहमत नहीं थे। वे इसे कायरों का जीवन मानते थे। उन्होंने राम से कहा, "आप बाहुबल से अयोध्या का राजसिंहासन छीन लें। देखता हूँ कौन विरोध करता है।"

"अधर्म का सिंहासन मुझे नहीं चाहिए। मैं वन जाऊँगा। मेरे लिए तो जैसा राजसिंहासन, वैसा ही वन।"

कौशल्या ने स्वयं को सँभाला। उठीं और राम को गले लगा लिया। वे राम के साथ वन जाना चाहती थीं। राम ने मना कर दिया। कहा कि वृद्ध पिता को आपके सहारे की अधिक आवश्यकता है। कौशल्या ने राम को विदा करते हुए कहा, "जाओ पुत्र! दसों दिशाएँ तुम्हारे लिए मंगलकारी हों। मैं तुम्हारे लौटने तक जीवित रहूँगी।"

कौशल्या-भवन से निकलकर राम सीता के पास गए। सारा हाल बताया। विदा माँगी। माता-पिता की आयु का उल्लेख किया। उनकी सेवा करने का आग्रह किया। कहा, "प्रिये! तुम निराश मत होना। चौदह वर्ष के बाद हम फिर मिलेंगे।"

राम के वन-गमन का समाचार तब तक सीता के पास नहीं पहुँचा था। राम को देखकर कुछ आशंका हुई। अनिष्ट की। राम ने विदा माँगी तो सीता व्याकुल हो गईं। क्रोधित भी हुईं। निर्णय पर प्रतिवाद किया। राम नहीं माने तो सीता ने उनके साथ जंगल जाने का प्रस्ताव रखा। सीता ने कहा, "मेरे पिता का आदेश है कि मैं छाया की तरह हमेशा आपके साथ रहूँ।" अंततः राम को उनकी बात माननी पड़ी। तभी लक्ष्मण भी वहाँ आ गए। वह भी साथ जाने को तैयार थे। राम ने उन्हें इसकी स्वीकृति दे दी। शीघ्र तैयारी करने को कहा।

राम चाहते थे कि सीता वन न जाएँ। अयोध्या में रहें। वे इसकी अनुमति दे चुके थे। फिर भी उन्होंने एक और प्रयास किया। "सीते! वन का जीवन बहुत कठिन है। न रहने का ठीक स्थान, न भोजन का ठिकाना। कठिनाइयाँ कदम-कदम पर। तुम महलों में पली हो। ऐसा जीवन कैसे जी सकोगी?" सीता ने उत्तर नहीं दिया। मुसकरा दीं। उन्हें पता था कि राम अपने दिए वचन से पलट नहीं सकते।

राम वन जा रहे हैं। यह समाचार पूरे नगर में फैल चुका था। नगरवासी दशरथ और कैकेयी को धिक्कार रहे थे। कुछ देर पहले तक जहाँ उत्सव की तैयारियाँ थीं, वहाँ उदासी ने घर कर लिया। सड़कें गीली थीं। लोगों के आँसुओं से। सबकी

© NCERT not to be republished

इच्छा थी कि राम–सीता वन न जाएँ। वे उन्हें रोकना चाहते थे। पर बेबस थे।

राम, सीता और लक्ष्मण जंगल जाने से पहले पिता का आशीर्वाद लेने गए। महाराज दशरथ दर्द से कराह रहे थे। तीनों रानियाँ वहीं थीं। मंत्री आसपास थे। मंत्रीगण रानी कैकेयी को अब भी समझा रहे थे। क्षुब्ध थे पर तर्क का साथ नहीं छोड़ना चाहते थे। ज्ञान, दर्शन, नीति–रीति, परंपरा। सबका हवाला दिया। कैकेयी अड़ी रहीं।

राम ने कक्ष में प्रवेश किया तो दशरथ में जीवन का संचार हुआ। वे उठकर बैठ गए। उन्होंने कहा, "पुत्र! मेरी मति मारी गई है। मैं वचनबद्ध हूँ। ऐसा निर्णय करने के लिए विवश हूँ। पर तुम्हारे ऊपर कोई बंधन नहीं है। मुझे बंदी बना लो और राज सँभालो। यह राजसिंहासन तुम्हारा है। केवल तुम्हारा।"

पिता के वचनों ने राम को झकझोर दिया। वे दु:खी हो गए। पर उन्होंने नीति का साथ नहीं छोड़ा। "आंतरिक पीड़ा आपको ऐसा कहने पर विवश कर रही है। मुझे राज्य का लोभ नहीं है। मैं ऐसा नहीं कर सकता। आप हमें आशीर्वाद देकर विदा करें। विदाई का दु:ख सहन करना कठिन है। इसे और न बढ़ाएँ।"

इसी बीच रानी कैकेयी ने राम, लक्ष्मण और सीता को वल्कल वस्त्र दिए। राम ने राजसी वस्त्र उतार दिए। तपस्वियों के वस्त्र पहने। सीता को तपस्विनी के वेश में देखना सबसे अधिक दुखदायी था। महर्षि वशिष्ठ अब तक शांत थे। उन्हें क्रोध आ गया। उन्होंने कहा, "सीता वन जाएगी तो सब अयोध्यावासी उसके साथ जाएँगे। भरत सूनी अयोध्या पर राज करेंगे। यहाँ कोई नहीं होगा। पशु–पक्षी भी नहीं।"

एक बार फिर राम ने सबसे अनुमति माँगी। आगे–आगे राम। उनके पीछे सीता। उनके पीछे लक्ष्मण। महल के ठीक बाहर मंत्री सुमंत्र रथ लेकर खड़े थे। रथ पर चढ़कर राम ने कहा, "महामंत्री, रथ तेज़ चलाएँ।" नगरवासी रथ के पीछे दौड़े। राजा दशरथ और माता कौशल्या भी पीछे–पीछे गए। सब रो रहे थे। सबकी आँखों में आँसू थे। पुरुष, महिलाएँ, बूढ़े, जवान, बच्चे। मीलों तक नंगे पाँव दौड़ते रहे। राम यह दृश्य देखकर विचलित हो गए। भावुक भी। उनसे यह देखा नहीं जा रहा था। उन्होंने सुमंत्र से रथ को और गति से हाँकने को कहा। ताकि लोग हार जाएँ। थककर पीछे छूट जाएँ। घर लौट जाएँ।

राजा दशरथ लगातार रथ की दिशा में नज़रें गड़ाए रहे। खड़े रहे, जब तक रथ

© NCERT not to be republished

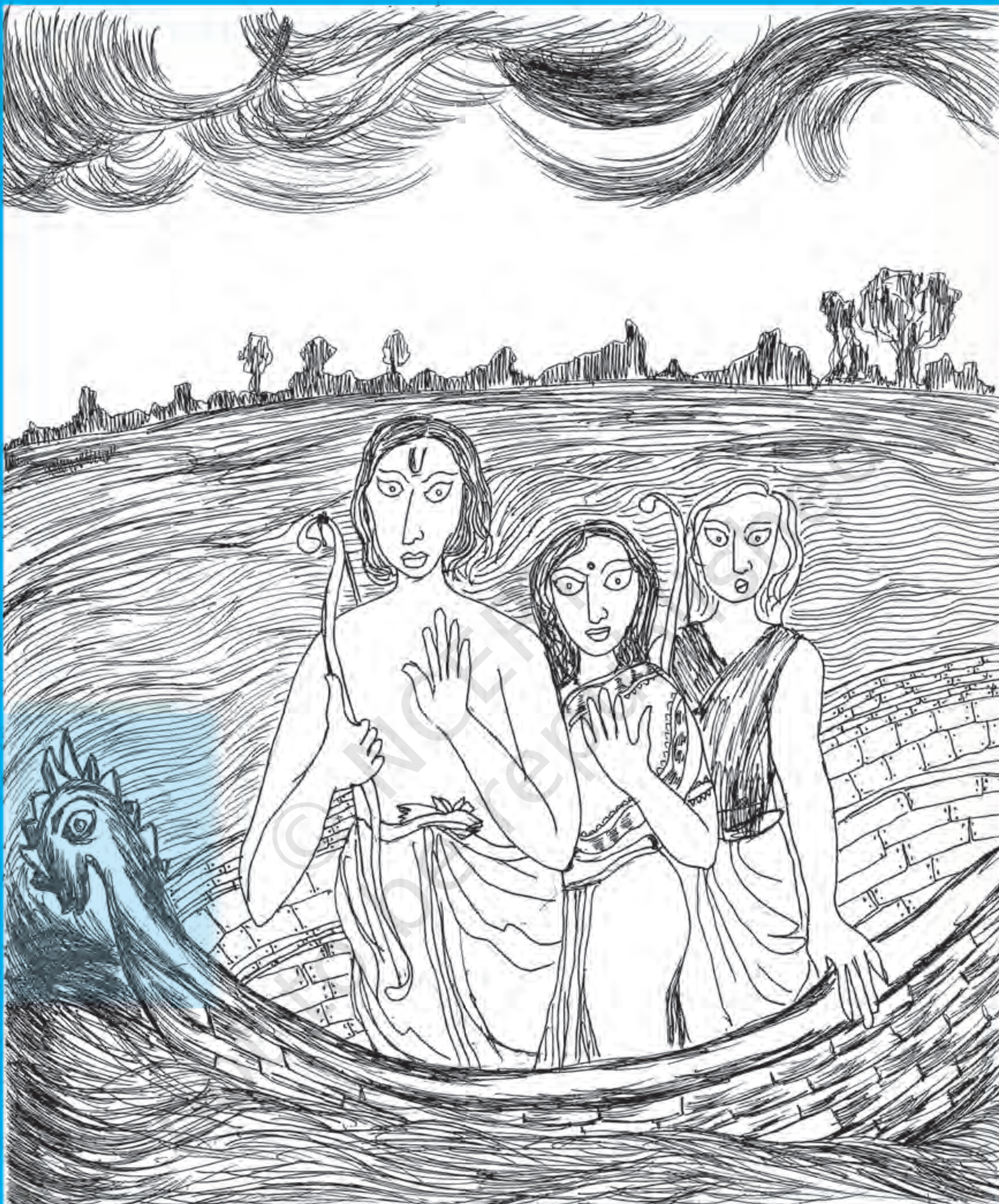

आँखों से ओझल नहीं हो गया। रथ दिखना बंद हुआ तो वे धरती पर गिर पड़े। रथ दिनभर दौड़ता रहा। वन अभी दूर था। तमसा नदी के तट तक पहुँचते–पहुँचते शाम हो गई। वनवासियों ने रात वहीं बिताई। अगली सुबह वे दक्षिण दिशा की ओर चले। हरे–भरे खेतों के बीच से। गोमती नदी पारकर राम–सीता और लक्ष्मण सई नदी के तट पर पहुँचे। महाराज दशरथ के राज्य की सीमा वहीं समाप्त होती थी। राम ने मुड़कर अपनी जन्मभूमि को देखा। उसे प्रणाम किया। कहा, "हे जननी!" अब चौदह वर्ष बाद ही तुम्हारे दर्शन कर सकूँगा।"

शाम होते–होते वे गंगा के किनारे पहुँच गए। शृंगवेरपुर गाँव में। निषादराज गुह ने उनका स्वागत किया। राम ने रात वहीं विश्राम किया। गुहराज के अतिथि के रूप में। वन क्षेत्र आ गया था। नदी के उस पार। अगली सुबह राम ने महामंत्री को समझा बुझाकर वापस भेज दिया। दोनों राजकुमारों और सीता ने नाव से नदी पार की। सुमंत्र तट पर खड़े रहे। वनवासियों के उस पार उतरने तक। उसके बाद वे अयोध्या लौट आए।

सुमंत्र का खाली रथ अयोध्या पहुँचा तो लोगों ने उसे घेर लिया। वे राम के बारे में जानना चाहते थे। सुमंत्र बिना कुछ बोले सीधे राजभवन गए। राजा दशरथ कौशल्या–भवन में थे। बेचैन। सुमंत्र की प्रतीक्षा में। उन्होंने कहा, "महामंत्री! राम कहाँ हैं? सीता कैसी हैं? लक्ष्मण का क्या समाचार है? वे कहाँ रहते हैं? क्या खाते हैं?"

सुमंत्र की आँखों में आँसू थे। उन्होंने एक–एक कर महाराज के सभी प्रश्नों का उत्तर दिया। सुमंत्र को पता था कि दशरथ को इन उत्तरों से संतोष नहीं होगा। महाराज की बेचैनी बनी रही। बढ़ती गई। वन–गमन के छठे दिन दशरथ ने प्राण त्याग दिए। राम का वियोग उनसे सहा नहीं गया।

दूसरे दिन महर्षि वशिष्ठ ने मंत्रिपरिषद् से चर्चा की। सबकी राय थी कि राजगद्दी खाली नहीं रहनी चाहिए। तय हुआ कि भरत को तत्काल अयोध्या बुलाया जाए। घुड़सवार दूत रवाना किए गए। इस निर्देश के साथ कि उन्हें अयोध्या की घटनाओं के संबंध में मौन रहना है।

© NCERT
not to be republished

चित्रकूट में भरत

0645CH05

भरत केकय राज्य में थे। अपनी ननिहाल में। अयोध्या की घटनाओं से सर्वथा अनभिज्ञ। लेकिन वे चिंतित थे। उन्होंने एक सपना देखा था। पर उसका अर्थ पूरी तरह नहीं समझ पा रहे थे। संगी-साथियों के साथ बातचीत में उन्होंने कहा, "मैं नहीं जानता कि उसका अर्थ क्या है? पर सपने से मुझे डर लगने लगा है। मैंने देखा कि समुद्र सूख गया। चंद्रमा धरती पर गिर पड़े। वृक्ष सूख गए। एक राक्षसी पिता को खींचकर ले जा रही है। वे रथ पर बैठे हैं। रथ गधे खींच रहे हैं।"

जिस समय भरत मित्रों को अपना सपना सुना रहे थे, ठीक उसी समय अयोध्या से घुड़सवार दूत वहाँ पहुँचे। घुड़सवारों ने छोटा रास्ता चुना था। जल्दी पहुँचने के लिए। भरत को संदेश मिला। वे तत्काल अयोध्या जाने के लिए तैयार हो गए। ननिहाल में भरत का मन नहीं लग रहा था। उचट गया था। वे अयोध्या पहुँचने को उतावले थे।

केकयराज ने भरत को विदा किया। सौ रथों और सेना के साथ। उन्हें घुड़सवारों से अधिक समय लगा। लंबा रास्ता पकड़ना पड़ा। सेना और रथ खेतों से होकर नहीं जा सकते थे। वे आठ दिन बाद अयोध्या पहुँचे। नदी-पर्वत लाँघते। थके हुए। और चिंतित।

भरत ने अयोध्या नगरी को दूर से देखा। नगर उन्हें सामान्य नहीं लगा। बदला-बदला सा था। अनिष्ट की आशंका उनके मन में और गहरी हो गई। "यह मेरी अयोध्या नहीं है? क्या हो गया है इसे?" उन्होंने पूछा। "सड़कें सूनी हैं। बाग-बगीचे उदास हैं। सब लोग कहाँ गए? वह तुमुलनाद कहाँ है? पक्षी भी कलरव नहीं कर रहे हैं। इतनी चुप्पी क्यों?" किसी ने भरत के प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया।

नगर पहुँचते ही भरत सीधे राजभवन गए। महाराज दशरथ के प्रासाद की ओर। महाराज वहाँ नहीं थे। फिर वे कैकेयी के महल की ओर बढ़े। माँ ने आगे बढ़कर पुत्र को गले लगा लिया। परंतु भरत की आँखें पिता को ढूँढ़ रहीं थीं। उन्होंने माँ से पूछा। "पुत्र! तुम्हारे पिता चले गए हैं।

© NCERT not to be republished

वहाँ, जहाँ एक दिन हम सबको जाना है। उनका निधन हो गया।"

भरत यह सुनते ही शोक में डूब गए। पछाड़ खाकर गिर पड़े। विलाप करने लगे। माँ कैकेयी ने उन्हें उठाया। ढाढ़स बँधाया। कहा, "उठो पुत्र! यशस्वी कुमार शोक नहीं करते। तुम्हारा इस प्रकार दुःखी होना उचित नहीं है। राजगुणों के विरुद्ध है। अपने को सँभालो।"

क्या से क्या हो गया! भरत यह मानकर चल रहे थे कि पिता राज्याभिषेक की तैयारियों में व्यस्त होंगे। सब कुछ उलटा हो गया। "उन्होंने मेरे लिए कोई संदेश दिया?" भरत ने माँ से पूछा। "नहीं, अंतिम समय में उनके मुँह से केवल तीन शब्द निकले। हे राम! हे सीते! हे लक्ष्मण! तुम्हारे लिए कुछ नहीं कहा।"

भरत व्याकुल थे। विकलता बढ़ती ही जा रही थी। वह तुरंत राम के पास जाना चाहते थे। "महाराज ने उन्हें वनवास दे दिया है। चौदह वर्ष के लिए। सीता और लक्ष्मण भी राम के साथ गए हैं।" कैकेयी ने भरत का मन पढ़ते हुए कहा। वह जानती थीं कि भरत यहाँ से सीधे राम के पास ही जाएँगे।

"परंतु वनवास क्यों? भ्राता राम से कोई अपराध हुआ?"

"राम ने कोई अपराध नहीं किया। महाराज ने उन्हें दंड भी नहीं दिया। इसके लिए मैंने महाराजा दशरथ से प्रार्थना की थी। मुझे तुम्हारे हित में यही उचित लगा। मैं तुम्हारा अहित नहीं देख सकती थी," कैकेयी ने कहा। वरदान की पूरी कथा सुनाते हुए उन्होंने कहा, "उठो पुत्र! राजगद्दी सँभालो। अयोध्या का निष्कंटक राज्य अब तुम्हारा है।"

भरत अपना क्रोध रोक नहीं सके। चीख पड़े, "यह तुमने क्या किया, माते! ऐसा अनर्थ! घोर अपराध! अपराधिनी हो तुम। वन तुम्हें जाना चाहिए था, राम को नहीं। मेरे लिए यह राज अर्थहीन है। पिता को खोकर। भाई से बिछड़कर। नहीं चाहिए मुझे ऐसा राज्य।"

इस बीच मंत्रीगण और सभासद भी वहाँ आ गए। भरत बोलते रहे, "तुमने पाप किया है, माते! इतना साहस कहाँ से आया तुममें? किसने तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट की? उलटा पाठ किसने पढ़ाया? यह अपराध अक्षम्य है। मैं राजपद नहीं ग्रहण करूँगा। तुमने ऐसा सोचा कैसे?" सभासदों की ओर मुड़ते हुए भरत ने हाथ जोड़कर कहा, "आप भी सुन लें। मेरी माँ ने जो किया है, उसमें मेरा कोई हाथ नहीं है। मैं राम की सौगंध खाकर कहता हूँ। मैं राम

© NCERT not to be republished

के पास जाऊँगा। उन्हें मनाकर लाऊँगा। प्रार्थना करूँगा कि वे गद्दी सँभालें। मैं दास बनकर रहूँगा।"

भरत बहुत उत्तेजित हो गए थे। स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सके। बोलते-बोलते उनकी साँस उखड़ने लगी। वे चकराकर धरती पर गिर पड़े।

सुध-बुध लौटी तो भरत रानी कौशल्या के महल की ओर चल पड़े। उनसे लिपटकर बच्चों की तरह बिलखकर रोए। उनके चरणों में गिर पड़े। कौशल्या आहत थीं। उन्होंने कहा, "पुत्र, तुम्हारी मनोकामना पूरी हुई। तुम जो चाहते थे, हो गया। राम अब जंगल में हैं। अयोध्या का राज तुम्हारा है। मुझे बस एक दुख है। कैकेयी ने राज लेने का जो तरीका अपनाया वह अनुचित था। निर्मम था। तुम राज करो पुत्र, पर मुझ पर एक दया करो। मुझे मेरे राम के पास भिजवा दो।"

भरत ने रानी कौशल्या से क्षमा माँगी। सफ़ाई दी। रानी कैकेयी के व्यवहार पर ग्लानि व्यक्त की। कहा, "राम मेरे प्रिय अग्रज हैं। मैं उनका अहित सोच भी नहीं सकता। मैं निरपराध हूँ।"

कौशल्या ने भरत को क्षमा कर दिया। उन्हें गले से लगा लिया। भरत सारी रात फूट-फूटकर रोते रहे।

सुबह तक शत्रुघ्न को पता चल गया था कि कैकेयी के कान किसने भरे। मंथरा अयोध्या के घटनाक्रम से घबरा गई थी। छिप गई। कुछ दिनों से उसे किसी ने नहीं देखा। भरत और शत्रुघ्न राम को वापस लाने पर मंत्रणा कर रहे थे। तभी शत्रुघ्न की दृष्टि, बचकर निकलती मंथरा पर पड़ी। उन्होंने लपककर उसके बाल पकड़ लिए। खींचते हुए भरत के सामने लाए। भरत को दासी की भूमिका बताई। शत्रुघ्न उसे जान से मार देने पर उद्यत थे। भरत ने बीच-बचाव किया।

मुनि वशिष्ठ अयोध्या का राजसिंहासन रिक्त नहीं देखना चाहते थे। खाली सिंहासन के खतरों से वे परिचित थे। उन्होंने सभा बुलाई। भरत और शत्रुघ्न को आमंत्रित किया। भरत से कहा, "वत्स! तुम राजकाज सँभाल लो। पिता के निधन और बड़े भाई के वन-गमन के बाद यही उचित है।"

भरत ने महर्षि का आग्रह अस्वीकार कर दिया। बोले, "मुनिवर, यह राज्य राम का है। वही इसके अधिकारी हैं। मैं यह पाप नहीं कर सकता। हम सब वन जाएँगे। और राम को वापस लाएँगे।"

वन जाने के लिए सभी तैयार थे। भरत ने सबके मन की बात कही थी। सबकी इच्छा थी कि राम अयोध्या लौट

© NCERT
not to be republished

आएँ। अगली सुबह भरत सभी मंत्रियों और सभासदों के साथ वन के लिए चले। गुरु वशिष्ठ साथ थे। नगरवासी भी थे। अयोध्या की चतुरंगिणी सेना तो थी ही।

राम तब तक गंगा पार कर चित्रकूट पहुँच गए थे। वहाँ एक आश्रम था। महर्षि भरद्वाज का। गंगा-यमुना के संगम पर। राम आश्रम में नहीं रहना चाहते थे। ताकि महर्षि को असुविधा न हो। महर्षि ने उन्हें एक पहाड़ी दिखाई। सुंदर स्थान। सुरम्य दृश्य। पर्णकुटी वहीं बनाई गई।

भरत को सूचना मिल गई थी। वे चित्रकूट ही आ रहे थे। पूरे दल-बल के साथ। सेना के चलने से आसमान धूल से अट गया। हर ओर कोलाहल। वे शृंगवेरपुर पहुँचे। निषादराज गुह को सेना देखकर कुछ संदेह हुआ। कहीं राजमद में आकर भरत राम पर आक्रमण करने तो नहीं जा रहे हैं? सही स्थिति पता चली तो उन्होंने भरत की अगवानी की। गंगा पार करने के लिए देखते-देखते पाँच सौ नावें जुटा दीं।

रास्ते में मुनि भरद्वाज का आश्रम पड़ा। उन्होंने भरत को राम का समाचार दिया। वह मार्ग दिखाया, जिधर से राम गए। वह पहाड़ी दिखाई, जहाँ राम ने पर्णकुटी बनाई। अयोध्यावासियों ने रात आश्रम में ही बिताई। इस संतोष के साथ कि राम अब दूर नहीं हैं।

आगे जंगल घना था। सेना चली तो वन में खलबची मच गई। जानवर इधर-उधर भागने लगे। पक्षियों ने अपना बसेरा छोड़ दिया। छोटी वनस्पतियाँ सेना के पाँव तले कुचल गईं। बड़े वृक्ष थरथरा उठे। राम और सीता पर्णकुटी में थे। लक्ष्मण पहरा दे रहे थे। कोलाहल उन्होंने भी सुना। वे एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गए। देखने के लिए कि मामला क्या है।

लक्ष्मण ने देखा कि विराट सेना चली आ रही है। सेना का ध्वज जाना पहचाना था। अयोध्या की सेना थी। वे उत्तर की ओर से आगे बढ़ रहे थे। लक्ष्मण ने पेड़ से ही चीखकर कहा, "भैया, भरत सेना के साथ इधर आ रहे हैं। लगता है वे हमें मार डालना चाहते हैं। ताकि एकछत्र राज कर सकें।"

राम कुटी से बाहर आए। उन्होंने लक्ष्मण को समझाया। "भरत हम पर हमला नहीं करेगा। कभी नहीं। वह हम लोगों से भेंट करने आ रहा होगा," राम ने कहा।

"भेंट के लिए सेना के साथ आने का क्या औचित्य? दो भाइयों के मिलन में सेना का क्या काम?" लक्ष्मण आश्वस्त नहीं थे। वे सेना पर आक्रमण करना चाहते थे। राम ने उन्हें रोक दिया।

© NCERT not to be republished

"वीर पुरुष धैर्य का साथ कभी नहीं छोड़ते। कुछ समय प्रतीक्षा करो। इस प्रकार का उतावलापन उचित नहीं है।"

भरत ने सेना पहाड़ी के नीचे रोक दी। नगरवासियों से भी वहीं ठहरने को कहा। कोलाहल थम गया। उसकी जगह पुनः वन की नैसर्गिक शांति ने ले ली। भरत ने पहाड़ी को प्रणाम किया। शत्रुघ्न को साथ लेकर नंगे पाँव ऊपर चढ़े। पाँवों की गति अचानक बढ़ गई। भाई से मिलने की उत्कंठा में। वे और प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे।

पहाड़ी पर दूर से उन्हें एक छवि दिखी। वह राम थे। शिला पर बैठे हुए। पास ही सीता और लक्ष्मण बैठे थे। भरत दौड़ पड़े। राम के चरणों में गिर पड़े। उनके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। शत्रुघ्न ने भी राम की चरण वंदना की। बोले वे भी नहीं। उन्होंने दोनों को उठाकर सीने से लगा लिया। सबकी आँखों में आँसू थे।

भरत साहस नहीं जुटा पा रहे थे। बड़े भाई को यह सूचना देने का कि पिता दशरथ नहीं रहे। "एक दुःखद समाचार है, भ्राता!" बहुत कठिनाई से उन्होंने कहा। "पिता दशरथ नहीं रहे। आपके आने के छठे दिन। दुख में प्राण त्याग दिए।" राम सन्न रह गए। शोक में डूब गए।

राम को पता चला कि भरत के साथ केवल सेना नहीं आई है। नगरवासी आए हैं। गुरुजन हैं। माता हैं। कैकेयी भी। राम-लक्ष्मण पहाड़ी से उतरकर उनसे भेंट करने आए। सबसे स्नेह से मिले। सीता को तपस्विनी के वेश में देखकर माताएँ दुःखी हुईं। राम ने कैकेयी को प्रणाम किया। सहज भाव से। कैकेयी मन-ही-मन पछता रही थीं।

अगले दिन भरत ने राम से राजग्रहण का आग्रह किया। समझाया। विनती की कि अयोध्या लौट चलें। राम इसके लिए तैयार नहीं हुए। "पिता की आज्ञा का पालन अनिवार्य है। पिता की मृत्यु के बाद मैं उनका वचन नहीं तोड़ सकता।" भरत को राजकाज समझाया। कहा कि अब तुम ही गद्दी सँभालो। यह पिता की आज्ञा है।

राम-भरत संवाद के समय मंत्री और सभासद वहाँ उपस्थित थे। मुनि वशिष्ठ भी। भरत बार-बार राम से लौटने का आग्रह करते रहे। राम हर बार पूरी विनम्रता और दृढ़ता के साथ इसे अस्वीकार करते रहे। महर्षि वशिष्ठ ने कहा, "राम! रघुकुल की परंपरा में राजा ज्येष्ठ पुत्र ही होता है। तुम्हें अयोध्या लौटकर अपना दायित्व निभाना चाहिए। इसी में कुल का मान है।"

© NCERT not to be republished

राम ने बहुत संयत स्वर में कहा, "चाहे चंद्रमा अपनी चमक छोड़ दे, सूर्य पानी की तरह ठंडा हो जाए, हिमालय शीतल न रहे, समुद्र की मर्यादा भंग हो जाए, परंतु मैं पिता की आज्ञा से विरत नहीं हो सकता। मैं उन्हीं की आज्ञा से वन आया हूँ। उन्हीं की आज्ञा से भरत को राजगद्दी सँभालनी चाहिए।"

राम किसी तरह लौटने को तैयार नहीं हुए। भरत के चेहरे पर निराशा के भाव थे। वे विफल हो गए थे। राम को मनाने में। "आप नहीं लौटेंगे तो मैं भी खाली हाथ नहीं जाऊँगा। आप मुझे अपनी खड़ाऊँ दे दें। मैं चौदह वर्ष उसी की आज्ञा से राजकाज चलाऊँगा।"

भरत का यह आग्रह राम ने स्वीकार कर लिया। अपनी खड़ाऊँ दे दी। भरत ने खड़ाऊँ को माथे से लगाया और कहा, "चौदह वर्ष तक अयोध्या पर इन चरण-पादुकाओं का शासन रहेगा।" सबको प्रणाम कर राम ने उन्हें चित्रकूट से विदा किया।

राम की चरण-पादुकाओं को एक सुसज्जित हाथी पर रखा गया। प्रतिहारी उस पर चँवर डुलाते रहे। अयोध्या पहुँचकर भरत ने पादुका-पूजन किया। कहा, "ये पादुकाएँ राम की धरोहर हैं। मैं इनकी रक्षा करूँगा। इनकी गरिमा को आँच नहीं आने दूँगा।"

भरत अयोध्या में कभी नहीं रुके। तपस्वी के वस्त्र पहने और नंदीग्राम चले गए। जाते समय उन्होंने कहा, "मेरी अब केवल एक इच्छा है। इन पादुकाओं को उन चरणों में देखूँ, जहाँ इन्हें होना चाहिए। मैं राम के लौटने की प्रतीक्षा करूँगा। चौदह वर्ष।"

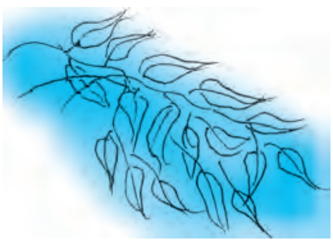

© NCERT not to be republished

दंडक वन में दस वर्ष

0645CH06

भरत अयोध्या लौट चुके थे। नगरवासी भी। सेना धूल उड़ाती हुई वापस जा चुकी थी। कोलाहल थम गया था। दो दिन बाद चित्रकूट की परिचित शांति लौट आई थी। पक्षियों की चहचहाहट फिर सुनाई पड़ने लगी थी। हिरण कुलाचें भरते हुए बाहर निकल आए थे।

राम पर्णकुटी के बाहर एक शिलाखंड पर बैठे थे। एकदम अकेले। विचारमग्न। कुछ सोचते हुए। चित्रकूट अयोध्या से केवल चार दिन की दूरी पर था। लोगों का आना-जाना लगा रहता। वे प्रश्न पूछते। राय माँगते। यह राजकाज में हस्तक्षेप की तरह होता। चित्रकूट सुंदर-सुरम्य था। शांत था। पर राम वहाँ से दूर चले जाना चाहते थे। उन्होंने मन बना लिया। चित्रकूट में न ठहरने का।

इसका एक कारण और था। वहाँ रहकर तपस्या करने वाले ऋषि-मुनियों का निर्णय। राम-लक्ष्मण ने उस वन से राक्षसों का सफ़ाया कर दिया था। अब तपस्या में कोई बाधा नहीं थी। लेकिन मुनिगण वन छोड़ना चाहते थे। कुछ राक्षस मायावी थे। जब-तब आ धमकते थे। यज्ञ में बाधा डालते थे।

तीनों वनवासी मुनि अत्रि से विदा लेकर चल पड़े। दंडक वन की ओर। चित्रकूट छोड़ दिया। दंडकारण्य घना था। पशु-पक्षियों और वनस्पतियों से परिपूर्ण। इस वन में अनेक तपस्वियों के आश्रम थे। लेकिन राक्षस भी कम नहीं थे। वे ऋषि-मुनियों को कष्ट देते थे। अनुष्ठानों में विघ्न डालकर। राम को देखकर मुनिगण बहुत प्रसन्न हुए।

मुनियों ने राम का स्वागत करते हुए कहा, "आप उन दुष्ट मायावी राक्षसों से हमारी रक्षा करें। आश्रमों को अपवित्र होने से बचाएँ।" सीता दैत्यों के संहार के संबंध में दूसरी तरह सोच रही थीं। वे चाहती थीं कि राम अकारण राक्षसों का वध न करें। उन्हें न मारें, जिन्होंने उनका कोई अहित नहीं किया है। राम ने उन्हें समझाया, "सीते! राक्षसों का विनाश ही उचित है। वे मायावी हैं। मुनियों को कष्ट पहुँचाते हैं। इसीलिए मैंने ऋषियों की रक्षा की प्रतिज्ञा की है।"

© NCERT not to be republished

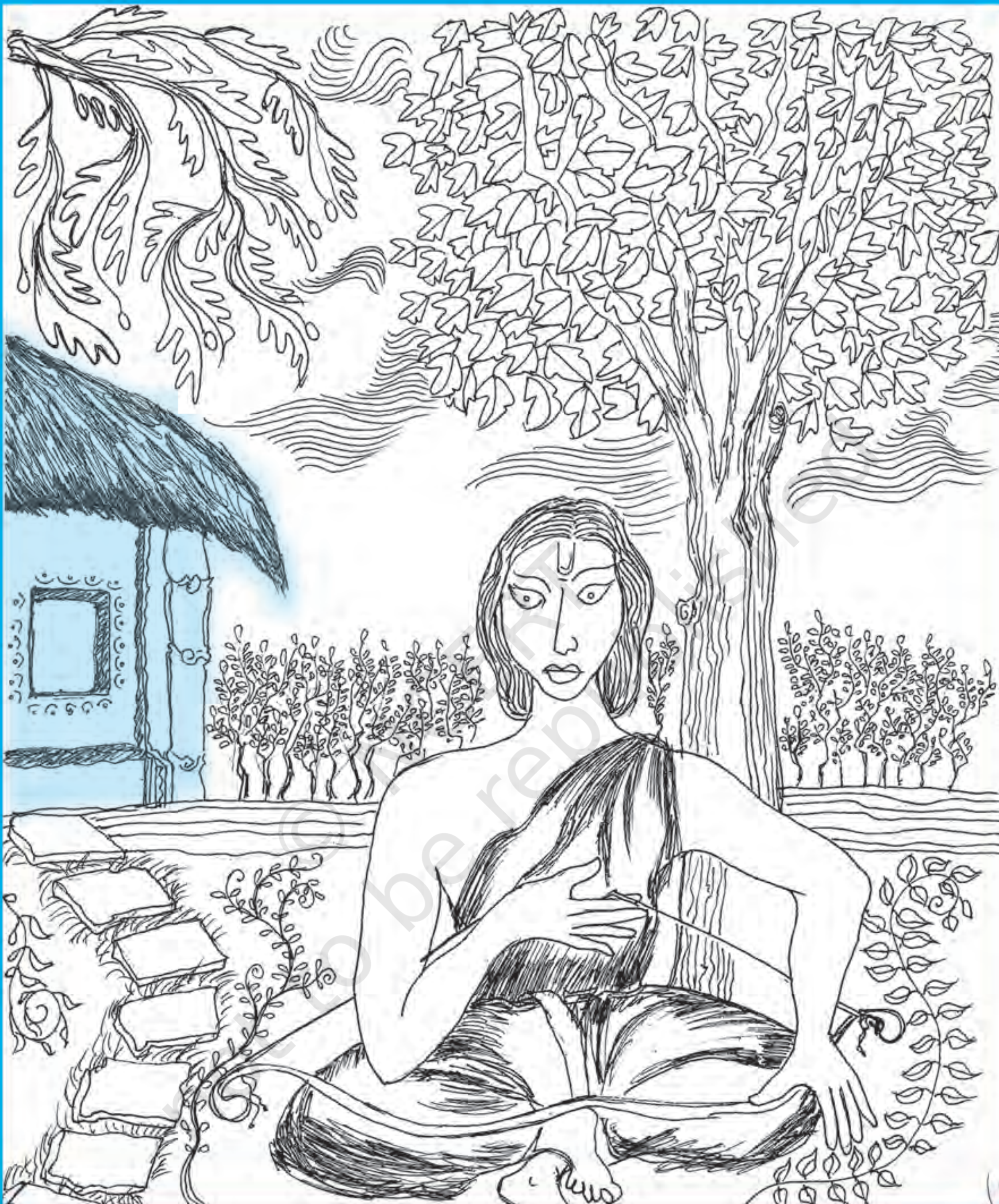

राम, लक्ष्मण और सीता दंडकारण्य में दस वर्ष रहे। स्थान और आश्रम बदलते हुए। वे क्षरभंग मुनि के आश्रम पहुँचे। आश्रम में बहुत कम तपस्वी बचे थे। सभी निराश थे। उन्होंने राम को हड्डियों का ढेर दिखाकर कहा, "राजकुमार! ये ऋषियों के कंकाल हैं, जिन्हें राक्षसों ने मार डाला है। अब यहाँ रहना असंभव है।"

सुतीक्ष्ण मुनि ने भी राम को राक्षसों के अत्याचार की कहानी सुनाई। मुनि ने ही राम को अगस्त्य ऋषि से भेंट करने की सलाह दी। विंध्याचल पार करने वाले वह पहले ऋषि थे। मुनि ने राम को गोदावरी नदी के तट पर जाने को कहा। उस स्थान का नाम पंचवटी था। वनवास का शेष समय दोनों राजकुमारों और सीता ने वहीं बिताया।

पंचवटी के मार्ग में राम को एक विशालकाय गिद्ध मिला। जटायु। सीता उसका स्वरूप देखकर डर गईं। लक्ष्मण ने उसे मायावी राक्षस समझा। वे धनुष उठा ही रहे थे कि जटायु ने कहा, "हे राजन! मुझसे डरो मत। मैं तुम्हारे पिता का मित्र हूँ। वन में तुम्हारी सहायता करूँगा। आप दोनों बाहर जाएँगे तो सीता की रक्षा करूँगा।" राम ने जटायु को धन्यवाद दिया। उन्हें प्रणाम करके आगे बढ़ गए।

पंचवटी में लक्ष्मण ने बहुत सुंदर कुटिया बनाई। मिट्टी की दीवारें खड़ी कीं। बाँस के खंभे लगाए। कुश और पत्तों से छप्पर डाला। कुटिया ने उस मनोरम पंचवटी को और सुंदर बना दिया। कुटी के आसपास पुष्पलताएँ थीं। हिरण घूमते थे। मोर नाचते थे।

इस बीच राम राक्षसों का निरंतर संहार करते रहे। वे जब भी आश्रमों पर आक्रमण करते, राम-लक्ष्मण उन्हें मार देते। उन्होंने सीता को पकड़ लेने वाले राक्षस विराध को मारा। वन से राक्षसों का अस्तित्व लगभग मिटा दिया। तपस्वी शांति से तप करने लगे।

एक दिन राम, लक्ष्मण और सीता कुटी के बाहर बैठे हुए थे। लता-कुंजों को निहारते। उनके सौंदर्य पर मुग्ध होते। तभी लंका के राजा रावण की बहन शूर्पणखा वहाँ आई। राम को देखकर वह उन पर मोहित हो गई। उसने स्वयं को पानी में देखा। विकृत चेहरा। मुँह पर झुर्रियाँ। वह बूढ़ी थी पर राम के मोह में आसक्त। उन्हें पाना चाहती थी। उसने माया से सुंदर स्त्री का रूप बना लिया।

शूर्पणखा राम के पास गई। उनसे बोली, "हे रूपराज! मैं तुम्हें नहीं जानती। पर तुमसे विवाह करना चाहती हूँ। तुम मेरी

© NCERT not to be republished

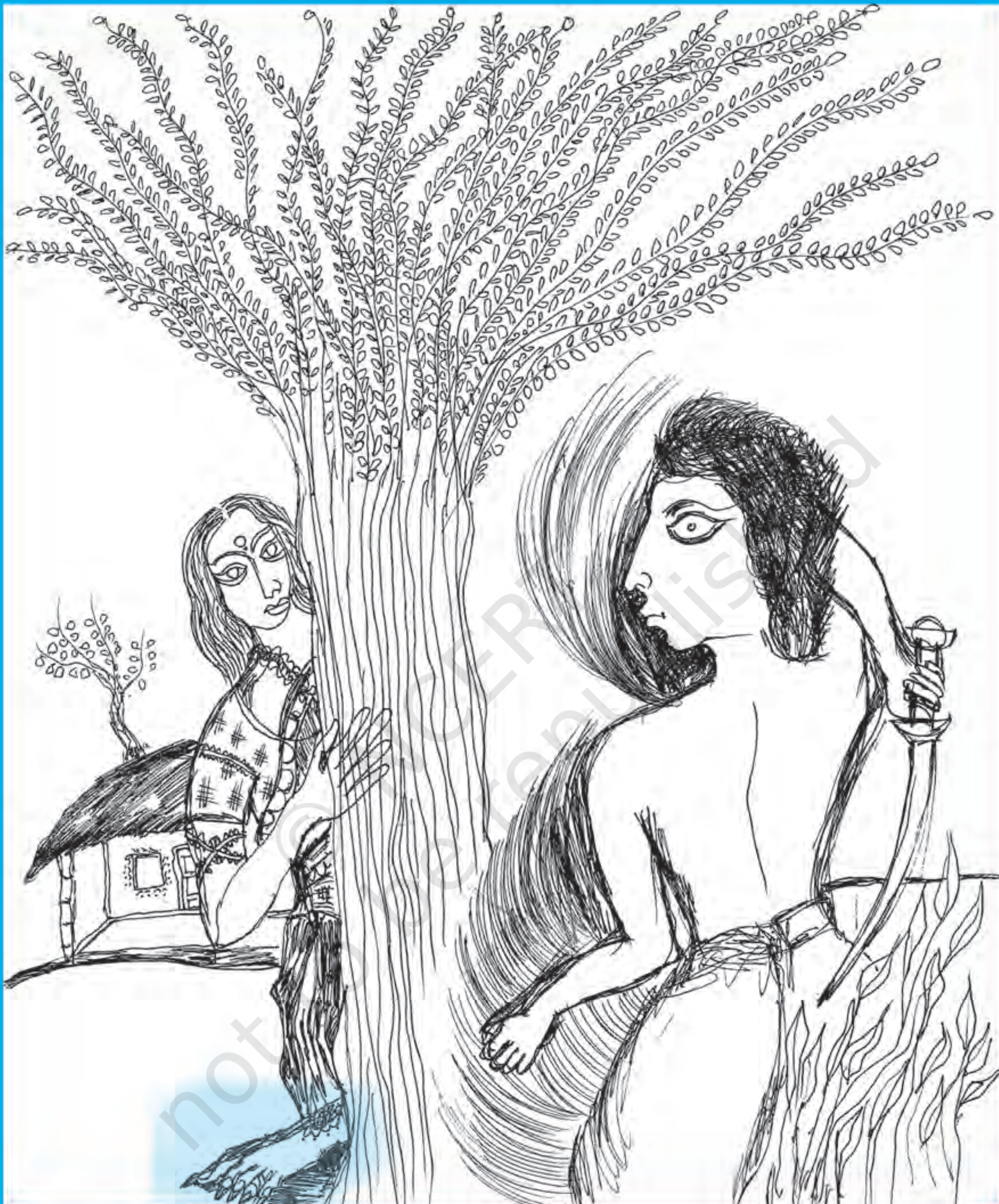

इच्छा पूरी करो। मुझे अपनी पत्नी स्वीकार करो।"

राम ने मुसकराकर लक्ष्मण की ओर देखा। अपना परिचय दिया। सीता की ओर संकेत करते हुए कहा, "ये मेरी पत्नी हैं। मेरा विवाह हो चुका है।" राम शूर्पणखा को पहचान गए थे। फिर भी उन्होंने उसका परिचय पूछा। शूर्पणखा ने झूठ नहीं बोला। सच-सच बताया कि वह रावण और कुंभकर्ण की बहन है और अविवाहित है।

राम के मना करने के बाद वह लक्ष्मण के पास गई। लक्ष्मण ने कहा, "मेरे पास आने से तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा, देवी! मैं तो राम का दास हूँ। मुझसे विवाह करके तुम दासी बन जाओगी।" लक्ष्मण ने शूर्पणखा को पुनः राम के पास भेज दिया। दोनों भाइयों के लिए यह खेल हो गया। शूर्पणखा उनके बीच भागती रही।

क्रोध में आकर उसने सीता पर झपट्टा मारा। सोचा कि राम इसी के कारण विवाह नहीं कर रहे हैं। लक्ष्मण तत्काल उठ खड़े हुए। तलवार खींची और उसके नाक-कान काट लिए। खून से लथपथ शूर्पणखा वहाँ से रोती-बिलखती भागी। अपने भाई खर और दूषण के पास। वे उसके सौतेले भाई थे। उसी वन में रहते थे।

शूर्पणखा की दशा देखकर खर-दूषण के क्रोध की सीमा न रही। उन्होंने तत्काल चौदह राक्षस भेजे। शूर्पणखा उनके साथ गई। राम जानते थे कि राक्षस बदला लेने अवश्य आएँगे। वे तैयार थे। सीता को उन्होंने सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। लक्ष्मण के साथ।

राक्षस राम के सामने नहीं टिक सके। देखते ही देखते उन्होंने सबको ढेर कर दिया। शूर्पणखा ने एक पेड़ के पीछे से यह दृश्य देखा। राम के पराक्रम से वह चकित थी। उसका मोह और बढ़ गया। साथ ही क्रोध भी बढ़ा। वह फुफकारती हुई खर-दूषण के पास लौटी।

इस बार खर-दूषण राक्षसों की पूरी सेना के साथ चले। खर ने देखा कि आसमान काला पड़ गया। घोड़े स्वयं धरती पर गिरकर मर गए। आकाश में गिद्ध मँडराने लगे। ये अमंगल के संकेत थे। पर वह रुका नहीं। आगे बढ़ता गया। घमासान युद्ध हुआ। अंत में विजय राम की हुई। खर-दूषण सहित उनकी सेना धराशायी हो गई। कुछ पिछलग्गू राक्षस बचे। वे जान बचाकर वहाँ से भाग निकले।

भागने वालों में एक राक्षस का नाम अकंपन था। वह सीधे रावण के पास गया। लंकाधिपति को उसने पूरा विवरण

© NCERT not to be republished

बताया। अकंपन ने कहा, "राम कुशल योद्धा हैं। उनके पास विलक्षण शक्तियाँ हैं। उन्हें कोई नहीं मार सकता। इसका एक ही उपाय है। सीता का अपहरण। इससे उनके प्राण स्वयं ही निकल जाएँगे।"

रावण सीता-हरण के लिए तैयार हो गया। वह महल से चला। रास्ते में उसकी भेंट मारीच से हुई। ताड़का के पुत्र से। ताड़का का वध राम ने पहले ही कर दिया था। मारीच क्रोधित था। पर राम की शक्ति से परिचित था। उसने रावण को सीता-हरण के लिए मना किया। समझाया। कहा, "ऐसा करना विनाश को आमंत्रण देना है।" रावण ने मारीच की बात मान ली। चुपचाप लंका लौट गया।

थोड़ी ही देर में शूर्पणखा लंका पहुँची। विलाप करती हुई। चीखती-चिल्लाती। रावण को पूरी घटना की जानकारी थी लेकिन उसने शूर्पणखा को सुना। वह रावण को धिक्कार रही थी। फटकार रही थी। उसके पौरुष को ललकारते हुए शूर्पणखा ने कहा, "तेरे महाबली होने का क्या लाभ? तेरे रहते मेरी यह दुर्गति? तेरा बल किस दिन के लिए है? तू किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रह गया है।"

शूर्पणखा ने राम-लक्ष्मण के बल की प्रशंसा की। सीता को अतीव सुंदरी बताया। कहा कि उसे लंका के राजमहल में होना चाहिए। शूर्पणखा बोली, "मैं सीता को तुम्हारे लिए लाना चाहती थी। मैंने उन्हें बताया कि मैं रावण की बहन हूँ। क्रोध में लक्ष्मण ने मेरे नाक-कान काट लिए।"

रावण फिर मारीच के पास गया। खर-दूषण की मृत्यु से वह कुछ घबराया हुआ था। रावण ने मारीच से मदद माँगी। मारीच चाहता था कि रावण सीता-हरण का विचार छोड़ दे। इस बार रावण ने उसकी नहीं सुनी। उसे डाँटा और आज्ञा दी, "मेरी मदद करो।"

मारीच जानता था कि दोबारा राम के सामने पड़ने पर वह मारा जाएगा। राम उसे नहीं छोड़ेंगे। रावण मारीच के मन की बात भाँप गया। उसने क्रोध में भरकर कहा, "वहाँ जाने पर हो सकता है राम तुम्हें मार दें। लेकिन न जाने पर मेरे हाथों तुम्हारी मृत्यु निश्चित है।" विवश होकर मारीच को रावण का आदेश मानना पड़ा।

रथ पर बैठकर रावण और मारीच पंचवटी पहुँचे। कुटी के निकट आकर मायावी मारीच ने सोने के हिरण का रूप धारण कर लिया। कुटी के आसपास घूमने लगा। रावण एक पेड़ के पीछे छिपा था। उसने तपस्वी का वेश धारण कर लिया था।

© NCERT not to be republished

सीता उस हिरण पर मुग्ध हो गईं। उन्होंने राम से उसे पकड़ने को कहा। राम को हिरण पर संदेह था। वन में सोने का हिरण? लक्ष्मण बड़े भाई की बात से सहमत थे। पर सीता के आग्रह के आगे उनकी एक न चली। सीता की प्रसन्नता के लिए राम हिरण के पीछे चले गए। उन्होंने सोचा, "वन में इतने समय के प्रवास के दौरान सीता ने कभी कुछ नहीं माँगा। उनकी यह इच्छा अवश्य पूरी करनी चाहिए।"

कुटी से निकलते समय राम ने लक्ष्मण को बुलाया। सीता की रक्षा करने का आदेश दिया। कहा, "मेरे लौटने तक तुम उन्हें अकेला मत छोड़ना।" लक्ष्मण ने सिर झुकाकर उनकी आज्ञा स्वीकार कर ली। सीता कुटी में थीं। लक्ष्मण धनुष लेकर बाहर खड़े हो गए।

© NCERT not to be republished

सोने का हिरण

0645CH07

राम को कुटी से निकलते देखकर मायावी हिरण कुलाचें भरने लगा। राम को बहुत छकाया। झाड़ियों में लुकता-छिपता-भागता वह राम को कुटी से बहुत दूर ले गया। राम जब भी उसे पकड़ने का प्रयास करते, वह भागकर और दूर चला जाता। हिरण चालाक था। वह इतनी दूर कभी नहीं जाता था कि पहुँच से बाहर लगे।

राम के सारे प्रयास विफल हुए। वे हिरण को पकड़ नहीं पाए। उन्होंने उसे जीवित पकड़ने का विचार त्याग दिया। धनुष उठाया। निशाना साधा। और एक बाण उस पर छोड़ दिया। बाण लगते ही हिरण गिर पड़ा। धरती पर गिरते ही मारीच अपने असली रूप में आ गया।

मारीच ने माया से केवल अपना रूप नहीं बदला था। आवाज़ भी बदल ली थी। अपनी आवाज़ राम जैसी बना ली थी। धरती पर पड़े हुए वह ज़ोर से चिल्लाया, "हा सीते! हा लक्ष्मण!" ध्वनि ऐसी थी जैसे बाण राम को लगा हो। वह सहायता के लिए पुकार रहे हों। बाण का प्रहार गहरा था। मारीच उसे अधिक देर तक सहन नहीं कर पाया। वह छटपटाता रहा। जल्दी ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए।

रावण एक विशाल वृक्ष के पीछे खड़ा था। वह प्रसन्न था। उसकी चाल सफल हो गई थी। मारीच ने अपनी भूमिका अच्छी तरह निभाई थी। अब तक सब कुछ वैसा ही हुआ, जैसा उसने सोचा था। उसे राक्षस अकंपन की बात याद आई। सीता का हरण हो तो राम के प्राण निकल जाएँगे। वह निशक्त हो जाएँगे। वह अगले चरण की तैयारी में जुट गया।

मारीच की पुकार राम ने सुनी। वह पास ही थे। उन्हें समझने में देर नहीं लगी कि पुकार की मंशा क्या है! मायावी मारीच की पूरी चाल उनके सामने खुल गई। हिरण जानबूझकर भागता रहा। उन्हें कुटिया से दूर ले जाने के लिए। वह षड्यंत्र का अगला चरण विफल करना चाहते थे। उनकी चाल में तेज़ी आ गई ताकि जल्दी कुटिया पहुँच सकें।

© NCERT not to be republished

वह मायावी पुकार सीता और लक्ष्मण ने भी सुनी। लक्ष्मण उसका रहस्य तत्काल समझ गए। राम की तरह। उन्होंने बाण चढ़ाकर धनुष दृढ़ता से पकड़ लिया। चौकसी बढ़ा दी। वे राक्षसों की अगली चाल का सामना करने के लिए तैयार थे। साथ ही राम का आदेश उन्हें याद था। उनके लौटने तक सीता की रक्षा। लक्ष्मण की ओर से इसमें चूक की कोई संभावना ही नहीं थी।

सीता वह आवाज़ सुनकर विचलित हो गईं। घबरा गईं। दौड़कर कुटिया के द्वार पर आईं। उन्होंने लक्ष्मण से कहा, "तुम जल्दी जाओ। जिस दिशा से आवाज़ आई है, उसी ओर। तुम्हारे भाई किसी कठिन संकट में फँस गए हैं। उन्होंने सहायता के लिए पुकारा है। उनकी ऐसी कातर आवाज़ मैंने कभी नहीं सुनी। जाओ लक्ष्मण। जल्दी।"

"आप चिंता न करें, माते!" लक्ष्मण ने सीता को आश्वस्त करते हुए कहा। "राम संकट में नहीं हैं। हो ही नहीं सकते। उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हमने जो आवाज़ सुनी, वह बनावटी है। मायावी राक्षसों की चाल है। मुझे कुटिया से दूर ले जाने के लिए। आप निश्चिंत रहें। भाई राम जल्दी ही आते होंगे।"

सीता क्रोध से उबल पड़ीं। लक्ष्मण का इस घड़ी में इतना शांत होना उन्हें समझ में नहीं आया। राम की आवाज़ सुनकर भी वे यहीं खड़े रहे। सहायता के लिए नहीं गए। सीता को इसके पीछे षड्‌यंत्र दिखाई दिया। लक्ष्मण की चाल। लगा कि लक्ष्मण राम का भला नहीं चाहते। उनके हितैषी नहीं हैं। चाहते हैं कि राम न रहें। मारे जाएँ। ताकि राजपाट उन दोनों का हो जाए। उनके रास्ते का काँटा निकल जाए।

"तुम्हारा मन पवित्र नहीं है। कलुषित है। पाप है उसमें। मैं समझ सकती हूँ कि तुम अपने भाई की सहायता के लिए क्यों नहीं जा रहे हो!" सीता ने यहाँ तक कह दिया कि कहीं वे भरत के गुप्तचर तो नहीं हैं!

सीता की बातों से लक्ष्मण को गहरा आघात पहुँचा। उनका हृदय छलनी हो गया। पर उन्होंने पलटकर उत्तर नहीं दिया। संयम बनाए रखा। सिर झुकाकर सब चुपचाप सुन लिया। वे सीता की पीड़ा समझ पा रहे थे। केवल इतना बोले, "हे देवी! यह राक्षसों का छल है। खर-दूषण के मारे जाने के बाद वे बौखला गए हैं। किसी तरह हमसे बदला लेना चाहते हैं। आप उनकी चाल में न आएँ। वे कुछ भी कर सकते हैं। मुझ पर विश्वास करें। राम को कुछ नहीं होगा।"

© NCERT not to be republished

सीता का क्रोध और बढ़ गया। क्रोध में आँखों से आँसू बहने लगे। यह भी लग रहा था कि कहीं लक्ष्मण की बात सही न हो। यह डर था कि राम से बिछोह न हो। उन्होंने कहा, "राम से बिछुड़कर मैं नहीं रह सकती। मैं जान दे दूँगी। हे लक्ष्मण! तुम उन्हें लेकर आओ।"

लक्ष्मण राम के लिए राम की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे थे। उन्होंने सीता को प्रणाम किया और राम की खोज में निकल पड़े।

लक्ष्मण के जाते ही रावण आ पहुँचा। तपस्वियों जैसा जटा-जूट। वैसे ही वस्त्र। सीता ने साधु समझकर उसका स्वागत किया। रावण ने सीता के स्वरूप, संस्कार और साहस की प्रशंसा की। उसने सीता का परिचय प्राप्त करने के बाद कहा, "सुमुखी! मैं रावण हूँ। राक्षसों का राजा। लंकाधिपति। मेरा नाम लेने पर लोग थरथरा उठते हैं। लेकिन तुम सुंदरी हो। सबसे अलग हो। तुम्हारे लिए मैं स्वयं चलकर आया हूँ। मेरे साथ चलो। सोने की लंका में रहो। मेरी रानी बनकर।"

सीता क्रोधित हो उठीं। कहा, "मैं प्राण त्याग दूँगी लेकिन तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी। मैं राम की पत्नी हूँ। वे महाबलशाली हैं। तुम्हें उनकी शक्ति का अनुमान नहीं है। तुम चले जाओ नहीं तो तुम्हारा सर्वनाश हो जाएगा।"

रावण ने सीता की बात अनसुनी कर दी। खींचकर उन्हें रथ में बैठा लिया। सीता प्रयास करती रहीं। पर रावण के चंगुल से मुक्त नहीं हो सकीं। स्वयं को असहाय पाकर वे विलाप करने लगीं। "हा राम! हा लक्ष्मण!" पुकारती रहीं। रावण का रथ लंका की ओर उड़ चला।

मार्ग में वे पशुओं, पक्षियों, पर्वतों, नदियों से कहती जा रही थीं कि कोई उनके राम को बता दे। रावण ने उनका हरण कर लिया है। गिद्धराज जटायु ने सीता का विलाप सुना। उसने ऊँची उड़ान भरी। रावण के रथ पर हमला कर दिया। वृद्ध गिद्धराज ने रथ क्षत-विक्षत कर दिया। रावण को घायल कर डाला। क्रोध में रावण ने जटायु के पंख काट दिए। जटायु अब उड़ नहीं सकता था। वह सीधे धरती पर आ गिरा।

रावण का रथ टूट गया था। उड़ान नहीं भर सकता था। उसने तत्काल सीता को अपनी बाँहों में दबाया और दक्षिण दिशा की ओर उड़ने लगा। सीता को लगा कि अब संभवतः कोई उनकी सहायता नहीं कर पाएगा। उनका बचाव केवल एक ही था। राम को किसी तरह

© NCERT not to be republished

समाचार मिल जाए। उन्होंने अपने आभूषण उतारकर फेंकना प्रारंभ कर दिया। आभूषण वानरों ने उठा लिए। उन्हें आशा थी कि वानरों के पास ये आभूषण देखकर राम समझ जाएँगे। उन्हें पता चल जाएगा कि सीता किस मार्ग से गई हैं। रावण ने सीता को आभूषण फेंकने से नहीं रोका। उसे लगा कि सीता शोक में ऐसा कर रही हैं।

कुछ ही समय में रावण लंका पहुँच गया। वह अपने धन-वैभव से सीता को प्रभावित करना चाहता था। उन्हें लेकर वह सीधा अपने अंतःपुर में गया। राक्षसियों को सीता की निगरानी करते रहने को कहा। और बाहर निकल गया। थोड़ी देर में वह फिर लौटा। सीता को घूरते हुए उसने कहा, "सुंदरी! मैं तुम्हें एक वर्ष का समय देता हूँ। निर्णय तुम्हें करना है। मेरी रानी बनकर लंका में राज करोगी या विलाप करते हुए जीवन बिताओगी।"

सीता बार-बार रावण को धिक्कारती रहीं। राम का गुणगान करती रहीं। रावण को क्रोध आ गया, "तुम्हारा राम यहाँ कभी नहीं पहुँच सकता। तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। तुम्हारी रक्षा केवल मैं कर सकता हूँ। मुझे स्वीकार करो और लंका में सुख से रहो।"

"पापी रावण! राम तुझे अपनी दृष्टि से जलाकर राख कर सकते हैं। उनकी शक्ति देवता भी स्वीकार करते हैं। मैं उस राम की पत्नी हूँ, जिसके तेज और पराक्रम के आगे कोई नहीं ठहर सकता। तेरा सारा वैभव मेरे लिए अर्थहीन है। तूने पाप किया है। राम के हाथों तेरा अंत निश्चित है।"

राम की इतनी प्रशंसा सुनकर रावण कुछ चिंतित हो गया। उसने सोचा, खर-दूषण को मारने वाला अवश्य शक्तिशाली होगा। उसने तत्काल अपने आठ सबसे बलिष्ठ राक्षसों को बुलाया कहा, "तुम लोग पंचवटी जाओ। राम और लक्ष्मण वहीं रहते हैं। उनका एक-एक समाचार मुझे मिलना चाहिए। दोनों पर निगरानी रखो। मौका मिलते ही उन्हें मार डालो।"

उधर, सीता को पाने के लिए रावण ने अपनी योजना बदली। उन्हें अंतःपुर से निकालकर अशोक वाटिका में बंदी बना दिया गया। पहरा कड़ा कर दिया गया। राक्षसों-राक्षसियों को स्पष्ट निर्देश थे, "सीता को किसी तरह का शारीरिक कष्ट न हो। इसके मन को दुःख पहुँचाओ। अपमानित करो। लेकिन सीता को कोई हाथ न लगाए।"

© NCERT not to be republished

रावण ने सब कुछ किया पर सीता का मन नहीं बदला। वे बार-बार राम का नाम लेती थीं। शेरों के बीच हिरणी की तरह बैठी रहती थीं। डरी-सहमी। रो-रोकर दिन काट रही थीं। सोने के हिरण ने उन्हें सोने की लंका में पहुँचा दिया था। यहाँ से उन्हें राम ही बचा सकते थे।

© NCERT not to be republished

सीता की खोज

0645CH08

राम के मन में कई प्रकार के प्रश्न थे। आशंकाएँ थीं। मारीच की माया उन्होंने देख ली थी। वह छल से उन्हें कुटिया से दूर ले आया था। "अब क्या होगा?" यही सोचते हुए वे कुटिया की ओर भागे चले जा रहे थे। वापसी में एक पल भी विलंब नहीं करना चाहते थे। लक्ष्मण को वे कुटी पर छोड़ आए थे। सीता की रखवाली के लिए। "अच्छा हो कि लक्ष्मण वहीं हों। मारीच की मायावी आवाज़ उन तक न पहुँची हो," राम ने सोचा। "सीता अकेली रहीं तो राक्षस उन्हें मार डालेंगे। खा जाएँगे।"

तभी उन्होंने पगडंडी से लक्ष्मण को आते देखा। वही हुआ, जिसका राम को डर था। अनिष्ट की आशंका और बढ़ गई। पता नहीं सीता किस हाल में होंगी? राक्षसों ने उन्हें मार डाला होगा? उठा ले गए होंगे? अकेली सीता दुष्ट राक्षसों के सामने क्या कर पाई होंगी? कुटी छोड़कर आने पर वह लक्ष्मण से क्रुद्ध थे। उन्होंने क्रोध पर नियंत्रण रखा। लक्ष्मण का बायाँ हाथ ज़ोर से पकड़ लिया। डर ने दोनों भाइयों को घेर लिया था।

"देवी सीता ने मुझे विवश कर दिया, भ्राते! उनके कटु वचन मैं सहन नहीं कर सका। कटाक्ष और उलाहना नहीं सुन सका। मैं जानता था कि आप सकुशल होंगे। आपकी सुरक्षा को लेकर मन में कोई संदेह नहीं था। तब भी मुझे कुटिया छोड़कर आना पड़ा," लक्ष्मण ने कहा।

"यह तुमने अच्छा नहीं किया। तुम्हें मेरी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए था। अब जल्दी चलो। मेरा मन चिंतित है। सीता न जाने किस हाल में होंगी। कैसी होंगी। मायावी राक्षसों का कोई ठिकाना नहीं।" राम ने चलने की गति और बढ़ा दी।

कुटिया अभी कुछ दूर थी। पर दिखाई पड़ने लगी थी। राम ने वहीं से पुकारा, "सीते! तुम कहाँ हो?" जैसे कि उन्हें पता चल गया हो कि सीता आश्रम में नहीं हैं। कुटिया मौन रही। वहाँ से कोई उत्तर नहीं मिला। राम की बेचैनी बढ़ गई। उनकी

© NCERT not to be republished

एक आवाज़ पर कहीं से भी उपस्थित हो जाने वाली सीता वहाँ नहीं थीं। अनुपस्थिति बोलती कैसे?

राम की आवाज़ पेड़ों से टकराकर हवा में विलीन हो गई। कुटिया के शून्य में समा गई। राम पुकारते रहे। उत्तर में उन्हें हर बार सन्नाटा ही मिला। चुप्पी हर ओर थी। हर दिन हवा में झूलने वाले पत्ते शांत थे। लताएँ गुमसुम पड़ी हुई थीं। चिड़ियों की चहक लुप्त थी। कुटिया के निकट घूमने वाले पशु-पक्षी चुप खड़े थे। सब स्तब्ध!

राम भागते हुए आश्रम पहुँचे। कुटिया में जाकर देखा। "सीते! सीते!" पुकारते हुए उन्होंने आसपास की हर जगह देखी। पेड़ों-झाड़ियों के पीछे गए। उन स्थानों की ओर भागे, जहाँ सीता जा सकती थीं। सीता का कहीं पता न था। शोक से व्याकुल राम रोने लगे। सीता से बिछुड़ना उनके लिए असहनीय आघात था। वे सुध-बुध भुला बैठे।

विरह में वे गोदावरी नदी के पास गए। उससे पूछा, "तुमने सीता को कहीं देखा है?" नदी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे पंचवटी के एक-एक वृक्ष के पास गए। सबसे पूछा। कोई सीता का पता बता दे। हाथी के पास गए। शेर से पूछा। फूलों के पास रुके। चट्टानों, पत्थरों से प्रश्न किया। शोक संतप्त राम भूल गए कि चट्टानें नहीं बोलतीं। पेड़-पौधे बात नहीं करते। उनकी भाषा मौन है। उनके उत्तर भी मौन ही हैं।

राम की मानसिक स्थिति विक्षिप्त जैसी थी। एक बार उन्हें लगा कि सीता वहीं हैं। कुटिया के पास। अभी भागकर पेड़ के पीछे छिप गई हैं। उन्हें खिझाने के लिए।

"मेरे साथ परिहास मत करो, सीते!" राम उस पेड़ की ओर दौड़ पड़े। वहाँ कोई नहीं था। वे निराश होकर पेड़ के नीचे बैठ गए।

राम का दुख लक्ष्मण से देखा नहीं जा रहा था। उनका व्यवहार सहन नहीं हो रहा था। वे राम के निकट गए। विलाप करते राम ने कहा, "मैं सीता के बिना नहीं रह सकता। तुम अयोध्या लौट जाओ, लक्ष्मण। मैं वहाँ नहीं जाऊँगा। यहीं प्राण दे दूँगा। मैं सीता के साथ आया था। उसके बिना कैसे लौटूँगा? नगरवासियों को क्या मुँह दिखाऊँगा? तुम जाओ। मुझे यहीं छोड़ दो।"

"आप आदर्श पुरुष हैं। आपको धैर्य रखना चाहिए। इस तरह दुःख से कातर नहीं होना चाहिए। हम मिलकर सीता की खोज करेंगे। वे जहाँ भी होंगी, हम उन्हें ढूँढ़ निकालेंगे। सीता हमारी प्रतीक्षा कर

© NCERT not to be republished

रही होंगी।" लक्ष्मण ने उन्हें ढाढ़स बँधाते हुए कहा।

राम शांत हुए। पर थोड़ी ही देर में "हा प्रिये!" कहते हुए पुनः विलाप करने लगे।

इसी बीच आश्रम के आसपास भटकने वाला हिरणों का एक झुंड राम-लक्ष्मण के निकट आ गया। राम को लगा कि हिरण सीता के बारे में जानते हैं। उन्हें कुछ बताना चाहते हैं। "हे मृग! तुम्हीं बताओ सीता कहाँ हैं?" राम ने पूछा। हिरणों ने सिर उठाकर आसमान की ओर देखा और दक्षिण दिशा की ओर भाग गए। राम ने संकेत समझ लिया "हमें सीता की खोज दक्षिण दिशा में ही करनी चाहिए," उन्होंने लक्ष्मण से कहा। "हिरण उसी ओर गए हैं।"

वन में भटकते हुए उन्होंने एक टूटे हुए रथ के टुकड़े देखे। मरा हुआ सारथी और मृत घोड़े भी थे। "वन में रथ का क्या प्रयोजन? उसके टूटने का क्या अर्थ?" राम असमंजस में पड़ गए।

"लगता है थोड़ी देर पहले यहाँ संघर्ष हुआ है," लक्ष्मण ने कहा। "यह पुष्पमाला वही है, जिसे सीता ने वेणी में गूँथ रखा था। निश्चित तौर पर सीता राक्षसों के चंगुल में फँस गई हैं। यह माला संघर्ष के दौरान वेणी से टूटकर गिरी होगी।"

"पर यह रथ कैसे टूटा?" राम सोचने लगे। "सीता के संघर्ष से यह नहीं टूट सकता। अवश्य किसी ने राक्षसों को चुनौती दी होगी। उनसे युद्ध किया होगा।"

वहाँ से थोड़ी ही दूर राम ने पक्षिराज जटायु को देखा। पंख कटे हुए। लहूलुहान। अंतिम साँसें गिनते हुए। "हे राजकुमार! सीता को रावण उठा ले गया है। मेरे पंख उसी ने काटे। सीता का विलाप सुनकर मैंने रावण को चुनौती दी। उसका रथ तोड़ दिया। सारथी और घोड़ों को मार डाला। स्वयं रावण को घायल कर दिया। पर मैं सीता को नहीं बचा सका। रावण उन्हें लेकर दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर उड़ गया," कहते-कहते जटायु ने प्राण त्याग दिए।

राम ने आगे बढ़ने से पहले जटायु की अंतिम क्रिया की। वे सोचते रहे। पछताते रहे। "यह कैसा विधान है! मैं तो कष्ट में हूँ ही। मेरी सहायता करने वालों को भी इतना कष्ट!" राम की आँखें नम हो आईं। उन्होंने जटायु को अंतिम बार प्रणाम किया।

जटायु ने सीता के बारे में महत्त्वपूर्ण सूचना दी थी। रावण का नाम बताया। दिशा बताई, जिधर सीता को लेकर वह गया। राम जटायु की चिता के पास मौन खड़े थे। "यह समय विलाप करने का

© NCERT not to be republished

नहीं है। हमें तुरंत दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर जाना चाहिए। सीता उधर ही होंगी," लक्ष्मण ने तत्परता दिखाई।

आगे का मार्ग और कठिन था। राम और लक्ष्मण को लगभग हर दिन राक्षसी आक्रमणों से जूझना पड़ा। अनेक कठिनाइयाँ आईं। अवरोध मिले। दोनों राजकुमार प्रत्येक बाधा पार करते चले गए। उनके सामने लक्ष्य स्पष्ट था। दिशा तय थी। उन्हें कोई नहीं रोक सकता था। वन-मार्ग जितना कठिन होता गया, उनकी दृढ़ता बढ़ती गई।

वनवासी राजकुमार प्रतिदिन सुबह उठते और दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ते। एक दिन यात्रा के प्रारंभ में ही एक विशालकाय राक्षस ने उन पर आक्रमण कर दिया। उसका नाम कबंध था। कबंध देखने में बहुत डरावना था। मोटे माँसपिंड जैसा। गर्दन नहीं थी। एक आँख थी। दाँत बाहर निकले हुए। जीभ साँप की तरह। लंबी और लपलपाती हुई।

राम-लक्ष्मण को देखते ही कबंध प्रसन्न हो गया। उसने दोनों हाथ फैलाए। एक-एक हाथ से दोनों भाइयों को पकड़कर हवा में उठा दिया। उसे मनमाँगा आहार मिल गया था। बैठे-बिठाए। वह अपने शिकार को भुजाओं में लपेटकर मुँह तक ले जाता इससे पहले ही राम-लक्ष्मण ने अपनी तलवारें निकाल लीं। एक झटके में कबंध के हाथ काट दिए। उसके हाथ धरती पर गिर पड़े।

कबंध उनकी शक्ति और बुद्धि पर आश्चर्यचकित रह गया। "कौन हो तुम दोनों?" उसने पूछा। हम अयोध्या के महाराज दशरथ के पुत्र हैं। राम और लक्ष्मण। रावण ने राम की पत्नी सीता का हरण कर लिया है। हम उन्हीं की खोज में निकले हैं।

राक्षस कबंध ने राम के बारे में सुन रखा था। साक्षात् उन्हें देखकर प्रसन्न हो गया। उसने कहा, "मैं सीता के संबंध में कुछ नहीं जानता। लेकिन तुम दोनों की सहायता का उपाय बता सकता हूँ। मेरा एक छोटा-सा आग्रह स्वीकार करो तो। मेरा अंतिम संस्कार राम करें।"

राम ने इस पर सहमति व्यक्त की तो कबंध बोला, "आप दोनों पंपा सरोवर के निकट ऋष्यमूक पर्वत पर जाएँ। वह वानरराज सुग्रीव का क्षेत्र है। वे निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सुग्रीव से मदद का आग्रह कीजिए। उनके पास बहुत बड़ी वानर सेना है। सुग्रीव के वानर सीता को अवश्य खोज निकालेंगे।"

कबंध की साँस टूटने लगी थी। उसका अंत निकट था। राम और लक्ष्मण को

© NCERT not to be republished

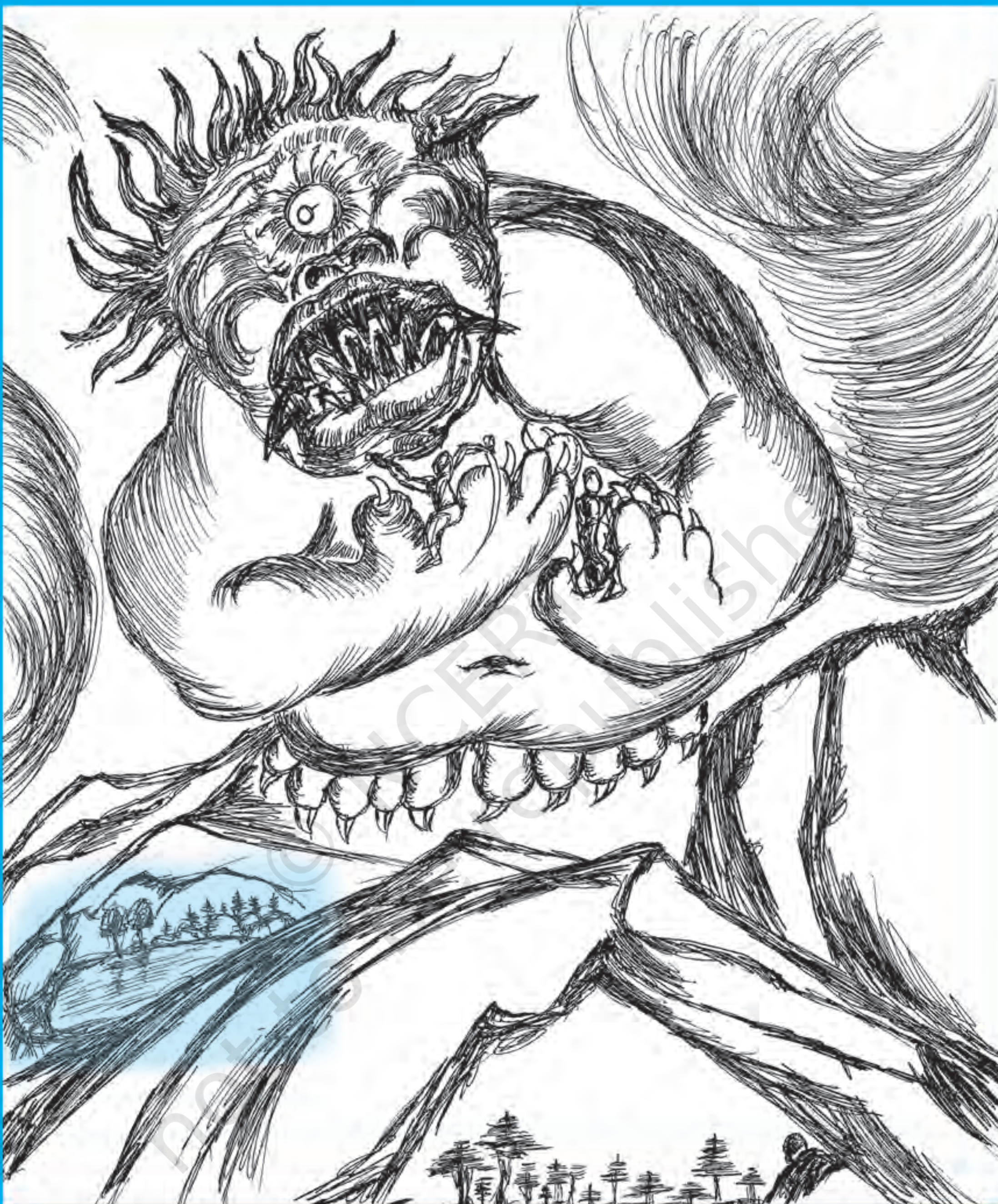

not to be republished © NCERT

अपने निकट बुलाते हुए उसने कहा, "पंपा सरोवर के पास मतंग ऋषि का आश्रम है। वहीं उनकी शिष्या शबरी रहती है। आगे जाने से पूर्व शबरी से अवश्य मिल लें।" यही बोलते-बोलते कबंध ने प्राण त्याग दिए। राम ने अपना वचन पूरा करते हुए उसका अंतिम संस्कार किया और पंपासर की ओर चल पड़े।

कबंध की बातों से राम को बहुत ढाढ़स हुआ। सीता तक पहुँचने की आशा बलवती हुई। राम को सुग्रीव की क्षमता और उनकी वानर सेना की शक्ति का पता था। वे जल्दी सुग्रीव तक पहुँचना चाहते थे।

ऋष्यमूक पर्वत का रास्ता पंपा सरोवर होकर जाता था। पंपासर का प्राकृतिक सौंदर्य अद्‌भुत था। मतंग ऋषि का आश्रम उसी सरोवर के किनारे था। लता-कुंज से घिरा हुआ। सरोवर का पानी मीठा था। शबरी की कुटिया आश्रम में ही थी। वह ऋषि की शिष्या थी। उसकी आयु बहुत हो गई थी। जर्जर काया। लेकिन आँखें ठीक थीं। हर पल राम की प्रतीक्षा में खुली हुईं। ऋषि ने उसे बताया था कि एक दिन राम आश्रम में अवश्य आएँगे। और उससे मिलेंगे।

राम को आश्रम में देखकर शबरी बहुत प्रसन्न हुई। उनकी आवभगत की। सेवा की। खाने को मीठे फल दिए। रहने की जगह दी। उसकी आँखें तृप्त हो गईं। राम ने उससे सीता के संबंध में पूछा। "आप सुग्रीव से मित्रता करिए। सीता की खोज में वह अवश्य सहायक होगा। उसके पास विलक्षण शक्ति वाले बंदर हैं," शबरी ने राम को आश्वस्त किया।

अगले दिन राम ऋष्यमूक पर्वत चले गए। उनकी व्याकुलता अब और घट गई थी। मन की शांति लौट आई थी।

© NCERT not to be republished

राम और सुग्रीव

0645CH09

राम और लक्ष्मण का अगला पड़ाव ऋष्यमूक पर्वत था। सुग्रीव वहीं रहते थे। कबंध और शबरी की बात दोनों भाइयों को याद थी। दोनों ने सुग्रीव से मिलने की सलाह दी थी। कहा था कि वे सीता की खोज में सहायक होंगे। दोनों राजकुमार शीघ्रता से वहाँ पहुँचना चाहते थे।

सुग्रीव का मूल निवास ऋष्यमूक पर्वत नहीं था। किष्किंधा था। ऋष्यमूक में वह निर्वासन में अपना समय बिता रहे थे। सुग्रीव किष्किंधा के वानरराज के छोटे पुत्र थे। बड़े भाई का नाम बाली था। पिता के न रहने पर ज्येष्ठ पुत्र बाली राजा बना। पहले दोनों भाइयों में बहुत प्रेम था। राजकाज में किसी बात को लेकर मनमुटाव हुआ। फिर झगड़ा हो गया। इतना गंभीर कि बाली सुग्रीव को मार डालने पर उतर आया। जान बचाने के लिए सुग्रीव को ऋष्यमूक आना पड़ा।

ऋष्यमूक आकर भी सुग्रीव का डर कम नहीं हुआ था। वह चौकस रहता था। विश्वासपात्र वानर सेना निरंतर पहरे पर रहती थी। सुग्रीव स्वयं भी पहरा देता था। इस डर से कि कहीं बाली के गुप्तचर सैनिक वहाँ न पहुँच जाएँ। एक दिन सुग्रीव पहाड़ी पर खड़ा था। उसने दो युवकों को उधर आते देखा। "ये दोनों अवश्य बाली के गुप्तचर होंगे। मुझे मारने आ रहे होंगे।" सुग्रीव ने तत्काल अपने साथियों को बुलाया।

"हमें ऋष्यमूक छोड़ देना चाहिए। यह स्थान अब सुरक्षित नहीं है। बाली यहाँ भी आ धमका है," सुग्रीव ने अपने साथियों से कहा। "मैंने दो युवकों को इधर आते देखा है। उनके हाथों में धनुष हैं।"

सुग्रीव घबराया हुआ था। पर उसके प्रमुख साथी हनुमान इससे सहमत नहीं थे। "मैं जाकर पता लगाता हूँ कि वे कौन हैं। बाली की सेना में ऐसे सैनिक नहीं हैं," हनुमान ने भी दोनों युवकों को देख लिया था। हनुमान पर सुग्रीव को भरोसा था। उसने बात मान ली।

राम और लक्ष्मण पहाड़ी पर चढ़ते-चढ़ते थक गए थे। वे पहाड़ी सरोवर के पास

© NCERT not to be republished

रुके। थकान मिटाने। मुँह-हाथ धोने। तभी भेस बदलकर हनुमान वहाँ पहुँच गए। शिष्टता से प्रणाम किया। पूछा, "आप दोनों कौन हैं? वन में क्यों भटक रहे हैं? आपका भेस मुनियों जैसा है लेकिन चेहरे से राजकुमार लगते हैं।"

"हम सुग्रीव से मिलने जा रहे हैं। हमें उनकी सहायता की आवश्यकता है। क्या आप उन्हें जानते हैं?" राम ने विनम्रता से पूछा। प्रारंभिक बातचीत में ही हनुमान स्थिति भाँप गए। वे अपने मूल रूप में आ गए। प्रणाम करते हुए बोले, "मैं हनुमान हूँ। सुग्रीव का सेवक। उन्होंने आपका परिचय जानने के लिए यहाँ भेजा था।"

लक्ष्मण ने उन्हें अपना परिचय दिया। वन में आने का कारण बताया। यह भी बताया कि वे कबंध और शबरी की सलाह पर आए हैं। सुग्रीव से मिलने। उनसे सहायता माँगने।

हनुमान के चेहरे पर हलकी-सी मुसकराहट आ गई। कोई उससे सहायता माँगने आया है, जिसे स्वयं सहायता चाहिए। हनुमान समझ गए। राम और सुग्रीव की स्थिति एक जैसी है। दोनों को एक-दूसरे की सहायता चाहिए। वे मित्र हो सकते हैं। एक अयोध्या से निर्वासित है, दूसरा किष्किंधा से। एक की पत्नी को रावण उठा ले गया है। दूसरे की पत्नी उसके भाई ने छीन ली है। दोनों के पिता नहीं हैं।

हनुमान ने राम और लक्ष्मण को कंधे पर बैठाया। कुछ ही पल में वे ऋष्यमूक के शिखर पर पहुँच गए। हनुमान ने दोनों को सुग्रीव से मिलाया। दोनों ने अग्नि को साक्षी मानकर मित्रता का वचन लिया। सुग्रीव ने कहा, "आज से हमारे सुख-दुःख साझा हैं।"

राम ने सुग्रीव को सीता-हरण के संबंध में बताया तो सुग्रीव अचानक उठ खड़े हुए। उन्हें कुछ याद आया। बोले, "वानरों ने मुझे एक स्त्री के हरण की बात बताई थी। वह निश्चित रूप से सीता ही रही होंगी। रावण का रथ इसी पर्वत के ऊपर से गया था।"

राम और लक्ष्मण ध्यान से उनकी बात सुन रहे थे। सुग्रीव बोलते रहे, "सीता स्वयं को रावण के चंगुल से छुड़ाने का यत्न कर रही थीं। वानरों को देखकर उन्होंने अपने कुछ आभूषण नीचे फेंक दिए थे।" गहनों की एक पोटली राम के सामने रखते हुए उन्होंने कहा, "देखिए, क्या ये गहने सीता के हैं?"

राम ने आभूषण तुरंत पहचान लिए। कुछ गहने लक्ष्मण ने भी पहचाने। गहने देखकर राम शोक सागर में डूब गए। उनके मुँह से निकला, "धिक्कार है मुझे, हे सीते! मैं संकट में तुम्हारी रक्षा नहीं कर

Rationalised 2023-24

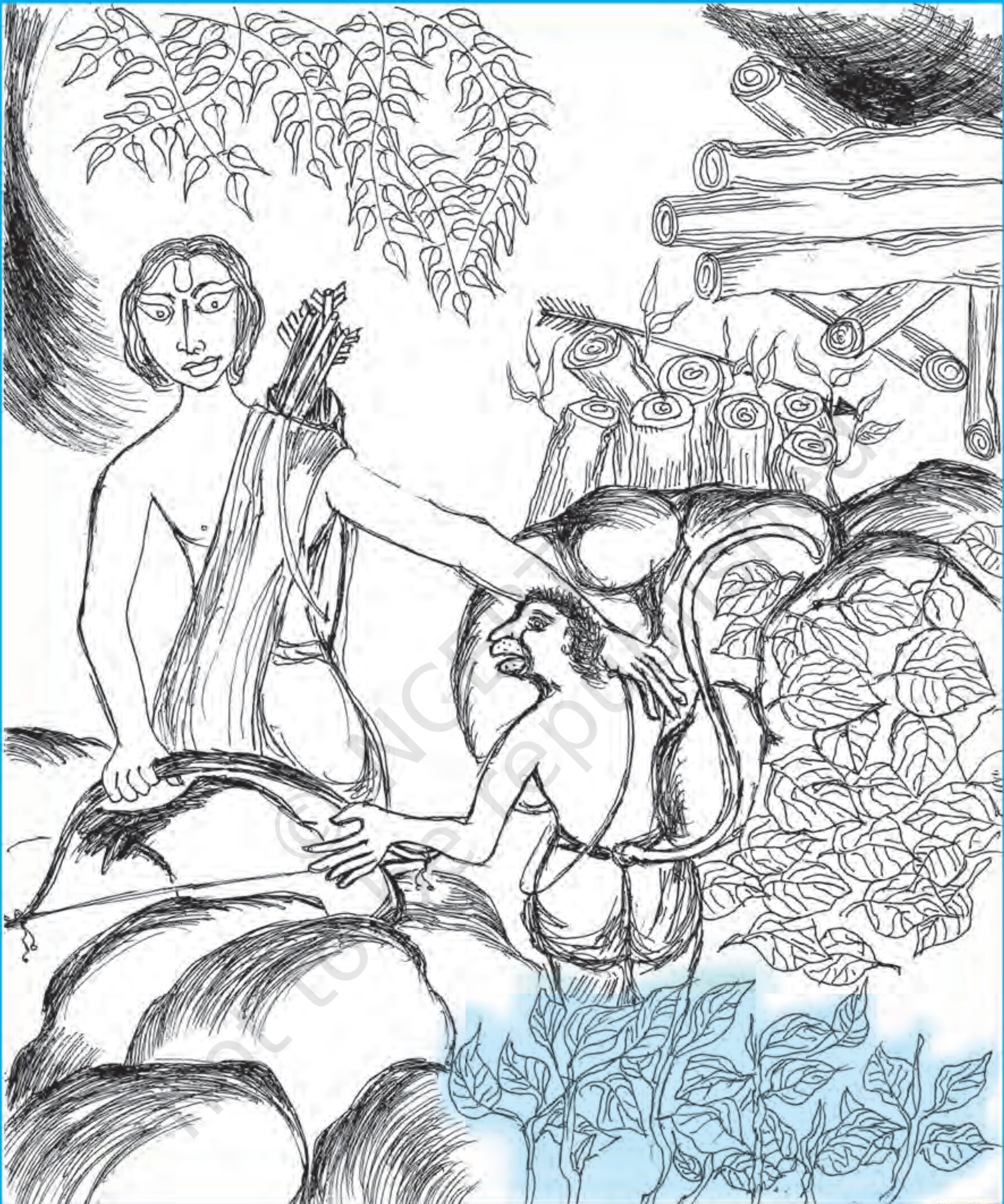

सका। मेरा पौरुष, बल, पराक्रम, ज्ञान तुम्हारे काम नहीं आया।"

सुग्रीव ने उन्हें सांत्वना दी। "सीता अवश्य मिल जाएँगी। मैं हर प्रकार से आपकी सहायता करूँगा, मित्र। रावण का सर्वनाश निश्चित है।"

राम के बाद सुग्रीव ने अपनी व्यथा-कथा सुनाई। "बाली ने मुझे राज्य से निकाल दिया है। मेरी स्त्री छीन ली। मेरा वध करने की चेष्टा कर रहा है। संकट के समय हनुमान, नल और नील ने मेरा साथ दिया। मुझे कभी नहीं छोड़ा।" उसने राम से सहायता माँगी। राम बोले, "चिंता मत करो मित्र। तुम्हें अपना राज्य भी मिलेगा और स्त्री भी।"

राम देखने में सुकुमार थे। उन्हें देखकर उनकी शक्ति का पता नहीं चलता था। सुग्रीव को राम के आश्वासन पर भरोसा नहीं हुआ। "बाली महाबलशाली है। उसे हराना इतना आसान नहीं है। वह शाल के सात वृक्षों को एक साथ झकझोर सकता है।"

राम ने कोई उत्तर नहीं दिया। धनुष उठाया और तीर चला दिया। शाल के सातों विशाल वृक्ष एक ही बाण से कटकर गिर पड़े। इस शक्ति प्रदर्शन पर सुग्रीव ने हाथ जोड़ लिए। राम ने कहा, "मित्र! अब विलंब कैसा? बाली को युद्ध के लिए ललकारो। किष्किंधा की राजगद्दी का निर्णय उसी युद्ध में हो जाएगा।"

सुग्रीव चिंतित हो गए। युद्ध में बाली को हराना असंभव था। राम बोले, "चिंता मत करो मित्र। मैं पेड़ की ओट से युद्ध देखूँगा। जब तुम पर संकट आएगा, तुम्हारी सहायता करूँगा। बाली की मृत्यु मेरे ही बाण से होगी। वह मारा जाएगा।"

योजना बनाकर सब किष्किंधा पहुँच गए। सुग्रीव आगे था। राम, लक्ष्मण और हनुमान छिप गए थे। 'मेरे पीछे राम की शक्ति है,' सोचते हुए उसने बाली को ललकारा। बाली के क्रोध की सीमा न रही। वह गरजता हुआ निकला। "आज शिकार स्वयं मेरे मुँह तक आया है। मैं तुझे नहीं छोडूँगा।"

भीषण मल्ल युद्ध हुआ। दोनों एक-दूसरे से गुँथ गए। युद्ध में बाली भारी पड़ रहा था। लगता था सुग्रीव का अंत निश्चित है। राम पेड़ के पीछे खड़े थे। धनुष हाथ में था। पर उन्होंने तीर नहीं चलाया। सुग्रीव वहाँ से किसी तरह जान बचाकर भागा। सीधा ऋष्यमूक पर्वत आकर रुका। राम, लक्ष्मण और हनुमान भी लौट आए।

सुग्रीव राम पर कुपित था। "यह धोखा है। आपने मेरे साथ धोखा किया। समय

© NCERT not to be republished

पर बाण नहीं चलाया। मैं नहीं भागता तो आज वह मुझे मार डालता।" राम की कठिनाई दूसरी थी। वे दुविधा में थे। उन्होंने सुग्रीव को समझाया, "तुम दोनों भाइयों के चेहरे मिलते-जुलते हैं। दूर से दोनों एक जैसे लगते हो। मैं बाली को पहचान नहीं पाया। बिना पहचाने बाण चलाता तो वह तुम्हें भी लग सकता था। मैं इस चूक के लिए तैयार नहीं था। मैं अपने मित्र को खोना नहीं चाहता था।"

लक्ष्मण ने समझा-बुझाकर सुग्रीव को तैयार किया। एक और युद्ध के लिए। राम ने कहा, "जाओ मित्र! इस बार बाली को पहचानने में चूक नहीं होगी। इस बार उसका अंत निश्चित है।" सुग्रीव डरा हुआ था। घबराहट थी। पर राम के कहने पर तैयार हो गया।

किष्किंधा पहुँचकर उसने बाली को चुनौती दी। ललकारा। बाली को सुग्रीव का यह साहस समझ में नहीं आया। वह अंत:पुर में था। अपनी पत्नी रानी तारा के साथ। बाली जाने लगा तो तारा ने उसे समझाने का प्रयास किया। जाने से मना किया। बाली ने उसकी बात नहीं मानी। पैर पटकता बाहर आया। क्रोध से उबल रहा था।

बाली ने हाथ हवा में उठाया। मुट्ठी भिंची हुई थी। वह एक घूँसे से सुग्रीव का काम तमाम कर देता। तभी राम का बाण उसकी छाती में लगा। वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा। बाली के गिरने पर राम, लक्ष्मण और हनुमान पेड़ों की ओट से बाहर निकल आए।

आनन-फानन में राज्याभिषेक की तैयारियाँ की गईं। सुग्रीव को राजगद्दी मिली। राम की सलाह पर बाली के पुत्र अंगद को युवराज का पद दिया गया। राम ने सुग्रीव के लिए संबोधन बदल दिया। राजगद्दी पर बैठने के बाद उन्हें 'मित्र' नहीं कहा। 'वानरराज' कहकर संबोधित किया। सुग्रीव का मन था कि राम कुछ समय वहीं रहें। उनके साथ। राम ने मना कर दिया। कहा, "यह पिता की आज्ञा के विरुद्ध होगा। उन्होंने मुझे वनवास दिया है। मैं वन में ही रहूँगा।"

राम किष्किंधा से लौट आए। वर्षा ऋतु के कारण आगे जाना कठिन था। लंकारोहण कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया। इस अवधि में वे प्रश्रवण पहाड़ पर रहे।

वर्षा ऋतु बीत गई। राम प्रतीक्षा कर रहे थे। सुग्रीव की वानरसेना की। सीता की खोज के लिए। सुग्रीव ने राजतिलक के दिन राम को इसका आश्वासन दिया था। लेकिन वह अपना वचन भूल गए।

© NCERT
not to be republished

राग-रंग में उलझ गए। राम चिंतित थे। दु:खी भी।

हनुमान को सुग्रीव का वचन याद था। राजतिलक के दिन वे वहीं थे। उन्होंने सुग्रीव को याद दिलाया। सुग्रीव ने वानरसेना एकत्र करने का आदेश दिया। यह काम सेनापति नल को सौंपा गया। पंद्रह दिन और बीत गए। लेकिन सेना राम के पास नहीं पहुँची।

राम सुग्रीव के इस व्यवहार से क्षुब्ध थे। क्रोध में उन्होंने सुग्रीव के विनाश तक की बात कही। राम को चिंतित देख लक्ष्मण से न रहा गया। उन्होंने धनुष उठाया तो राम ने उन्हें रोक दिया। कहा, "सुग्रीव को बस समझाना है। वह हमारा मित्र है।" लक्ष्मण किष्किंधा चले गए। सुग्रीव को समझाने। वहाँ पहुँचकर उन्होंने धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई। डोरी खींचकर छोड़ी। उसकी टंकार से सुग्रीव काँप गया।

धनुष की टंकार सुनते ही उसे राम को दिया वचन पुन: याद आ गया। तारा ने सलाह दी कि वे तत्काल जाकर राम से मिलें। क्षमा याचना करें। सुग्रीव ने ऐसा ही किया। राम के पास जाने से पूर्व सुग्रीव ने हनुमान को आवश्यक निर्देश दिए। वानर सेना एकत्र करने का आदेश। इस बार सुग्रीव सेना एकत्र होने तक नहीं रुके। तुरंत निकल पड़े। लक्ष्मण के पीछे-पीछे।

राम के सामने जाकर भयभीत वानरराज ने उनसे क्षमा माँगी। अपनी चूक के लिए। राम ने उन्हें उठाकर गले लगा लिया। राम और सुग्रीव बात कर ही रहे थे कि उछलकूद करती वानर टोलियाँ वहाँ आ पहुँचीं। हनुमान के साथ लाखों वानर थे। जामवंत के पीछे भालुओं की सेना।

इसके बाद लंकारोहण की योजना बनी। वानरों को चार टोलियों में बाँटा गया। अंगद को दक्षिण जाने वाले अग्रिम दल का नेता बनाया गया। उस दल में हनुमान, नल और नील भी थे। राम की यही इच्छा थी। उन्होंने कहा, "वानरों की सेना भेजने से पहले चतुर और बुद्धिमान दूतों को लंका भेजा जाए। यही उचित है।"

राम और सुग्रीव की जय-जयकार करते वानर अपनी निर्धारित दिशाओं की ओर चल पड़े। दक्षिण जाने वाले दल को राम ने रोक लिया। उन्होंने हनुमान को अपने पास बुलाया। अपनी उँगली से अँगूठी उतारकर उन्हें दे दी। अँगूठी पर राम का चिह्न था। उन्होंने कहा, "जब सीता से भेंट हो तो यह अँगूठी उन्हें दे देना। वे इसे पहचान जाएँगी। समझ जाएँगी तुम्हें मैंने भेजा है। तुम मेरे दूत हो।"

© NCERT not to be republished

दक्षिण की टोली किष्किंधा से चली। अंगद और हनुमान आगे-आगे चल रहे थे। चलते-चलते वे ऐसे स्थान पर पहुँच गए, जिसके आगे भूमि नहीं थी। केवल जल था। विशाल समुद्र। उसकी गहराई अथाह थी। लहरों की गरज कँपा देती थी। समुद्र को देखकर सबका साहस जवाब दे गया। वानर थक-हारकर वहीं बैठ गए।

वानर राम के बारे में चर्चा करने लगे। अंगद ने कहा, "राम की सेवा में प्राण भी चले जाएँ तो दुख नहीं होगा। जटायु ने अपनी जान दे दी। हम भी पीछे नहीं हटेंगे।"

तभी एक विशाल गिद्ध पहाड़ी के पीछे से निकला। वह जटायु का भाई था। संपाति। उसने कहा, "सीता लंका में हैं। मैं जानता हूँ। रावण उन्हें लेकर गया है। आप लोगों को यह समुद्र पार करना होगा। सीता तक पहुँचने का बस यही एक रास्ता है।"

सीता की सूचना मिलने से प्रसन्न हुआ वानर दल फिर निराश हो गया। समुद्र सामने था। विकराल था। उसे कौन पार करेगा? कैसे करेगा? अंगद उदास हो गए। लक्ष्य सामने था। पर विकट था। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था। बूढ़ा संपाति उनकी सहायता कर सकता था। पर इस आयु में इतनी लंबी उड़ान संभव नहीं थी।

वानर दल असमंजस में पड़ गया। अंगद ने पहले ही कह दिया था कि काम पूरा किए बिना कोई किष्किंधा वापस नहीं जाएगा। वे न आगे जा सकते थे, न पीछे। वे एक-दूसरे की ओर देख रहे थे। इस दल में सबसे बुद्धिमान जामवंत थे। सब उनके पास गए। उनके पास भी इस कठिन प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था।

तभी जामवंत की दृष्टि हनुमान पर पड़ी। वे सबसे दूर बैठे थे। चुपचाप। जामवंत जानते थे कि यह काम हनुमान कर सकते हैं। वे पवन-पुत्र हैं। उनकी शक्ति अपार है। लेकिन उन्हें स्वयं इसका अनुमान नहीं है। उनकी सोई हुई शक्ति जामवंत ने जगाई। कहा, "हनुमान! आपको जाना होगा। यह कार्य केवल आप कर सकते हैं।" सबकी आँखें उन्हीं पर टिक गईं।

© NCERT not to be republished

लंका में हनुमान

हनुमान उठे। अँगड़ाई ली। झुककर धरती को छुआ। और एक ही छलाँग में महेंद्र पर्वत पर जा खड़े हुए। जामवंत सफल हो गए थे। हनुमान को उनकी शक्ति की याद दिलाने में। पर्वत शिखर पर खड़े हनुमान ने विराट समुद्र की ओर देखा। उनकी आँखों में चुनौती का भाव नहीं था। समर्पण का था। राम के प्रति। समुद्र यह देखकर डर गया। उसकी गरिमा नष्ट होने को थी।

हनुमान ने पूर्व दिशा की ओर मुँह करके अपने पिता को प्रणाम किया। हाथ हवा में उठाए। पर्वत पर झुककर उसे हाथ-पैर से कसकर दबाया और छलाँग लगा दी। अगले ही पल वह आकाश में थे। समुद्र के ऊपर। तेज़ी से आगे बढ़ते हुए। छलाँग के समय बड़े शिलाखंड आसमान में उड़ गए। कुछ दूर हनुमान के साथ गए। जैसे परिजन किसी को विदा करने जाते हैं। हनुमान की गति अधिक थी। पत्थर पीछे छूटे और समुद्र में जा गिरे।

महेंद्र पर्वत सुंदर था। वनस्पतियों और जीव-जंतुओं से भरा। उसका शिखर पथरीला था। लेकिन नीचे घाटी में मनमोहक वृक्ष थे। लताएँ थीं। हनुमान के छलाँग लगाने तक पर्वत शांत था। निश्चल। छलाँग के दबाव से पर्वत दरक गया। वृक्ष काँपकर गिर गए। वन थर्रा गया। बड़ी-बड़ी चट्टानें नीचे लुढ़कने लगीं। पशु-पक्षी चीत्कार करते हुए भागे। कई स्थानों पर जल-स्रोत फूट पड़े। कहीं धुआँ उठने लगा। चट्टानें दहक उठीं। लाल हो गईं। आग के गोलों की तरह।

हनुमान इससे बेखबर थे। वायु की गति से आगे बढ़ रहे थे। मार्ग में उन्होंने दिशा बदली। लंका जाने के लिए। उनका शरीर हिला तो बादलों की सी गड़गड़ाहट हुई। वे जहाँ से निकलते सब कुछ अस्थिर हो जाता। समुद्र में ऊँची लहरें उठने लगतीं। उनकी परछाईं समुद्र में विराट नाव की तरह दिखती। बिना आवाज़ चलती हुई।

समुद्र के अंदर एक पर्वत था। मैनाक। सुनहरा। चमकता हुआ। वह जलराशि को चीरकर ऊपर उठा। मैनाक चाहता था कि हनुमान कुछ पल वहाँ विश्राम कर लें। थक

गए होंगे। हनुमान नहीं रुके। उन्हें मैनाक की सदिच्छा बाधा लगी। राम काज में। वह मैनाक से टकराते हुए निकल गए। हाथ ऊपरी हिस्से पर लगा तो पर्वत शिखर टूट गया। वह कुछ और ऊपर उठकर उड़ने लगे।

हनुमान के रास्ते में कई बाधाएँ आईं। राक्षसी सुरसा मिली। विराट शरीर। वह हनुमान को खा जाना चाहती थी। पवन पुत्र ने उसे चकमा दिया। उसके मुँह में घुसकर निकल आए। आगे एक और राक्षसी टकराई। उसका नाम सिंहिका था। छाया राक्षसी। उसने जल में हनुमान की परछाईं पकड़ ली। वह अचानक आसमान में ठहर गए। क्रुद्ध हनुमान ने सिंहिका को मार डाला। आगे बढ़े।

अब गंतव्य दूर नहीं था। दूर क्षितिज पर लंका दिखाई पड़ने लगी थी। रावण की राजधानी। सोने की लंका। आकाश में उठते हुए कंगूरे। उसकी प्राचीर। लंका जगमगा रही थी। हनुमान समुद्र के किनारे उतर गए। अब वह लंका को और निकट से देख पा रहे थे।

हनुमान को थकान रंचमात्र नहीं थी। इतनी लंबी यात्रा का उन पर कोई प्रभाव नहीं था। चिंता थी कि सीता को कैसे ढूँढ़ेंगे। कैसे पहचानेंगे? लंका नगरी को ठीक से देखने के लिए हनुमान एक पहाड़ी पर चढ़ गए। दृष्टि दौड़ाई। चारों ओर वृक्ष। सुवासित उद्यान। भव्य भवन। हवा में लहराती संगीत धाराएँ। वे चकित थे। राक्षस नगरी में इतनी सुंदरता! उन्होंने ऐसा नगर पहले कभी नहीं देखा था। वह उस नगर का एक-एक विवरण आँखों में भर लेना चाहते थे। ताकि बाद में वह सीता की खोज में काम आए।

दिन के समय लंका में प्रवेश करना हनुमान को उचित नहीं लगा। उन्होंने प्रतीक्षा की। समुद्र तट पर ही। शाम ढलने पर नगरी में प्रवेश किया। उनके सामने पहला प्रश्न सीता का पता लगाना था। उस विराट नगर में यह काम आसान नहीं था। वृक्षों-डालियों से कूदते-फाँदते वह नगर के मध्य में पहुँच गए। राजमहल वहीं था। उनका अनुमान था कि सीता महल में ही होंगी। रावण ने उन्हें छिपाकर रखा होगा। किसी कोने में। महल में पहरेदार थे। अस्त्र-शस्त्र लिए हुए। सबकी आँख बचाकर वह चुपचाप अंदर आ गए।

राजमहल विराट था। वैभवपूर्ण। वे बचते-बचाते महल में घूमने लगे। भटकते रहे। रात का समय था। अधिकतर राक्षस सो रहे थे। उन्होंने निकट जाकर एक-एक चेहरा देखा। सीता जैसी कोई स्त्री उन्हें नहीं दिखाई पड़ी। वे रावण के कक्ष में

© NCERT not to be republished

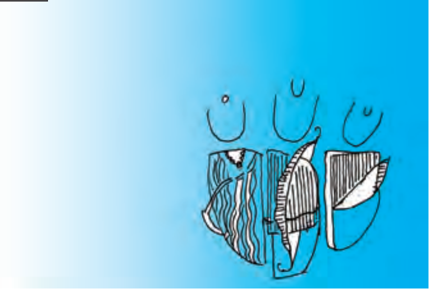

गए। वहाँ रावण था। उसकी रानी मंदोदरी थी। सीता नहीं थीं। 'न जाने सीता को कहाँ छिपा रखा है,' सोचते हुए हनुमान अंत:पुर से बाहर निकल आए।

एक-एक करके उन्होंने राक्षसों के सारे घर छान मारे। पशुशालाएँ भी देख लीं। सीता का कहीं पता न था। सीता के लंका में होने की सूचना पर उन्हें संदेह नहीं था। पर वह दुखी हो गए। सोचने लगे। 'रावण ने अवश्य सीता को कहीं छिपा दिया है। किसी गुप्त स्थान पर। मैं उन्हें ढूँढ़ निकालूँगा। उनसे मिले बिना नहीं लौटूँगा,' उन्होंने तय किया।

अंत:पुर के बाहर हनुमान ने रावण का रथ देखा। स्वर्ण रथ। रत्नों से सजा हुआ। वे चकित रह गए। तभी उनका ध्यान अंत:पुर से लगी वाटिका की ओर गया। वहाँ अशोक के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष थे। आकाश छूने को आतुर। यही अशोक वाटिका थी। दीवार लाँघकर वे वहाँ पहुँचे। लंका में यही एक स्थान बचा था, जो उन्होंने नहीं देखा था। उन्हें लगा सीता वाटिका में नहीं हो सकतीं। रावण उन्हें इतनी खुली जगह क्यों रखेगा?

हनुमान में निराशा घर करती जा रही थी। वह एक वृक्ष पर चढ़कर बैठ गए। दिन चढ़ आया था। ऐसे में नीचे उतरना उन्हें उचित नहीं लगा। पेड़ घना था। वे उसके पत्तों में छिप गए। उन्हें वहाँ से सब कुछ दिखता था। लेकिन उन्हें कोई नहीं देख सकता था।

रात हो आई। अचानक वाटिका के एक कोने से उन्हें अट्टहास सुनाई पड़ा। वे राक्षसियाँ थीं। हनुमान उधर ही देखने लगे। एक वृक्ष के नीचे राक्षसियों का झुंड था। वे किसी बात पर ठहाके लगा रही थीं। हनुमान को लगा कि वे सीता पर हँस रहीं हैं। वह पेड़ से चिपककर नीचे की डाली पर आए। ध्यान से देखा। राक्षसियों के बीच एक स्त्री बैठी है। चेहरा मुरझाया हुआ। उदास। दयनीय। दुर्बल। शोकग्रस्त। 'यही माँ सीता है,' उन्होंने मन में सोचा। उन्हें अब कोई संदेह नहीं था।

राक्षसियाँ वहीं थीं। हट नहीं रही थीं। हनुमान उतावले थे। पर नीचे उतरने में डर था। स्वयं उनके लिए। सीता के लिए भी। तभी उन्होंने रावण को आते देखा। राजसी ठाट-बाट के साथ। दासियों सहित। हनुमान सीता से भेंट किए बिना लौटना नहीं चाहते थे। 'ऐसे लौटा तो राम को क्या बताऊँगा?' उन्होंने सोचा। नीचे उतरने का अवसर ही नहीं मिल रहा था। वे डाल से चिपक गए। साँस रोककर। रावण के लौटने की प्रतीक्षा में।

रावण ने सीता को बहलाया। फुसलाया। लालच दिया। सीता नहीं डिगीं। वह डर से

© NCERT not to be republished

Rationalised 2023-24

काँप रही थीं पर उन्होंने रावण की एक न सुनी। तिरस्कार किया। रावण ने कहा, "तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं है, सुमुखी! मैं तुम्हें स्पर्श नहीं करूँगा, जब तक तुम स्वयं ऐसा नहीं चाहोगी। मैं तुम्हें अपनी रानी बनाना चाहता हूँ। मेरी बात मान लो और सुख भोग करो। अन्यथा मैं तुम्हें तलवार से काट डालूँगा। सोच लो, तुम्हारे पास अब केवल दो महीने बचे हैं।"

"ऐसा कभी नहीं होगा, दुष्ट! राम के सामने तुम्हारा अस्तित्व ही क्या है? मुझे राम के पास पहुँचा दो। वे तुम्हें क्षमा कर देंगे। तुमने ऐसा नहीं किया तो सर्वनाश निश्चित है। तुमने अपराध किया है। तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। मूर्ख राक्षस! तुम्हारा अंत निकट है।"

रावण क्रोध में पैर पटकता हुआ चला गया। रात गाढ़ी होती जा रही थी। रावण के जाने पर राक्षसियों ने सीता को घेर लिया। उन्हें डराने-धमकाने लगीं। बोलीं, "तुम मूर्ख हो। रावण का प्रस्ताव अस्वीकार कर रही हो। यह रावण की नगरी है। तुम्हारा राम यहाँ कभी नहीं पहुँच सकता। तुम्हें कोई नहीं बचा सकता।" राक्षसियों में एक त्रिजटा थी। सबसे भिन्न। उसने कहा, "मैंने एक सपना देखा है। पूरी लंका समुद्र में डूब गई है। सब नष्ट हो गया है। यह सपना अच्छा नहीं है। कहीं यह सीता के दुख से जुड़ा तो नहीं है?" सीता की हिचकियाँ बँध गईं। वह विलाप करने लगीं।

देर रात राक्षसियाँ एक-एक कर चली गईं। सीता वाटिका में अकेली थीं। यह अच्छा अवसर था। पर हनुमान पेड़ से नहीं उतरे। 'कहीं सीता मुझे भी राक्षस न समझ लें। मायावी चाल मान लें,' उन्होंने सोचा। पेड़ पर बैठे-बैठे उन्होंने राम-कथा प्रारंभ की। राम का गुणगान। रावण की लंका में राम-चर्चा सुनकर सीता चौंकीं। उन्होंने ऊपर देखा, जिधर से आवाज़ आ रही थी। पूछा, "कौन हो तुम?"

हनुमान नीचे उतर आए। उन्होंने सीता को प्रणाम किया। राम की अँगूठी उन्हें दी। कहा, "हे माता! मैं श्रीराम का दास हूँ। किष्किंधा के वानरराज सुग्रीव का अनुचर। उन्होंने मुझे यहाँ भेजा है। आपका समाचार लेने।" हनुमान को लेकर सीता के मन में अब भी शंका थी। उन्होंने पर्वत पर फेंके आभूषणों की याद दिलाकर संदेह दूर कर दिया।

सीता ने राम का कुशल-क्षेम पूछा। कई प्रश्न किए। हनुमान उन्हें कंधे पर बैठाकर राम के पास ले जाना चाहते थे। सीता ने प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा, "यह उचित नहीं होगा, पुत्र। पकड़े गए तो मेरा संदेश भी राम तक नहीं पहुँचेगा।"

© NCERT not to be republished

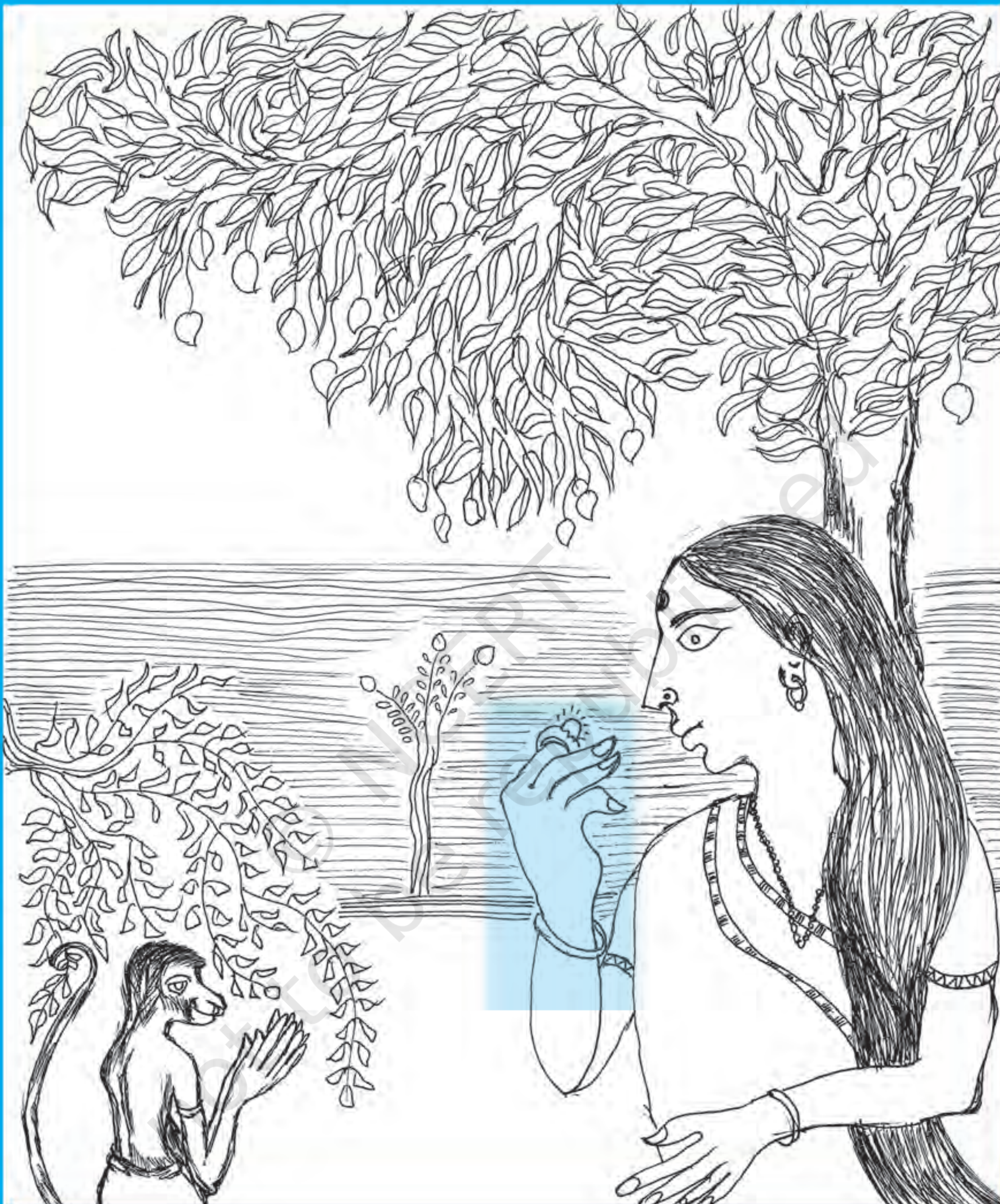

हनुमान ने सीता से विदा ली। वह पूरी सूचना तत्काल राम तक पहुँचाना चाहते थे। चलते समय सीता ने अपना एक आभूषण उन्हें दे दिया। उनकी आँखें नम थीं। हनुमान ने कहा, "निराश न हों, माते! श्रीराम दो माह में यहाँ अवश्य पहुँच जाएँगे।"

हनुमान राम के पास लौटने को उद्यत थे। उत्तर दिशा की ओर जाना था। पर कुछ सोचकर रुक गए। उन्होंने रावण का उपवन तहस-नहस कर दिया। अशोक वाटिका उजाड़ दी। वृक्ष उखाड़ दिए। और विरोध करने वाले सभी राक्षसों को मार डाला। रावण के कई महाबली मारे गए। हनुमान से लड़ते हुए रावण का पुत्र अक्षकुमार भी प्राण गँवा बैठा।

राक्षस भागे-भागे राजमहल गए। रावण को इसकी सूचना दी। एक वानर के उत्पात के बारे में बताया। रावण तिलमिला गया। उसके क्रोध का ठिकाना नहीं रहा। उसने मेघनाद को भेजा। अपने सबसे बड़े बेटे को। कहा, "उस वानर को मेरे सामने उपस्थित करो। उसने जघन्य अपराध किया है।"

मेघनाद ने हनुमान से भीषण युद्ध किया। वह इंद्रजित था। एक बार इंद्र को परास्त कर चुका था। उसने अंततः हनुमान को बाँध लिया। राक्षस उन्हें खींचते हुए रावण के दरबार में ले आए।

शक्तिशाली रावण सिंहासन पर बैठा था। उसके सेनापति ने पूछा, "कौन हो तुम? किसने तुम्हें यहाँ भेजा है?" हनुमान के मन में भय नहीं था, "मैं श्रीराम का दास हूँ। मेरा नाम हनुमान है। आप श्रीराम की पत्नी सीता को हर लाए हैं। मैं उन्हीं की खोज में आया था। उनसे मैं मिल चुका। आपके दर्शन करना चाहता था। इसलिए उत्पात करना पड़ा। इसमें मेरा कोई अपराध नहीं है। दंड के भागी तो राक्षस हैं। उन्होंने मुझे रोकने का प्रयास किया।"

क्रोध में रावण हनुमान को मारने उठा। छोटे भाई विभीषण ने उसे रोक दिया। कहा, "आप नीतिवान हैं, राजन्! नीति के अनुसार दूत का वध अनुचित है। आप उसे कोई दूसरा दंड दे दें।"

हनुमान ने रावण को पुनः प्रणाम किया "मेरा एक निवेदन है। आप सीता को सम्मान सहित लौटा दें। इसी में आपका कुशल है। धनुर्धर राम से आप युद्ध नहीं जीत सकते।''

रावण ने हनुमान की पूँछ में आग लगा देने की आज्ञा दी। राक्षसों ने आग लगा दी। जलती हुई पूँछ के साथ उन्हें नगर में घुमाया। राक्षस ठिठोली कर रहे थे। इसी बीच हनुमान ने बंधन तोड़ दिए। एक भवन पर चढ़कर

© NCERT not to be republished

उसमें आग लगा दी। एक से दूसरी अटारी पर कूदते उन्होंने सभी भवन जला दिए। हाहाकार मच गया। लंका जल रही थी। धू-धू कर। राक्षस विलाप करने लगे।

अचानक हनुमान को सीता की चिंता हुई। वे अशोक वाटिका की ओर भागे। डर था कि कहीं आग उन तक न पहुँच गई हो। सीता सकुशल थीं। पेड़ के नीचे बैठी हुईं। आग से अप्रभावित। हनुमान ने उन्हें प्रणाम किया। आशीर्वाद माँगा। और उत्तर दिशा की ओर चल पड़े। राम के पास।

दूसरे तट पर सभी हनुमान की प्रतीक्षा कर रहे थे। अंगद। जामवंत। अन्य वानर। आते ही उन्हें सबने घेर लिया। हनुमान ने संक्षेप में लंका का हाल सुनाया। सीता से भेंट का क्रम बताया। कहा, "मैंने उन्हें देखा। बात की। यह समाचार शीघ्र श्रीराम तक पहुँचाना चाहिए। समय अधिक नहीं है।" वानर किलकारियाँ भरने लगे।

प्रसन्नता में वानरों का उत्पात बढ़ गया। उन्होंने मार्ग के कई वन उजाड़े। फल खाए और फेंके। दौड़ते हुए चले। और किष्किंधा पहुँच गए। राम के पास। वानरों को साथ लेकर सुग्रीव वहाँ पहुँचे।

हनुमान ने राम को सीता द्वारा दिया गया आभूषण दिया। राम की आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने हनुमान से कई प्रश्न किए। वे कैसी हैं? कैसे रहती हैं? उन्होंने कोई संदेश भेजा है? हनुमान ने पूरी बात विस्तार से कही। कहा, "मैंने उनसे भेंट की। वे व्याकुल हैं। चिंतित हैं। हर समय राक्षसों से घिरी रहती हैं। आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं। उन्होंने कहा, 'यदि श्रीराम दो माह में यहाँ नहीं आए तो पापी रावण मुझे मार डालेगा'।" राम शोक में डूब गए। भाव विह्वल होकर उन्होंने हनुमान को गले से लगा लिया। आँसू रोक नहीं पाए।

लक्ष्य स्पष्ट था। लंका पर आक्रमण। समय कम था। सुग्रीव ने युद्ध की तैयारियाँ तत्काल प्रारंभ करने का निर्देश दिया। वानर सेना इसके लिए पहले से तैयार थी। उत्साहित थी। इस बार उन्हें अलग-अलग टोलियों में बाँटने की आवश्यकता नहीं थी। अलग दिशाओं में नहीं जाना था। सबका लक्ष्य एक था। दिशा एक थी। दक्षिण।

सुग्रीव ने लक्ष्मण के साथ बैठकर युद्ध की योजना पर विचार किया। योग्यता और उपयोगिता के आधार पर भूमिकाएँ निर्धारित हुईं। हनुमान, अंगद, जामवंत, नल और नील को आगे रखा गया। समुद्र पर चर्चा हुई। उसे कैसे पार करेंगे? सेना का हर वानर हनुमान नहीं था। यह एक चुनौती थी। देर रात तक चर्चा का विषय रही।

© NCERT not to be republished

लंका विजय

0645CH11

लंका कूच की तैयारियाँ रातभर चलती रहीं। सभी तत्पर। सभी उद्यत। सुबह कूच से पहले सुग्रीव ने वानरों को संबोधित किया। युद्ध के बारे में। कहा, "युद्ध भयानक होगा। इसमें केवल वही सैनिक जाएँगे जो शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हों। जो दुर्बल हैं, यहीं रुक जाएँ।" वानर सेना को युद्ध के नियम बताए गए। रक्षा और आक्रमण के तरीके।

सेना किष्किंधा से दहाड़ती, गरजती, किलकारियाँ भरती रवाना हुई। राम, लक्ष्मण और सुग्रीव की जयकार से आकाश गूँज उठा। लाखों वानर थे। चारों ओर कोलाहल। वे पेड़ों-पहाड़ों को रौंदते चले जा रहे थे। इसका नेतृत्व नल कर रहे थे। सुग्रीव के सेनापति। जामवंत और हनुमान सबसे पीछे थे। यह सेना की रणनीति का हिस्सा था।

दिन-रात चलकर सेना ने महेंद्र पर्वत पर डेरा डाला। वही पर्वत, जहाँ से हनुमान ने छलाँग लगाई थी। समुद्र निकट ही था। पर्वत पर सेना का ध्वज लगाया गया। तंबू लगे। पताकाएँ हवा में लहरा रही थीं।

उधर, लंका में खलबली मची हुई थी। राक्षसों में बेचैनी थी। उनके मन में डर बैठ गया था। राम की शक्ति को लेकर। जिसका दूत लंका में आग लगा सकता है, वह स्वयं कितना शक्तिशाली होगा! नगर में चर्चा का विषय यही था। लेकिन रावण इससे अनभिज्ञ था। उसे कौन बताता? किसी में इतना साहस नहीं था।

ये चर्चाएँ विभीषण ने सुनीं। नगर की हताशा उनसे देखी नहीं गई। "ऐसी हताश सेना युद्ध नहीं कर सकती। उसकी पराजय निश्चित है।" वे रावण के पास गए। उसे सही स्थिति बताने। समझाने। राम से युद्ध न किया जाए। उन्होंने कहा, "आप सीता को लौटा दें। सबका कल्याण इसी में है। सीता मिल जाएँगी तो वे आक्रमण नहीं करेंगे।"

रावण ने विभीषण की बात अनसुनी कर दी। उन्हें अपने कक्ष से निकाल दिया। क्रोध में वह स्वयं भी उठकर चल पड़ा। सभा कक्ष की ओर। उसे राम के समुद्र तट पर पहुँचने का समाचार मिल चुका

© NCERT not to be republished

था। सैनिकों ने राम की सेना की पताकाएँ दूर से देख ली थीं।

विभीषण रावण के पीछे चलते रहे। बोलते रहे, "सीता आपके गले में बँधा साँप है। वह आपको डस लेगा। इसे छोटी बात मत समझिए, लंकाधिराज! ये संकेत महाविनाश के हैं। मैं अब भी कहता हूँ, सीता को लौटा दीजिए। लंका बच जाएगी।"

"तुम मेरे भाई नहीं, शत्रु हो। मेरे शत्रु के शुभचिंतक हो," रावण का क्रोध भड़क उठा। "निकल जाओ यहाँ से। मुझे तुम्हारा साथ नहीं चाहिए।" रावण सभागार की ओर मुड़ गया। विभीषण पीछे। दोनों के रास्ते अलग हो गए।

विभीषण उसी रात लंका से निकल गए। चार सहायकों के साथ। उन्होंने राम के पास जाना ठीक समझा।

समुद्र पार राम के शिविर में अचानक खलबली मची। एक वानर चिल्लाकर सबको सावधान कर रहा था। "हमारे शिविर में राक्षस आ गए हैं।" विभीषण कुछ दूर खड़े थे। वानरों ने उन्हें सुग्रीव के सामने पेश किया। "वानरराज! मैं लंका के राजा रावण का छोटा भाई हूँ। मैं राम की शरण में आया हूँ। आप मुझे उनके पास पहुँचा दें," विभीषण के चेहरे पर डर नहीं था। विश्वास था। शब्दों में षड्यंत्र नहीं था। कातरता थी। याचना थी। सुग्रीव को उनकी बात पर फिर भी भरोसा नहीं हुआ।

"मेरा नाम विभीषण है। रावण ने मुझे लंका से निकाल दिया। मैंने उससे सीता को लौटाने की बात कही थी। क्रोध और अहंकार में चूर रावण ने मुझे सभा में अपमानित किया। मैं प्राण बचाकर आया हूँ। एक बार राम से मिलवा दें। मैं उनसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

सुग्रीव राम के पास गए। मन में शंका अब भी थी। अंगद भी उसे संदेह की दृष्टि से देख रहे थे। राम ने बात सुनी और कहा, "हमें विभीषण को स्वीकार करना चाहिए। मैं शरण में आए व्यक्ति को कभी निराश नहीं करता। यह मेरी नीति है। विभीषण को आदर से अंदर लाइए।"

विभीषण राम के पास पहुँचे। राम ने उनका सत्कार किया। लंका का समाचार पूछा। जल्दी ही विभीषण राम के विश्वासपात्र बन गए। उन्होंने लंका की बहुत सी जानकारी राम को दी। रावण और उसके योद्धाओं की शक्ति के बारे में बताया। कहा, "रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए बल और बुद्धि दोनों की आवश्यकता है।"

"विभीषण! तुम चिंता मत करो। राक्षस मारे जाएँगे। लंका की राजगद्दी तुम्हारी होगी। भविष्य तुम्हारा है," राम ने कहा।

© NCERT not to be republished

राम की सेना के सामने एक बड़ी चुनौती थी। समुद्र। उसे कैसे पार करें? राम ने समुद्र से विनती की। तीन दिन बैठे रहे कि समुद्र रास्ता दे दे। वह नहीं माना तो राम को क्रोध आ गया। राम का क्रोध देखते हुए समुद्र ने उन्हें सलाह दी, "आपकी सेना में नल नाम का एक वानर है। वह पुल बना सकता है। उससे वानर सेना पार उतर जाएगी।"

नल ने अगले ही दिन काम प्रारंभ कर दिया। पुल बनने लगा। वानर कँकड़, पत्थर, शिलाएँ लाते रहे। नल पुल बनाते रहे। पाँच दिन में पुल तैयार हो गया। समुद्र को दो टुकड़ों में बाँटता हुआ। उसका घमंड चूर करता हुआ। सबसे पहले विभीषण पुल से उस पार गए। पीछे-पीछे वानर सेना। सेना का अगला शिविर दूसरे तट पर बना।

"असंभव!" रावण क्रोध से चीख उठा। समुद्र पर पुल कैसे बन सकता है? इस समाचार से रावण को विस्मय हुआ। भय भी। लेकिन उसने जो मन में ठान लिया था, उससे डिगा नहीं। उसने आदेश दिया, "सेना तैयार की जाए। युद्ध का समय आ पहुँचा है।"

अब दोनों सेनाएँ समुद्र के एक ही ओर थीं। उनका आमना-सामना होना शेष था। आक्रमण की तैयारी थी। रणनीति बन चुकी थी। पहले आक्रमण की योजनाओं को अंतिम रूप दिया जा रहा था।

राम ने अपनी सेना को चार भागों में विभक्त कर दिया। लंका के चार द्वार थे। चौतरफ़ा आक्रमण होना था। हर टुकड़ी को एक द्वार सौंपा गया। राम ने पर्वत शिखर पर चढ़कर स्वयं लंका का निरीक्षण किया। लंका के वैभव से वे भी चकित थे। उन्होंने लक्ष्मण को बताया। सूर्योदय होते ही राम ने आदेश दिया, "लंका को चारों ओर से घेर लिया जाए।" वानर सेना जयकार करती चल पड़ी।

इस बीच राम ने अंगद को बुलाया। कहा, "तुम लंका जाओ। मेरे दूत बनकर। सुलह का अंतिम प्रयास करो। ताकि युद्ध टल जाए। रावण से कहो कि सीता को लौटा दे। अन्यथा उसका अंत होगा।"

अंगद ने ऐसा ही किया। पर रावण नहीं माना। राम का संदेश सुनकर रावण क्रोधित हुआ। कुछ राक्षसों ने उन पर आक्रमण किया। अंगद वहाँ से बचकर राम के पास पहुँचे। कहा, "रावण को कोई पश्चाताप नहीं है। वह हमारे साथ सुलह के लिए तैयार नहीं है। युद्ध चाहता है। अब युद्ध ही एकमात्र विकल्प है।" वानर युद्ध के लिए तैयार थे। राम के आदेश की प्रतीक्षा में थे। आदेश मिलते ही उन्होंने लंका पर चढ़ाई कर दी।

© NCERT not to be republished

उधर, रावण के आदेश पर उसकी सेना निकल पड़ी। राक्षस उतावले थे। चीत्कार कर रहे थे। रावण के जयघोष से लगा कि आसमान फट जाएगा। वे दौड़े और वानर सेना पर टूट पड़े।

भयानक युद्ध हुआ। हर ओर दहला देने वाला शोर। हाथियों की चिंघाड़। घोड़ों की हिनहिनाहट। रथों की सरसराहट। कोलाहल। रथ हवा से बातें कर रहे थे। तलवारें खिंच गईं थीं। बाणों से आसमान भर गया था। भाले उड़ रहे थे। दोनों ओर के कई वीर मारे गए। रावण के अनेक पराक्रमी राक्षस ढेर हो गए। धरती लाल हो गई थी। क्षत-विक्षत शव बिखरे थे। कराहते घायलों की ओर किसी का ध्यान नहीं था।

शाम होने को थी। मेघनाद ने राक्षस सेना को पीछे हटते देखा। उसने अपने सैनिकों को ललकारा, "आगे बढ़ो! हम विजय के करीब हैं।" मेघनाद ने सेना का नेतृत्व सँभाल लिया। राक्षस उत्साह से आगे बढ़े। मेघनाद की दृष्टि राम-लक्ष्मण पर थी। वह छिपकर युद्ध करता था। मायावी था। किसी को दिखाई नहीं पड़ता था। उसके बाण राम और लक्ष्मण को लगे। दोनों वहीं मूर्च्छित होकर गिर पड़े।

मेघनाद ने समझा काम हो गया। उसने दोनों भाइयों को मृत समझ लिया। वह मैदान छोड़कर महल की ओर दौड़ा। रावण को इसकी सूचना देने। रणक्षेत्र में वानर राम-लक्ष्मण के पास एकत्र हो गए। वे चिंतित थे। अशुभ की आशंका से। विभीषण ने दोनों का उपचार कराया। उनकी मूर्च्छा टूटी। वे खड़े हुए तो वानर दल हर्ष-ध्वनि करने लगा। अगले दिन युद्ध के लिए तैयार।

रावण की सेना के महाबली एक-एक कर मारे जा रहे थे। धूम्राक्ष मारा गया। वज्रद्रष्ट धरती पर गिर पड़ा। अकंपन कुचल कर मर गया। प्रहस्त को नील ने ध्वस्त कर दिया। रावण को इसकी सूचनाएँ मिलती रहीं। वह घबरा गया। वह हड़बड़ाकर उठा और स्वयं कमान सँभाल ली। पहली मुठभेड़ में वह लक्ष्मण पर भारी पड़ा। लेकिन राम के बाणों ने उसका मुकुट धरती पर गिरा दिया। वह लज्जित होकर लौट गया।

अब तक रावण को राम की शक्ति का कुछ अनुमान हो गया था। जब उसे कोई और रास्ता नहीं सूझा तो उसने कुंभकर्ण को जगाया। वह महाबली था पर छह महीने सोता था। कुंभकर्ण दुर्ग से बाहर आया। उसे देखते ही वानर सेना में खलबली मच गई। वे उसे रोकने में अक्षम थे। उसने हनुमान और अंगद को घायल कर दिया। लक्ष्मण यह युद्ध देख रहे थे। उन्होंने राम की ओर देखा। फिर

© NCERT not to be republished

दोनों भाइयों ने बाणों की वर्षा कर उसे मार दिया। कुंभकर्ण रणभूमि के अंक में सो गया। सदा के लिए।

रावण निराश हो गया। कुंभकर्ण पर उसे गर्व था। वह उसे अपना दाहिना हाथ मानता था। उसे लगा कि अब लंका में वीर नहीं हैं। वह अनाथ हो गई। मेघनाद ने रावण को सहारा दिया, "मेरे रहते आप क्यों चिंता करते हैं? मुझे युद्ध की अनुमति दें। मैं दोनों भाइयों को मारकर आपके चरणों में रख दूँगा।"

मेघनाद और लक्ष्मण का भीषण युद्ध हुआ। मेघनाद पराक्रमी था। उसने एक बार इंद्र को परास्त कर दिया। और इंद्रजित कहलाया। उसके बाणों ने कई प्रमुख वानरों को घायल कर दिया। मेघनाद को रोक पाना वानरसेना के बूते की बात नहीं थी। वह चक्रवात की तरह आगे बढ़ता। जो भी आसपास होता, ध्वस्त हो जाता।

वानर सेना मेघनाद की गति और शक्ति से चकित थी। चमत्कृत। उनके मन में निराशा बैठती जा रही थी। तब लक्ष्मण ने उसे चुनौती दी। दोनों का निशाना अचूक था। बाण हवा में टकराते और नष्ट हो जाते। अचानक लक्ष्मण का एक बाण उसे लगा। वह घायल हो गया। झुक गया। लक्ष्मण ने ताबड़तोड़ बाणों की बरसात कर दी।

आगे बढ़ना कठिन था। मेघनाद पीछे मुड़ा। महल की ओर भागा। लक्ष्मण ने कुछ दूर तक उसका पीछा किया। फिर रुक गए। मेघनाद महल में घुस गया। लक्ष्मण को महल की संरचना नहीं पता थी। रास्ता नहीं मालूम था। विभीषण लक्ष्मण की दुविधा समझ गए। उन्होंने एक गुप्त मार्ग दिखाया। शेष काम आसान था। मेघनाद महल में ही मारा गया।

अपने ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु से रावण एकदम टूट गया। विलाप करने लगा। मूर्च्छित हो गया। होश आया तो उसकी दशा पागलों जैसी थी। क्रोध से बिलबिलाता हुआ। "लंका अनाथ हो गई। अब उसका कोई सहारा नहीं। अब मैं स्वयं रणक्षेत्र में जाऊँगा।"

लक्ष्मण के साथ वानर सेना भी महल में प्रवेश कर गई थी। उनके हाथों में जलती हुई मशालें थीं। वानरों ने लंका में जहाँ-तहाँ आग लगा दी। अन्न भंडार फूँक दिए। शस्त्रागार जला दिया। मारकाट मच गई। जो भी सामने पड़ा, मारा गया। कंपन, प्रजंघ, यूपाक्ष, कुंभ मारे गए। हनुमान ने निकुंभ, देवांतक और त्रिशिरा को मौत की नींद सुला दिया। अंगद ने नरांतक का काम तमाम कर दिया। लक्ष्मण ने अतिकाय का सिर काट डाला। राक्षस सेना भाग खड़ी हुई।

© NCERT not to be republished

Rationalised 2023-24

रावण के पास अब कोई विकल्प नहीं था। युद्धनाद हुआ। अकेला बचा रावण युद्ध के लिए निकला। फुफकारते हुए। फन कुचले साँप की तरह। वह जिधर मुड़ता, भगदड़ मच जाती। वानरों को भागते देख लक्ष्मण आगे आए। धनुष-बाण लिए। रावण के सामने अभेद्य दीवार की तरह खड़े हो गए। थोड़ी ही देर में विभीषण वहाँ पहुँच गए। उसके बाद राम। उनके सामने रावण की एक न चली।

विभीषण को राम की सेना में देख रावण उबल पड़ा। उसके लिए यह देशद्रोह था। छोटे भाई का विश्वासघात। उसने विभीषण पर निशाना लगाया। लक्ष्मण ने वह बाण बीच में ही काट दिया। उसने दूसरा घातक बाण चलाया। इस बार लक्ष्मण बीच में आ गए। उन्होंने विभीषण को अपने पीछे छिपा लिया।

बाण लगते ही लक्ष्मण अचेत हो गए। गिर पड़े। राम ने यह देखा। उनकी आँखें क्रोध से लाल हो गईं। आग बरसने लगी। उन्होंने लक्ष्मण को सुग्रीव की निगरानी में छोड़ा और रावण को चुनौती दी। कहा, "रावण! काल तुझे मेरे सामने ले आया है। आज अन्याय पर न्याय की विजय होगी। तेरा अंत निश्चित है।"

उधर, हनुमान लक्ष्मण को उठाकर रणक्षेत्र से दूर ले गए। वैद्य सुषेण को बुलाया। हनुमान संजीवनी बूटी लाए। चिकित्सा शुरू हुई। धीरे-धीरे रक्त का रिसाव बंद हो गया। घाव भर गया। संजीवनी का प्रभाव चमत्कारी था। सुग्रीव ने लक्ष्मण के स्वस्थ होने की सूचना राम तक पहुँचाई। वह सिंह की भाँति रावण पर टूट पड़े।

राम-रावण युद्ध भयानक था। शस्त्रों की गति से कँपा देने वाली ध्वनियाँ निकल रही थीं। हवा थम गई थी। सूरज बादलों के पीछे छिप गया था। शस्त्रों की चमक बिजली की तरह कौंध रही थी। गड़गड़ाहट थी। थर्रा देने वाली। दोनों योद्धा अपनी पूरी शक्ति से लड़ रहे थे। कोई एक रत्ती भी पीछे खिसकने को तैयार नहीं।

कुछ ही देर में लगा कि युद्ध समाप्त होने को है। दोनों पक्ष के योद्धा हाथ बाँध कर खड़े हो गए। छोटे-छोटे युद्ध थम गए। सबकी नज़रें राम और रावण पर थीं। सबकी आँखें फटी रह गईं। पलकें झुकना भूल गईं। उन्होंने ऐसा युद्ध पहले कभी नहीं देखा था।

लेकिन महासंग्राम समाप्त नहीं हुआ था। रावण का एक बाण राम को लगा। उनके रथ की ध्वजा कटकर गिर पड़ी। राम ने प्रहार किया। बाण रावण के मस्तक में लगा। रक्त की धारा बह निकली। बीच में युद्ध कुछ पल के लिए रुका। रावण

© NCERT not to be republished

अपने महल चला गया। घोड़े और रथ बदलने। राम को इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी।

युद्ध फिर शुरू हुआ। अब उनके रथ एक-दूसरे के सामने थे। योद्धा आँखों में आँखें डालकर देख सकते थे। घोड़ों के मुँह मिल गए थे। राम के बाणों ने रावण के रथ का मुँह मोड़ दिया। यह पराजय का संकेत था। रावण हिम्मत हारने लगा। जब तक वह रथ घुमाता, राम का एक बाण उसके पार निकल गया।

रथ मुड़ा। लेकिन रावण के हाथ से धनुष छूट गया। वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। मारा गया। बची हुई राक्षस सेना हड़बड़ा गई। जान बचाकर भागी। उनका दिशा-ज्ञान शून्य हो गया। जिसे जिधर अवसर मिला, भागा। कुछ राक्षस वानर सेना की ओर दौड़ पड़े। कुछ भागते हुए समुद्र में जा गिरे।

लंका विजय अभियान पूरा हुआ। राम की जयकार होने लगी। कुछ समय पूर्व का रणक्षेत्र एकदम बदल गया। शस्त्रों की टंकार की जगह किलकारियों ने ले ली। वानर सेना उछल-कूद करने लगी। समुद्र से ठंडी हवा आ रही थी। शस्त्रों से उत्पन्न गरमी वह अपने साथ बहा ले गई। कोलाहल तुमुलनाद में परिवर्तित हो गया। प्रसन्नता सर्वव्याप्त थी।

रणक्षेत्र में केवल एक व्यक्ति दुःखी था। शोक से व्याकुल। विलाप करता हुआ। अपने भाई के मृत शरीर के पास खड़ा। राम ने विभीषण को समझाया, "मित्र, शोक मत करो। रावण महान योद्धा था। उसकी अंत्येष्टि महानता के अनुरूप होनी चाहिए। मृत्यु सत्य है। उसे स्वीकार करो।"

राम ने एक-एक वानर का आभार माना। सुग्रीव को गले लगा लिया। लक्ष्मण से विभीषण के राज्याभिषेक की तैयारी करने को कहा। चाहते थे कि रावण की अंत्येष्टि के बाद राजतिलक हो। उसमें विलंब न किया जाए। उन्होंने हनुमान को बुलाया। अशोक वाटिका जाने का निर्देश दिया। "यह संदेश आपको ही सीता तक पहुँचाना है। उन्हें लंका विजय का समाचार दीजिए। उनका संदेश लेकर शीघ्र आइए।"

विभीषण के अंत्येष्टि से लौटने तक उनके राज्याभिषेक की तैयारी हो चुकी थी। लक्ष्मण राजमहल पहुँच गए थे। वानर स्वर्ण-कलश में समुद्र का पानी ले आए थे। लक्ष्मण विभीषण के पास गए। उन्हें साथ लेकर राजसिंहासन तक आए। सोने का चमचमाता हुआ सिंहासन। रत्नों-मणियों जटित। समुद्र जल से उन्होंने सभासदों के सामने विभीषण का अभिषेक किया। अब विभीषण लंका के राजा थे।

© NCERT not to be republished

इस बीच, हनुमान अशोक वाटिका से लौट आए। राम के पास। उन्होंने कहा, "माता सीता लंका विजय का समाचार सुनकर प्रसन्न हुईं। वे आपसे मिलने के लिए अधीर हैं।" तब तक विभीषण वहीं आ गए थे। राम उनकी ओर मुड़े। कहा, "लंकापति, सीता अब भी आपकी अशोक वाटिका में हैं। उन्हें यहाँ लाने की व्यवस्था की जाए।"

वानर सेना चुहल कर रही थी। अठखेलियों में लगी थी। राम का निर्देश सुनकर उनकी उत्सुकता बढ़ गई। सुग्रीव, जामवंत और नल-नील भी उत्सुक थे। अंगद को प्रतीक्षा थी। हनुमान को छोड़कर किसी ने सीता को नहीं देखा था।

सीता आईं तो सबको अपनी कल्पनाओं से अधिक लगीं। सुंदर, सौम्य, शांत। उस सुंदरता में एक वर्ष बाद पति से मिलन की प्रसन्नता शामिल थी। कष्ट इतिहास हो गया था।

© NCERT not to be republished

0645CH12

राम का राज्याभिषेक

विभीषण चाहते थे कि राम कुछ दिन लंका में रुक जाएँ। नयी लंका में। उनकी लंका में। उन्होंने अपनी इच्छा राम को बताई। उसका कारण भी। "मैं चाहता हूँ कि आप कुछ दिन यहाँ विश्राम कर लें। युद्ध की थकान उतर जाएगी। वैसे इसमें मेरा स्वार्थ भी है। आपका सान्निध्य और रीति-नीति सीखने का अवसर। आपने यह नगरी देखी भी तो नहीं है।"

राम ने लंका नगरी में कदम नहीं रखा था। सीता से मिलने हनुमान गए। दो बार। अंगद गए। लक्ष्मण भी हो आए। विभीषण के राजतिलक के समय। राम उस नगरी से दूर ही रहे।

"यह संभव नहीं है, मित्र!" राम ने कहा। वनवास के चौदह वर्ष पूरे हो गए हैं। मैं तत्काल अयोध्या लौटना चाहता हूँ। भरत मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। जाने में विलंब हुआ तो वे प्राण दे देंगे। उन्होंने प्रतिज्ञा की है। मैं उनकी प्रतिज्ञा से बँधा हूँ।"

विभीषण राम से अलग नहीं होना चाहते थे। उनका अनुरोध राम ने अस्वीकार कर दिया था। पर वे निराश नहीं थे। इस बार उन्होंने एक नया प्रस्ताव रखा। "मेरी इच्छा है कि मैं आपके राज्याभिषेक में उपस्थित रहूँ। मुझे अपने साथ चलने की अनुमति दें।"

राम ने उनका आग्रह स्वीकार कर लिया। बोले, "आप मेरे लिए यात्रा की व्यवस्था कर दें।"

राम ने विभीषण की विनती मान ली तो सुग्रीव और हनुमान आगे आए। राम ने उन्हें भी अयोध्या आमंत्रित किया। विभीषण का पुष्पक विमान उन्हें ले जाने के लिए तैयार था।

विमान के उड़ान भरने तक वानर सेना वहीं रही। विमान जाने के बाद वे कूदते-फाँदते किष्किंधा की ओर चल पड़े। विभीषण ने अपने कोषागार से उन्हें रत्नाभूषण दिए थे। उनकी वर्षा की थी। उसी विमान से। वानरों के लिए यह मनोरंजन था। जिसे जो मिला, लूटा।

विमान लंका से चला। उड़ान भरने के बाद उसने उत्तर दिशा पकड़ी। जिधर

© NCERT not to be republished

अयोध्या नगरी थी। राम सीता के साथ बैठे थे। मार्ग में पड़ने वाले प्रमुख स्थान बताते जा रहे थे। रावण सीता का हरण कर उसी मार्ग से लाया था। पंचवटी से। उस समय सीता ने वे स्थान ठीक से नहीं देखे थे। स्थानों के नाम उन्हें ज्ञात नहीं थे।

पहले रणभूमि पड़ी। फिर वह पुल, जिसे नल और नील ने बनाया था। सेतुबंध। किष्किंधा रास्ते में था। वानरराज सुग्रीव की राजधानी थी। सीता के आग्रह पर विमान किष्किंधा में उतरा। सुग्रीव की रानियों तारा और रूपा को लेने। आगे ऋष्यमूक पर्वत पड़ा और उसके बाद पंपा सरोवर। उसकी सुंदरता अद्‌भुत थी।

राम ने सीता को एक पतली, चमकती हुई रेखा दिखाई। "सीते! देखो, यह गोदावरी नदी है। ऊँचाई से इतनी छोटी दिख रही है। इसी के तट पर पंचवटी है। देखो, हमारी पर्णकुटी अब भी बनी हुई है।" सीता ने आँखें बंद कर लीं। जैसे पंचवटी को पुनः देखने से डर रही हों। उन्हें पूरा घटनाक्रम याद आ गया।

गंगा-यमुना के संगम पर ऋषि भरद्वाज का आश्रम था। विमान वहाँ उतरा। सबने रात वहीं बिताई। ऋषि का आग्रह था। राम उसे टाल नहीं सके। वहीं से उन्होंने हनुमान को अयोध्या भेजा। भरत को उनके आगमन की पूर्व सूचना देने के लिए।

राम सीधे अयोध्या नहीं जाना चाहते थे। उनके मन में एक प्रश्न था। एक संशय। चौदह वर्ष की अवधि कम नहीं होती। कहीं इस अवधि में भरत को सत्ता का मोह तो नहीं हो गया?

हनुमान को अयोध्या भेजते हुए उन्होंने यह प्रश्न रखा था। कहा, "हे वानर शिरोमणि, आप भरत को मेरे आने की सूचना दीजिएगा। ध्यान से देखिएगा कि यह समाचार सुनकर उनके चेहरे पर कैसे भाव आते हैं? यदि भरत को इस सूचना से प्रसन्नता नहीं हुई तो मैं अयोध्या नहीं जाऊँगा। भरत राजकाज सँभालें, इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

हनुमान वायु वेग से चले। जैसे उड़ रहे हों। मार्ग में निषादराज गुह से भेंट की। उनसे अयोध्या का हाल जाना। वहाँ से नंदीग्राम पहुँचे। उन्होंने भरत से कहा, "श्रीराम के वनवास की अवधि पूर्ण हो गई है। वे लौट रहे हैं। प्रयाग पहुँच चुके हैं। मैं उन्हीं की आज्ञा से आपके पास आया हूँ।"

भरत की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। आँखों में खुशी के आँसू थे। वे बार-बार हनुमान को धन्यवाद दे रहे थे। यह शुभ सूचना उन तक पहुँचाने के लिए। उनके चेहरे पर केवल एक भाव था। प्रसन्नता। हनुमान उनसे विदा लेकर आश्रम लौट आए। राम के पास।

© NCERT not to be republished

अगली सुबह प्रयाग से श्रृंगवेरपुर होते हुए राम का विमान कुछ ही देर में सरयू नदी के ऊपर पहुँच गया। दूर अयोध्या नगरी के भवनों के शिखर दिखाई देने लगे। सबने अयोध्या को प्रणाम किया।

उधर, भरत से सूचना पाकर अयोध्या में उत्सव की तैयारियाँ होने लगीं। नगर को सजाया गया। शत्रुघ्न राज्याभिषेक की व्यवस्था में लग गए। महल से तीनों रानियाँ नंदीग्राम के लिए निकल पड़ीं। कौशल्या सबसे आगे थीं। उन्हें पता था कि राम पहले भरत से भेंट करेंगे।

राम का विमान नंदीग्राम उतरा। उनका भव्य स्वागत हुआ। आकाश राम के जयघोष से गूँज उठा। राम ने विमान से उतरकर भरत को गले लगाया। माताओं को प्रणाम किया। भरत भागते हुए आश्रम के भीतर गए। राम की खड़ाऊँ उठा लाए। जिसे सिंहासन पर रखकर उन्होंने चौदह वर्ष राजकाज चलाया था। झुककर अपने हाथों से राम को पहनाई। मिलन का यह दृश्य अद्‌भुत था। सबके चेहरों पर प्रसन्नता थी। सबकी आँखें खुशी के आँसुओं से नम थीं।

राम-लक्ष्मण ने नंदीग्राम में तपस्वी बाना उतार दिया। दोनों को राजसी वस्त्र पहनाए गए। जन समूह राम की जयकार करता अयोध्या के लिए चला। शोभायात्रा की छटा देखने योग्य थी। नंदीग्राम से चलने के पूर्व राम ने पुष्पक विमान को कुबेर के पास भेज दिया। वह विमान कुबेर का ही था। रावण ने उसे बलात छीन लिया था।

सजी-धजी अयोध्या नगरी राम के दर्शन पर आह्लादित थी। नगरवासी प्रसन्न थे। उन्हें उनके राम वापस मिल गए थे। माताएँ प्रसन्न थीं। उनका पुत्र लौट आया था। मुनिगण खुश थे। राम ने उनकी शिक्षाओं का मान रखा। कभी विरत नहीं हुए।

भरत ने अयोध्या का राज्य राम को नंदीग्राम में ही लौटा दिया था। राजमहल पहुँचे तो मुनि वशिष्ठ ने कहा, "कल सुबह राम का राज्याभिषेक होगा।" इसकी तैयारी शत्रुघ्न ने पहले ही कर दी थी। पूरा नगर सजाया गया था। दीपों से जगमगा रहा था। फूलों से सुवासित था। वाद्ययंत्रों से झंकृत था। पूरे चौदह वर्ष बाद।

अगले दिन मुनि वशिष्ठ ने राम का राजतिलक किया। राम और सीता सोने के रत्नजटित सिंहासन पर बैठे। लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न उनके पास खड़े थे। हनुमान नीचे बैठ गए। माताओं ने आरती उतारी। मंगलाचार हुआ। शुभ गीत गाए गए। राम ने सीता को एक बहुमूल्य हार दिया। प्रजाजनों को उपहार दिए। अनेक वस्तुएँ प्रदान कीं।

© NCERT not to be republished

सीता ने अपने गले का हार उतारा। वे दुविधा में थीं। किसे दें? दुविधा राम ने दूर की, "जिस पर तुम सर्वाधिक प्रसन्न हो, उसे दे दो!" सीता ने वह हार हनुमान को भेंट कर दिया। भक्ति और पराक्रम के लिए।

कुछ दिनों में सारे अतिथि एक-एक कर चले गए। विभीषण लंका लौटे। सुग्रीव ने किष्किंधा की ओर प्रयाण किया। ऋषि-मुनि अपने आश्रम चले गए। हनुमान कहीं नहीं गए। राम दरबार में ही रहे।

राम ने लंबे समय तक अयोध्या पर राज किया। उनके राज में किसी को कष्ट नहीं था। सब सुखी थे। भेदभाव नहीं था। कोई बीमार नहीं पड़ता था। खेत हरे-भरे थे। पेड़ फलों से लदे रहते थे। राम न्यायप्रिय थे। गुणों के सागर थे। उनका राज्य राम राज्य था। आज तक स्मृतियों में है।

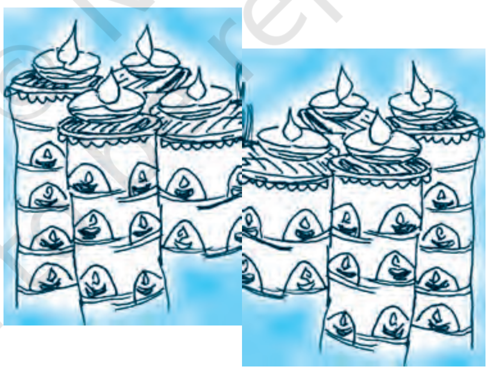

© NCERT not to be republished